लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–27

इटली की लोकप्रिय कथाऐं–2

थोमस फ्रैडैरिक केन

1885

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series-27
Book Title: Italy Ki Lokpriya Kathayen-2 (Italian Popular Tales-2)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2019
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Italy

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें 5
इटली की लोकप्रिय कथाऐं–2 7
अध्याय 2ः परियों की कहानियॉ–क्रमशः 9
25 एक राजा जो एक सुन्दर पत्नी चाहता था 11
26 बालटी 17
27 दो कुबड़े 24
28 कैथरीन और उसकी किस्मत की कहानी 29
29 दाढ़ी में खाने का टुकड़ा 41
30 परी औरलैन्डा 52
31 गड़रिया जिसने राजा की बेटी को हॅसाया 64
32 गधा जो पैसे देता है 75
33 डौन जोसफ़ पेयर 83
34 बूट पहने हुए बिल्ला 93
35 सुन्दर भौंह 101
36 लायनबूनो 111
अध्याय 3ः ओरिऐन्ट की कहानियॉ 139
37 किसान और मालिक 141
38 कृतघ्न 143
39 खजाना 152
40 गड़रिया 153
41 तीन चेतावनियॉ 154
42 मैं बागीचा था और मैं बागीचा हूँ 158
43 जानवरों की भाषा 163
44 राज और उसका बेटा 167
45 तोता–पहला रूप 178

46 तोता–दूसरा रूप 181
47 तोता जो तीन कहानियॉ सुनाता है 189
48 सच बोलने वाला जोसेफ़ 214
49 आदमी सॉप और लोमड़ी 217

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुईं और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र कर के **2500** से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में **20** से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन **19**वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें

2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें

3. **19**वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें

4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

इटली की लोकप्रिय कथाऐं–2

यों तो हर देश की अपनी अपनी लोक कथाऐं होती है पर यूरोप महाद्वीप में ब्रिटेन जर्मनी फ्रांस और इटली अपनी एक विशेष जगह रखते हैं। इन देशों में भी यों तो सभी जगह लोक कथाऐं कही सुनी जाती रही हैं पर संगठित रूप में इनका संग्रह ससबसे पहले केवल इटली देश ने ही शुरू किया था। सन् **1313** में बोकाचाओ की "इल डैकामिरोन", इसके बाद सन् **1550** में स्ट्रापरोला की ""फ़ेसशस नाइट्स औफ स्ट्रापरोला", इसके बाद **1885** में थोमस केन की "इटली की लोकप्रिय कहानियॉ" और फिर सन् **1893** में जियामबतिस्ता की "इल पैन्टामिरोन" शुरू में लिखी गयी कहानियों के बहुत अच्छे संग्रहों में गिने जाते है।

इस पुस्तक से पहले इटली के एक और संग्रह "इतालो कैलवीनो की इटली की लोक कथाऐं" से जिसमें **200** कहानियॉ थीं **125** कहानियों का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया गया था जो आठ भागों में बॉट कर प्रकाशित किया गया था।[2] उस पुस्तक की लोकप्रियता को देख कर एक और पुस्तक का अनुवाद किया गया। यह पुस्तक थोमस केन की पुस्तक "इटली की लोकप्रिय कथाऐं"[3] है। इस पुस्तक में कुल मिला कर **109** कथाऐं हैं जिनको केन ने छह अध्यायों में बॉटा है। हम इसको पढ़ने की आसानी के लिये चार भागों में बॉट कर आपके लिये प्रस्तुत कर रहे हैं —

भाग **1** — अध्याय **1** ः परियों की कहानियॉ
भाग **2** — अध्याय **2** ः परियों की कहानियॉ कमशः
अध्याय **3** ः ओरिऐन्ट की कहानियॉ
भाग **3** — अध्याय **4** ः दंत कथाऐं और भूतों की कहानियॉ
भाग **4** — अध्याय **5** ः नर्सरी की कहानियॉ
अध्याय **6** ः कहानियॉ और हॅसी दिल्लगी

इस पुस्तक की सारी कहानियॉ यहॉ अनुवादित की गयी हैं। इस पुस्तक के पहले अध्याय में दी गयी कथाऐं इसके पहले भाग में प्रकाशित की जा चुकी हैं। तो लीजिये यह प्रस्तुत है इस पुस्तक का दूसरा भाग – मूल पुस्तक का दूसरा और तीसरा अध्याय।

आशा है कि आपको इटली की ये पुरानी कहानियॉ अवश्य ही पसन्द आयेंगीं।

---

[2] "Italo Calvino: Folktales of Italy". Translated by George Martin. 1980.
[3] Italian Popular Tales. By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. 1885.
Taken from the Web Site :
https://books.google.ca/books?id=RALaAAAAMAAJ&pg=PR1&redir_esc=y&hl=en#v=onepage&q&f=false

अध्याय 2ः परियों की कहानियॉ–क्रमशः

इस अध्याय में दी गयी परियों की कहानियॉ कई विषयों से सम्बन्धित हैं। किसी एक खास विषय से इनका सम्बन्ध नहीं हैं। इसकी पहली पुस्तक में हमने जो परियों की कहानियॉ दी थीं उनमें किसी भी कहानी में किसी परी का जिक्र नहीं था जैसी कि जर्मन और कैल्टिक कहानियों[4] में पाया जाता है।

हमने उनमें ओगरे देखे, जादूगर देखे जिनके पास जादू की ताकतें थीं, बूढ़े और बुढ़ियों और साधु लोग देखे जिन्होंने हीरो और हीरोइनों की सहायता की और जिन्होंने अच्छी परियों का काम किया पर जैसी परियों की कहानियॉ हम आयरलैंड और फ्रांस की पढ़ते हैं उस तरह की कहानियॉ उसमें नहीं थीं। सो कुछ वैसी कहानियॉ यहॉ दे कर हम वे कुछ कहानियॉ छोड़ेंगे नहीं जिनमें परियॉ एक बहुत ही मुख्य काम करती हैं – और वह है वरदान देने का। तो लो पढ़ो एक ऐसी ही कहानी –

[4] Celtic

25 एक राजा जो एक सुन्दर पत्नी चाहता था[5]

एक बार की बात है कि एक राजा था। वह किसी ऐसी लड़की से शादी करना चाहता था जो सूरज से भी ज़्यादा चमकदार हो। पर उसने न जाने कितनी लड़कियॉ देखीं पर उनमें से कोई भी इतनी सुन्दर और चमकदार नहीं थी जो उसको अच्छी लग सकती।

सो उसने अपना एक भरोसे का नौकर बुलाया और उसको हुक्म दिया कि वह सारी जगह जाये और सब जगह इतनी सुन्दर लड़की ढूँढे जो उसे पसन्द आ जाये। नौकर चला गया और सारी जगह घूमा पर उसको भी कोई लड़की इतनी सुन्दर नहीं मिली जो उसको भी सुन्दर लग सकती।

एक दिन जब वह काफी घूम लिया तो उसे प्यास लग आयी। वह एक घर के पास आया उस घर का दरवाजा खटखटाया और पानी मॉगा।

वहॉ दो बहुत बूढ़ी बुढ़ियें रहती थीं – एक थी **80** साल की दूसरी थी **90** साल की। वे सूत कात कर अपना गुजारा करती थीं। जब नौकर ने पानी मॉगा तो **80** साल वाली बुढ़िया उठी थोड़ा सा परदा खोला और उसको पानी दे दिया।

[5] The King Who Wanted a Beautiful Wife. Tale No 25. By Laura Gonzenbach. (Tale No 73). From Sicily

इतनी सारी कताई करते करते उसके हाथ काफी सफेद और बहुत मुलायम हो गये थे। तो जब नौकर ने उनको देखा तो उसे लगा कि यह लड़की तो बहुत सुन्दर होगी। इसके हाथ कितने गोरे और मुलायम हैं।

सो वह वहॉ से जल्दी से राजा को यह खबर देने के लिये चल दिया और जा कर बोला — "योर मैजेस्टी। आज मुझे वह मिल गया है जो आप ढूँढ रहे हैं। आज मेरे साथ ऐसा ऐसा हुआ।"

राजा सुन कर बोला — "यह तो बड़ी अच्छी बात है। तुम एक बार फिर वहॉ जाओ और उसे देखने की कोशिश करो।"

नौकर फिर उस छोटे से घर की तरफ लौट गया। वहॉ जा कर उसने फिर से दरवाजा खटखटाया और फिर से पानी मॉगा। अबकी बार बुढ़िया ने अपनी खिड़की नहीं खोली और परदा हटा कर लोटा ही उसको दे दिया।

नौकर ने पूछा — "क्या आप यहॉ अकेली रहती हैं।"

बुढ़िया ने जवाब दिया — "नहीं मैं यहॉ अपनी बहिन के साथ रहती हूँ। हम लोग गरीब लड़कियॉ हैं और अपने हाथ से किये गये काम पर ही गुजारा करती हैं।"

"आप कितनी बड़ी हैं।"

"मैं **15** साल की हूँ और मेरी बहिन **20** साल की है।"

नौकर फिर राजा के पास वापस गया और राजा को बताया तो राजा ने उससे कहा — "मैं **15** साल वाली को ले लूँगा। तुम जाओ और उसको यहाँ ले कर आओ।"

नौकर फिर उन दोनों बुढ़ियों के पास लौट गया और जा कर उनसे कहा कि राजा आप में से छोटी वाली को अपनी पत्नी बनाना चाहते हैं।

बुढ़िया ने कहा — "राजा से कहना कि मैं तैयार हूँ। जब से मैं पैदा हुई हूँ तबसे मेरे ऊपर सूरज की एक किरन भी नहीं पड़ी है। और अगर अब सूरज की एक भी किरन मेरे ऊपर पड़ी तो में पूरी की पूरी काली हो जाऊँगी। इसलिये राजा से पूछ लो कि अगर मेरे लिये वह एक बन्द गाड़ी रात को भेज सकें तो मैं उनके महल आ जाऊँगी।"

जब राजा ने यह सुना तो उसने उसी रात एक शाही पोशाक और एक बन्द गाड़ी भेज दी। रात को बुढ़िया ने अपना चेहरा एक भारी से कपड़े से ढका और गाड़ी में बैठ कर चल दी।

राजा ने उसका बड़ी खुशी से स्वागत किया और उससे विनती की कि अब वह अपना परदा हटा कर रख दे। उसने कहा "यहाँ बहुत सारी जलती हुई मोमबत्तियाँ हैं उनकी रोशनी में तो मैं काली पड़ जाऊँगी।"

सो राजा ने उसका चेहरा बिना देखे ही उससे शादी कर ली। पर जब वह राजा के कमरे में आयी तब तो उसे अपना परदा हटाना

ही पड़ा। तब उस समय राजा ने उसे पहली बार देखा कि वह स्त्री तो बहुत बदसूरत है जिससे उसने शादी कर ली है। गुस्से में भर कर उसने उसको उठा कर खिड़की से बाहर फेंक दिया।

सौभाग्य से दीवार में एक कील लगी थी जिसमें उसके कपड़े फॅस गये और वह गिरने से बच गयी और हवा में लटकी रह गयी।

इत्तफाक से उधर से चार परियॉ जा रही थीं कि उनमें से एक चिल्लायी — "अरे बहिनो उधर देखो। यह वह बुढ़िया है जिसने राजा के साथ धोखा किया है। क्या हम उसके लिये यह इच्छा करें कि उसकी पोशाक फट जाये और वह नीचे गिर जाये।"

उनमें से सबसे छोटी परी जो सबसे सुन्दर भी थी बोली — "नहीं नहीं। हमें ऐसा नहीं करना चाहिये। हमको उसके लिये कुछ अच्छे की इच्छा करनी चाहिये। मैं उसके लिये यह इच्छा करती हूॅ कि वह जवान हो जाये।"

"और मैं सुन्दरता।"

"और मैं यह कि वह सावधान रहे।"

"और मैं अच्छा दिल।"

इस तरह सब परियों ने उसको आशीर्वाद दिया और अभी वे सब उस बुढ़िया के बारे में बात कर ही रही थीं कि वह बुढ़िया एक सुन्दर नौजवान लड़की बन गयी।

अगली सुबह राजा ने अपनी खिड़की से बाहर झॉक कर देखा तो वहॉ तो उसे एक बहुत ही सुन्दर लड़की दिखायी दी। उसने उसे

देख कर अपना सिर पीट लिया। उसके मुँह से निकला — "ओ नाखुश आदमी। यह तूने क्या किया। कल रात क्या तेरी ऑखें बन्द थीं?"

तब उसने लम्बी सी सीढ़ी नीचे उतारी उस लड़की को ऊपर लाया और उससे माफी मॉगते हुए कहा — "अब हम एक उत्सव मनायेंगे और फिर हम हमेशा खुश रहेंगे।"

सो उन्होंने एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम किया और यह नौजवान रानी शहर भर में सबसे सुन्दर थी।

एक दिन रानी की बहिन जो **90** साल की थी अपनी बहिन से मिलने के लिये महल आयी। राजा ने पूछा — "यह बदसूरत कौन है।"

रानी ने जल्दी से जवाब दिया — "यह मेरी एक पड़ोसन है जो आधी पागल है।"

आने वाली बहिन अपनी नयी बहिन को देख रही थी। उसने पूछा — "तुमने अपने आपको जवान और सुन्दर बनाने के लिये क्या किया। मैं भी तुम्हारी तरह सुन्दर और जवान होना चाहती हूँ।"

वह उससे सारा दिन यही पूछती रही कि उसने यह सब उसने कैसे किया। आखिर रानी का धीरज खत्म हो गया उसने कहा — "मैंने अपनी पुरानी खाल उतरवा दी तो यह नयी सुन्दर खाल निकल आयी।"

यह सुन कर रानी की बुढ़िया बहिन एक नाई के पास गयी और बोली — "अगर तुम मेरी यह पुरानी खाल उतार दोगे तो मैं तुम्हें तुम जो चाहोगे वह दूँगी। ताकि मैं जवान और सुन्दर हो जाऊँ।"

नाई बोला — "पर मेरी अच्छी बुढ़िया अगर मैं तुम्हारी खाल उतार दूँगा तो तुम मर जाओगी।"

पर बुढ़िया तो उसकी सुन ही नहीं रही थी। आखिर उसको उसकी इच्छा पूरी करनी ही पड़ी। नाई ने एक चाकू उठाया और उसके माथे पर एक जगह काटा तो बुढ़िया चिल्लायी "ओह"।

नाई बोला —

जो सुन्दर दिखायी देना चाहते हैं उनको दुख से तो गुजरना ही पड़ता है

बुढ़िया फिर बोली — "तो फिर मेरी खाल निकाल दो।"

नाई उसकी खाल काटता रहा और अचानक ही बुढ़िया मर गयी।

यह कहानी ऐसी कहानियों को जन्म देती है जिनमें परियों से दो तरह के लोगों को अच्छी या बुरी भेंटें मिलती हैं – एक तो वे जो खुशकिस्मती के अधिकारी होते हैं और दूसरे जो सजा के अधिकारी होते हैं। इस तरह की सबसे सादी कहानी नीचे दी जाती है – "बालटी"।

26 बालटी[6]

यह लोक कथा कुछ ऐसी लोक कथाओं में आती है जिनमें परियों की दे हुई भेंटें, वे अच्छी हों या बुरी, दो तरह के लोगों को दी जाती हैं। एक तो उन्हें जो खुशकिस्मती के काबिल होते हैं और दूसरे उनको जिनको उन्हें सजा देनी होती है। ऐसी ही एक सादी से कहानी मिलान में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि एक स्त्री थी जिसकी दो बेटियॉ थीं एक अच्छी और एक बुरी। पर मॉ अपनी बुरी बेटी को अपनी अच्छी बेटी से ज़्यादा प्यार करती थी।

एक दिन उसने अपनी बुरी बेटी से कहा कि वह एक बालटी पानी भर लाये। पर वह जाना नहीं चाहती थी सो उसने अपनी मॉ का कहना नहीं माना। उसकी अच्छी बेटी बोली — "मॉ मैं जा कर ले आती हूॅ।" कह कर वह बालटी ले कर पानी लाने चली गयी।

जब वह कुॅए से पानी खींच रही थी तो उसकी पानी की बालटी कुॅए में गिर पड़ी। उसने सोचा कि "अब अगर वह इस समय बिना बालटी और पानी के घर गयी तो कौन जानता है कि मेरी मॉ मेरे साथ क्या करेगी।"

सो वह कुॅए पर चढ़ कर उसमें नीचे उतर गयी। वहॉ जा कर उसे कुॅए की तली में एक तंग रास्ता मिला जिसका एक दरवाजा भी

[6] The Bucket. Tale No 26.

था। उसने दरवाजा खटखटाया तो अपने सामने एक संत को खड़ा पाया।

उसने उससे पूछा — "क्या आपने मेरी बालटी और रस्सी देखी है।"

संत बोला — "नहीं मेरी बच्ची।"

वह अपने रास्ते पर आगे चलती गयी तो उसे एक और दरवाजा मिला। वहॉ भी उसने अपनी बालटी और रस्सी के लिये पूछा तो वहॉ भी उसको यही जवाब मिला कि उसने उसकी बालटी और रस्सी नहीं देखी।

वहॉ शैतान था। वह एक अच्छी बच्ची से बात कर रहा था सो वह उसके साथ बिल्कुल भी विनम्र नहीं था। उसने उसको "मेरी बच्ची" भी नहीं कहा।

वह और आगे गयी तो उसने तीसरे दरवाजे पर खटखटाया तो मडोना ने दरवाजा खोला। बच्ची ने उससे भी यही पूछा तो वह बोली — "हॉ मेरी बच्ची। सुनो। मुझे बहुत खुशी होगी अगर तुम मेरे पीछे यहॉ रहो। यहॉ मेरे पास एक बच्चा है उसे तुम सूप पिलाओगी। तुम मेरा घर बुहारोगी और उसे ठीक से रखोगी। मैं तुम्हारी बालटी तुम्हें दे दूँगी।"

कह कर मडोना वहॉ से चली गयी। बच्ची अन्दर गयी उसका सारा घर साफ किया सब चीज़ें सॅभाल कर रखीं बच्चे को सूप पिलाया। जब वह घर की धूल साफ कर रही थी तो उसने देखा कि

वहॉ तो धूल के बदले में मूँगा और दूसरी सुन्दर चीज़ें बिखरी हुई थीं। जब उसने देखा कि वह धूल या गन्दगी नहीं थी तो उसने वे चीज़ें उठा कर रख दीं और जब मडोना घर लौटी तो उसे दे दीं।

जब मडोना घर वापस लौटी तो उसने बच्ची से पूछा — "बेटी क्या तुमने वह सब कर लिया जो मैं तुमसे कह कर गयी थी?"

अच्छी लड़की ने जवाब दिया — "जी हॉ मैंने कर लिया और ये चीज़ें मैंने यहॉ उठा कर रख दी हैं। मैंने इनको जमीन पर पड़ा पाया था हालॉकि यह गन्दगी नहीं है।"

मडोना बोली — "ठीक है। ये तुम रख सकती हो। क्या तुम कोई कैलीको या सिल्क की पोशाक पहनना पसन्द करोगी।"

लड़की बोली — "नहीं नहीं। केवल कैलीको की पोशाक ही मेरे लिये ठीक रहेगी।"

पर मडोना ने उसको कैलीको की बजाय एक सिल्क की पोशाक दी। मडोना ने फिर पूछा — "तुम पीतल का थिम्बिल लेना ज़्यादा पसन्द करोगी या फिर चॉदी का।"

"मुझे तो पीतल का ही दे दीजिये।"

"नहीं तुम यह चॉदी का ही थिम्बिल लो। और यह लो अपनी बालटी और रस्सी। जब तुम इस रास्ते के आखीर तक पहुँचो तो ऊपर हवा में देखना।"

लड़की ने ऐसा ही किया तो उसकी भौंह पर एक सितारा आ गिरा। फिर वह घर चली गयी।

जब वह घर पहुँची तो उसकी माँ उससे मिलने के लिये यह सोच कर दौड़ी कि वह उसको इतनी देर से आने के लिये डाँटेगी। वह उसको मारने ही वाली थी कि उसने उसकी भौंह पर लगा एक सितारा देखा जो इतना चमक रहा कि वह इतना सुन्दर लग रहा था कि उसका हाथ तो वहीं का वहीं रुक गया।

उसने उससे पूछा — "कहाँ थी तू इतनी देर तक। और तेरे माथे पर यह किसने रखा।"

लड़की बोली — "मुझे नहीं मालूम कि क्या कहाँ है।"

उसकी माँ ने उसे धोने की कोशिश भी की पर वह तो बजाय गायब होने के और ज़्यादा चमकता रहा। तब लड़की ने उसे सब बताया कि उसके साथ क्या हुआ था। यह सुन कर उसकी बहिन का मन भी हुआ कि वह वहाँ जाये।

वह भी गयी और उसने भी वैसा ही किया जैसा उसकी अच्छी बहिन ने किया था। उसने अपनी बालटी कुँए में गिरा दी और फिर नीचे चली गयी। वहाँ जा कर उसने संत से पूछा कि क्या उसने उसकी बालटी और रस्सी देखी है। उसने कहा "नहीं मेरी बच्ची।"

फिर वह आगे गयी और अगले दरवाजे पर खटखटाया तो उसने फिर पूछा "क्या आपने मेरी बालटी और रस्सी देखी है।" वहाँ तो शैतान था। उसने कहा "नहीं मैंने नहीं देखी।"

यह सुन कर लड़की आगे जाने लगी कि वह फिर बोला — "पर आओ यहाँ आओ मेरे बच्ची यहाँ आओ।" पर क्योंकि उसने

पहले ही सुन लिया था कि उसकी बालटी और रस्सी उसके पास नहीं है तो वह बोली — "नहीं मुझे अब आगे ही जाना होगा।"

फिर वह मडोना के दरवाजे पर आयी और उससे पूछा "आपने मेरी बालटी और रस्सी देखी है।"

मडोना बोली — "हॉ हॉ वह मुझे मिली है। अभी तो मैं बाहर जा रही हूँ। पर जब तक मैं लौट कर आती हूँ तब तक तुम मेरे घर की सफाई कर दो और मेरे बेटे को सूप पिला दो। बाहर से आ कर मैं तुम्हें तुम्हारी बालटी और रस्सी देती हूँ।"

कह कर वह वहॉ से चली गयी। लड़की ने सूप बजाय बच्चे को देने के अपने आप ही पी लिया। उसने सोचा "कितना स्वादिष्ट था यह सूप।"

उसने जब झाड़ू लगायी तो बोली "ओह कितनी गन्दगी है यहॉ। मेरी बहिन को तो कितनी सारी अच्छी चीज़ें मिली थीं यहॉ पर मुझे क्यों नहीं मिल रहीं।"

मडोना वापस आ गयी तो उसने पूछा "क्या तुमने अपना काम खत्म कर लिया?"

"हॉ जी।"

फिर मडोना ने उससे पूछा — "तुम्हें कौन सा थिम्बिल चाहिये पीतल का या चॉदी का।"

"ओह मुझे तो चॉदी का थिम्बिल चाहिये।" पर उसने उसे पीतल का थिम्बिल दे दिया।

"तुम्हें कौन सी पोशाक चाहिये कैलीको की या सिल्क की।"

"मुझे तो सिल्क की पोशाक चाहिये।"

पर उसने उसे कैलीको की पोशाक दे दी। और उसको उसकी बालटी और रस्सी देते हुए कहा "जब तुम इस रास्ते के आखीर में पहुँच जाओ तो एक बार हवा में ऊपर देखना।"

उसने वैसा ही किया सो बाहर जा कर जब उसने ऊपर देखा तो उसके माथे पर गन्दगी का एक छोटा सा गोला आ गिरा जिसने उसका सारा चेहरा गन्दा कर दिया।

यह देख कर तो वह बहुत गुस्सा हो गयी और जल्दी जल्दी घर की तरफ जाने लगी ताकि वह रो सके और घर जा कर अपनी बहिन को डॉट सके कि उसको तो सितारा मिला था और उसको गन्दगी।

उसकी मॉ ने उसके चेहरे से गन्दगी साफ करने की बहुत कोशिश की पर जितना वह साफ करती जाती थी उसकी गन्दगी और ज़्यादा फैलती जाती थी।

आखिर उसकी मॉ ने कहा — "मुझे लगता है कि मडोना ने तेरे साथ ऐसा मुझे सीख देने के लिये किया है कि मैंने अपनी बुरी बेटी को तो प्यार किया और अच्छी लड़की की तरफ कभी ध्यान नहीं दिया।"

इस कहानी के और दूसरे रूपों में दो बहिनों को अलग अलग तरह की भेंट मिलती है। सिसिली की एक कहानी में दो अलग तरीकों की बहिनों को केवल एक तरह की भेंट ही मिलती है – सुन्दरता की।

जब वह अपने बालों में कंघी करती है तो उसमें से रत्न निकलते हैं। जब वह पानी में अपने हाथ धोती है तो वहॉ बहुत सारी मछलियॉ आ जाती हैं। जब वह बात करने के लिये अपना मुॅह खोलती है तो उसके मुॅह से फूल झड़ने लगते हैं। उसके गाल तो बिल्कुल सेब जैसे हैं। और आखीर में तो वह अपना काम बहुत जल्दी कर लेती है।

उसके चाचा की लड़की को इन सब भेंटों की उलटी भेंटें मिलती हैं। यह कहानी भी "ट्रू ब्राइड" की तरह से खत्म होती है।

अभी इस कहानी एक तीसरा रूप भी है जो कई देशों में कहा सुना जाता है। यह कहानी फ्लोरैन्स में कही सुनी जाती है — "दो कुबड़े"।

27 दो कुबड़े[7]

एक बार की बात है कि दो कुबड़े थे। एक थोड़ा कम कुबड़ा था दूसरा उससे कुछ ज़रा ज़्यादा कुबड़ा था। वे दोनों ही इतने गरीब थे कि उन दोनों में से किसी के पास एक पैनी भी नहीं थी।

एक दिन उनमें से एक कुबड़ा बोला — "मैं तो दुनियॉ में बाहर जा रहा हूँ क्योंकि यहॉ तो खाने के लिये कुछ भी नहीं है। हम लोग भूख से मर रहे हैं। मैं बाहर जा कर देखना चाहता हूँ कि शायद कुछ मिल जाये।"

दूसरे ने कहा — "ठीक है जाओ।"

सो वह कुबड़ा अपनी यात्रा पर चल दिया। ये दोनों कुबड़े परमा[8] के रहने वाले थे। जब वह कुबड़ा काफी दूर चला गया तो वह एक चौराहे पर आया जहॉ मेला लगा हुआ था। वहॉ हर चीज़ बिक रही थी। वहॉ एक आदमी था जो चीज़ बेच रहा था — "थोड़ी पारमेज़ान[9] खाओ। थोड़ी पारमेज़ान खाओ।"

कुबड़े ने सोचा कि वह आदमी उसके लिये कह रहा है सो वह भाग कर एक ऑगन में छिप गया। जब एक बज गया तो उसने जंजीरों के खनखनाने की आवाज सुनी और शब्द सुनायी दिये –

---

[7] The Two Humpbacks. Tale No 27.

[8] Parma is a place in Italy

[9] Parmesan Cheese – a kind of processed cheese. It is a bit more expensive than other kinds of cheeses.

शनिवार और रविवार। उन्होंने ये शब्द कई बार दोहराये तो एक बार वह भी बोल पड़ा "और सोमवार।"

जो यह गा रहे थे वे बोले — "अरे हमारे गाने में यह कौन सुर मिला रहा है।" कह कर उन्होंने उसे ढूँढना शुरू किया तो उनको कुबड़ा छिपा हुआ मिल गया।

कुबड़ा बेचारा बोला — "ओ भले आदमियों मैं यहाँ तुम्हारा कोई नुकसान करने नहीं आया।"

वे बोले — "तुमने हमारे गीत में सुर मिलाया है हम तुम्हें इसके लिये इनाम देने आये हैं। आओ हमारे साथ आओ।"

उन्होंने उसको एक मेज पर लिटाया और उसका कूबड़ निकाल दिया उसका घाव भर दिया और उसको दो थैले भर कर पैसे दे दिये। फिर वे बोले — "अब तुम जा सकते हो।"

उसने उनको धन्यवाद दिया और अपना कूबड़ ठीक करा कर चला गया। तुम लोग खुद सोच सकते हो कि अब वह अपने आपको कितना तन्दुरुस्त समझ रहा होगा। वह अपनी जगह परमा वापस आ गया।

जब दूसरे कुबड़े ने उसे देखा तो चिल्लाया — "तुम तो मेरे दोस्त जैसे नहीं लग रहे हो। क्योंकि मेरे दोस्त की पीठ पर तो कूबड़ था। वह तो वहाँ नहीं है। ए क्या तुम मेरे वही दोस्त हो।"

पहला कुबड़ा बोला — "हाँ मैं तुम्हारा वही दोस्त हूँ।"

दूसरा कुबड़ा फिर बोला — "पर तुम मेरी बात तो सुनो। क्या तुम्हारे पहले कूबड़ नहीं था?"

"हॉ था। पर उन्होंने मेरा कूबड़ निकाल दिया और देखो मुझे ये दो थैले भर कर पैसे भी दिये। मैं तुम्हें अभी बताता हूॅ। मैं जब फलॉ फलॉ जगह पहुॅचा तो उन्होंने यह गाना शुरू ही किया था — "थोड़ा सा पारमेज़ान खा ला। थोड़ा सा पारमेज़ान खा लो।"

यह सुन कर मैं इतना डर गया कि मैं फलॉ फलॉ जगह छिप गया। किसी खास समय पर मैंने जंजीरों के बजने की आवाजें सुनी और फिर सुना कुछ लोगों का गाना "शनिवार और रविवार"। जब वे इन शब्दों को दो तीन बार दोहरा चुके तो मैंने उसमें जोड़ा "और सोमवार"।

यह सुन कर उन्होंने मुझे ढूॅढा और पा लिया। क्योंकि मैंने उनका गाना बहुत अच्छा कर दिय था सो उन्होंने मुझे उसका इनाम देना चाहा। वे मुझे एक तरफ ले गये मेरा कूबड़ हटाया और मुझे दो थैले पैसे दिये।"

दूसरा कुबड़ा बोला — "हे भगवान। मैं भी वहॉ जाना चाहता हूॅ।"

"जाओ तुम वहॉ जरूर जाओ। विदा।"

सो वह दूसरा कुबड़ा भी वहीं चला गया था जहॉ पहला कुबड़ा गया था और ठीक वहीं जा कर छिप गया जहॉ उसका साथी जा कर छिपा था।

उसने भी जंजीरों की आवाज सुनी। उसने भी वह "शनिवार और रविवार और सोमवार वाला गाना कई बार सुना। कुछ देर बाद वह बोला "और मंगलवार।"

बस उसे सुनते ही वे तो नाराज हो गये तुरन्त ही चिल्लाये — "कौन है वह जिसने हमारा गाना बिगाड़ा। अगर हमें वह मिल जाये तो हम उसे फाड़ कर रख दें।"

उन्होंने उसको जल्दी ही ढूँढ लिया और उसको तब तक मारते रहे जब तक कि वे थक नहीं गये। फिर वे उसको उसी मेज पर ले गये जिस पर उसके साथी को ले गये थे। वे बोले — "वह कूबड़ उठा लो और इसके सामने वाले हिस्से में लगा दो।"

सो उन्होंने पहले वाले का कूबड़ उठाया और उसकी छाती पर लगा दिया और फिर उसको मार मार कर भगा दिया। वह घर गया तो उसका दोस्त चिल्लाया — "हे भगवान मुझ पर दया करो। तुम मेरे दोस्त नहीं हो। क्योंकि इसके तो सामने भी कूबड़ है। क्या तुम मेरे दोस्त नहीं हो।"

दूसरा दोस्त बोला — "मैं तो अपने उसी कूबड़ का बोझ उठाना नहीं चाहता था पर अब तो मुझे अपने कूबड़ के साथ साथ तुम्हारे कूबड़ का भी बोझ उठाना पड़ रहा है। और देखो कि मुझे तो पीटते पीटते भी अधमरा कर दिया गया है।"

उसके दोस्त ने कहा — "आओ दोस्त अन्दर आओ। चलो हम लोग पेट भर कर खाना खाते हैं। इस तरह अपना दिल न तोड़ो।"

इस तरह से वह रोज अपने दोस्त के साथ खाना खाता रहा। फिर शायद दोनों मर गये होंगे।

28 कैथरीन और उसकी किस्मत की कहानी[10]

सिसिली में ऐसी कई कहानियॉ कही सुनी जाती हैं जिनमें किसी की किस्मत एक आदमी बन कर उसकी रक्षा करती है या फिर अच्छी या बुरी परी का काम करती है। इसी तरह से सौभाग्य भी एक आदमी बन जाता है। पहली तरह की एक कहानी जिसका बाद वाली तरह की कहानी से कुछ सम्बन्ध भी है यहॉ दी जा रही है। यह गौन्ज़ैनबाक की लिखी हुई कहानी है।

एक बार की बात है कि एक बहुत ही अमीर सौदागर था जिसके पास किसी राजा से भी ज़्यादा खजाना था। उसके मेहमानखाने में तीन शानदार सुन्दर कुरसियॉ पड़ी रहती थीं। एक चॉदी की थी दूसरी सोने की और तीसरी हीरों की। इस सौदागर की एक ही बेटी थी जिसका नाम था कैथरीन और वह सूरज से भी सुन्दर थी।

एक दिन जब कैथरीन अपने कमरे में बैठी हुई थी तो उसके कमरे का दरवाजा अचानक अपने आप ही खुल गया और उसमें से एक लम्बी सुन्दर स्त्री अन्दर आयी। उसके हाथ में एक पहिया था।

उसने अन्दर आ कर उससे पूछा — "कैथरीन। तुम अपनी ज़िन्दगी का आनन्द कब उठाना चाहोगी, जवानी में या बुढ़ापे में।" इस सवाल पर कैथरीन पहले तो उसे एक पल घूरती रह गयी। उससे कोई जवाब ही नहीं बन पड़ा।

तो उसने उससे दोबारा पूछा — "कैथरीन। तुम अपनी ज़िन्दगी का आनन्द कब उठाना चाहोगी, जवानी में या बुढ़ापे में।"

[10] The Story of Catherine and Her Fate. Tale No 28. By Laura Gonzenbach. (Tale No 21)

कैथरीन फिर भी कुछ न बोल सकी पर उसने सोचा "अगर मैं "जवानी में" कहती हूँ तो मुझे "बुढ़ापे में" वह दुख उठाना पड़ेगा और अगर मैं "बुढ़ापे में" कहती हूँ तो कम से कम बुढ़ापे में तो मैं आनन्द से रहूँगी और जवानी में भगवान देख लेंगे।"

सो वह बोली "बुढ़ापे में।"

वह सुन्दर स्त्री बोली "जैसी तुम्हारी मर्जी।" उसने अपना पहिया एक बार घुमाया और गायब हो गयी।

यह सुन्दर स्त्री हमारी बेचारी कैथरीन की किस्मत थी।

कुछ दिन बाद ही खबर मिली कि उसके पिता के कुछ जहाज़ तूफान में फँस गये हैं। कुछ दिनों बाद खबर मिली कि उसके पिता के कुछ और जहाज़ और लापता हैं। एक महीने के अन्दर अन्दर वे बहुत गरीब हो गये।

उसके पिता को अपना सब कुछ बेचना पड़ा और फिर यह पैसा भी बहुत जल्दी ही खत्म हो गया जिससे अब वे दाने दाने को तरसने लगे। इस दुख की वजह से उसका पिता बीमार पड़ गया और मर गया।

अब बेचारी कैथरीन इस दुनियाँ में अकेली रह गयी। उसके पास एक पैनी भी नहीं थी। उसको कोई शरण भी नहीं दे रहा था। उसने सोचा कि "मैं अब दूसरे शहर जाती हूँ वहीं अपने लिये कोई जगह ढूँढती हूँ।"

यह सोच कर वह चल दी और एक दूसरे शहर में आ गयी। जब वह वहॉ की सड़कों पर से गुजर रही थी तो एक कुलीन स्त्री एक खिड़की पर बैठी हुई थी।

उसने उससे पूछा — "ओ सुन्दर लड़की तुम इस तरह से अकेली कहॉ जा रही हो।"

वह बोली — "ओ कुलीन स्त्री। मैं एक बहुत ही गरीब लड़की हूॅ और अपनी रोटी कमाने के लिये कोई जगह ढूॅढ रही हूॅ। क्या तुमको मेरी जरूरत नहीं है?"

सो उस कुलीन स्त्री ने उसे अपने घर में बुला लिया और कैथरीन उसकी वफादारी से सेवा करने लगी।

कुछ दिनों बाद एक शाम उस स्त्री ने कहा — "देखो मुझे कहीं बाहर जाना है। मैं दरवाजे को ताला लगा जाऊॅगी।"

कैथरीन बोली "ठीक है।"

जब उसकी मालकिन चली गयी तो वह अपनी सिलाई करने बैठ गयी। कि अचानक फिर एक बार उसकी किस्मत उसके पास आयी और चिल्ला कर बोली — "सो। तुम क्या समझती हो कि मैं तुम्हें यहॉ इस तरह से शान्ति से रहने दूॅगी।"

इतना कह कर कैथरीन की किस्मत इधर उधर दौड़ने लगी और आलमारियों में से उसकी मालकिन के कपड़े निकाल निकाल कर बाहर फेंकने लगी। सब कपड़ों को उसने हजारों टुकड़ों में फाड़ दिया।

कैथरीन ने जब यह देखा तो उसके मुँह से निकला — "उफ़। अभी अगर मालकिन आ गयी और उसने यह सब देख लिया तो वह तो मुझे मार ही डालेगी।"

और इस परेशानी में वह घर से निकल कर बाहर भाग गयी। उसकी किस्मत ने उन सब कपड़ों को उठाया और सबको पहले जैसा कर के वहीं आलमारी में पहले जैसा ही रख दिया।

जब मालकिन लौटी तो उसने आवाज लगायी "कैथरीन।" पर कैथरीन तो वहॉ कहीं भी दिखायी नहीं दे रही थी। उसने सोचा क्या वह मेरे घर से चोरी कर के भाग गयी है। पर जब उसने चारों तरफ निगाह डाली तो उसने देखा कि वहॉ से तो कुछ भी चोरी नहीं हुआ है। उसको बहुत आश्चर्य हुआ पर कैथरीन कहीं दिखायी नहीं दी।

उधर कैथरीन अपनी धुन में चलती चली जा रही थी। अब वह एक दूसरे शहर में आ पहुँची थी। वहॉ भी एक खिड़की पर एक स्त्री खड़ी थी।

उसने भी उससे पूछा — "ओ सुन्दर लड़की तुम अकेली कहॉ जा रही हो।"

लड़की बोली — "ओह कुलीन स्त्री। मैं एक बहुत ही गरीब लड़की हूँ और रोटी कमाने की जगह ढूँढ रही हूँ। क्या आप मुझे काम दे सकती हैं?"

यह सुन कर उस स्त्री ने उसको अन्दर बुला लिया और उसे काम पर लगा लिया। कैथरीन को लगा कि अब शायद वह सुरक्षित

है और यहाँ शान्ति से काम करेगी। यह ऐसे ही चलता रहता कि एक दिन जब उसकी मालकिन बाहर गयी हुई थी कि उसकी किस्मत फिर से उसके सामने आ कर खड़ी हो गयी।

उसने उससे बड़ी कठोरता से कहा — "तो अब तुम यहाँ आ गयी हो। तुम क्या समझती हो कि क्या तुम यहाँ मुझसे बच जाओगी।"

कह कर उसने वहाँ रखी हर चीज़ बर्बाद कर दी। दिल में दुखी हो कर कैथरीन वहाँ से भी भाग ली।

इस तरह से इस डर के साथ जीते हुए कैथरीन ने अपने सात साल गुजार दिये। वह एक शहर से दूसरे शहर भागती रही जहाँ वह हमेशा ही अपने रुकने के लिये जगह तलाश करती रही।

हर कुछ दिन बाद उसकी किस्मत उसके सामने आती और उसका सब कुछ बर्बाद कर देती। इसलिये उस लड़की को वहाँ से भागना पड़ जाता। और जब वह भाग जाती तो वहाँ सब कुछ ठीक हो जाता। आखिर सात साल बाद उसकी किस्मत उसके साथ यह खेल खेलते खेलते थक गयी।

एक दिन कैथरीन ने फिर से एक नये शहर में पहुँची तो वहाँ भी एक खिड़की पर एक स्त्री खड़ी हुई थी उसने कैथरीन से पूछा — "ओ सुन्दर लड़की। तुम अकेली कहाँ जा रही हो।"

कैथरीन बोली — "ओ कुलीन स्त्री। मैं एक गरीब लड़की हूँ और रोटी कमाने की जगह ढूँढ रही हूँ।"

स्त्री बोली — "मैं तुम्हें रख सकती हूँ पर तुम्हें मेरा एक काम रोज करना पड़ेगा पर मुझे पता नहीं कि तुम्हारे अन्दर यह काम करने की ताकत है या नहीं।"

कैथरीन बोली — "आप मुझे काम बताइये तभी मैं बता सकती हूँ कि मैं यह काम कर सकती हूँ या नहीं।"

स्त्री बोली — "वह सामने पहाड़ देख रही हो न। रोज सुबह सुबह तुमको वहाँ ताजा डबल रोटी ले जानी पड़ेगी और वहाँ जा कर तीन बार ज़ोर ज़ोर से चिल्लाना पड़ेगा "ओ मेरी मालकिन की किस्मत। ओ मेरी मालकिन की किस्मत। ओ मेरी मालकिन की किस्मत।" तब मेरी किस्मत वहाँ प्रगट होगी और वह डबल रोटी वह तुमसे ले लेगी। यह काम तुम्हें रोज करना पड़ेगा।"

कैथरीन मान गयी और यह काम करने के लिये तैयार हो गयी। कैथरीन उस स्त्री के पास कई साल रही। हर सुबह वह अपनी मालकिन की किस्मत को डबल रोटी देने जाती रही।

जब वह वहाँ पहुँच कर तीन बार पुकारती "ओ मेरी मालकिन की किस्मत।" एक सुन्दर सी लम्बी स्त्री वहाँ आती और डबल रोटी उसके हाथ से ले लेती।

कैथरीन अक्सर यह सोच सोच कर रोती कि पहले वह कितनी पैसे वाली थी और अब उसे कितनी गरीबी में दिन बिताने पड़ रहे हैं – एक दासी की तरह।

एक दिन उसकी मालकिन ने पूछा — "कैथरीन तुम इतना क्यों रोती हो।"

तब कैथरीन ने उसे यह बताया कि उसकी किस्मत किस तरह से उसके साथ खेल खेल रही थी। तो उसकी मालकिन ने कहा — "मैं बताऊँ कैथरीन तुम क्या करो। जब तुम डबल रोटी ले कर पहाड़ पर जाओ तब तुम मेरी किस्मत से विनती करना कि वह तुम्हारी किस्मत से कहे कि वह तुम्हें शान्ति से छोड़ दे। हो सकता है कि तुम्हारा कुछ भला हो जाये।"

इस सलाह से कैथरीन थोड़ी खुश हो गयी। अगली सुबह जब वह मालकिन की किस्मत के लिये डबल रोटी ले कर गयी तो उसने मालकिन की किस्मत को अपनी समस्या बतायी और बोली — "ओ मेरी मालकिन की किस्मत। मेहरबानी कर के मेरी किस्मत से विनती करना कि अब वह मुझे और सजा न दे।"

मालकिन की किस्मत बोली — "आह। बेचारी लड़की। तुम्हारी किस्मत आजकल सात परदों में बन्द है इसलिये वह तुम्हारी बात नहीं सुन सकती। पर जब तुम कल आओगी तो मैं तुम्हें उसके पास ले चलूँगी।"

जब कैथरीन घर चली गयी तो उसकी मालकिन की किस्मत कैथरीन की किस्मत के पास गयी और उससे पूछा — "तुम उस बेचारी कैथरीन को तंग करते करते थकी नहीं। कुछ दिन के लिये उसे हँसी खुशी के दिन दे दो।"

कैथरीन की किस्मत ने कहा — "ठीक है। कल तुम उसे मेरे पास लाना में उसे कुछ दूँगी जो उसको उसकी सब परेशानियों से दूर रखेगी।"

अगले दिन जब कैथरीन डबल रोटी ले कर पहाड़ पर गयी तो उसकी मालकिन की किस्मत उसको उसकी अपनी किस्मत के पास ले गयी।

उसकी अपनी किस्मत सात परदों में बन्द थी। उसकी किस्मत ने उसको एक छोटी सी रेशम की लच्छी दी और कहा — "इसको सँभाल कर रखना। यह तुम्हारे काम आयेगी।"

उसके बाद कैथरीन अपने घर चली गयी और जा कर मालकिन से कहा कि उसकी किस्मत ने उसको एक छोटी सी रेशम की लच्छी दी है। पर वह लच्छी तो तीन ग्रैनी[11] की भी नहीं थी।

उसकी मालकिन ने कहा — "कोई बात नहीं। जब उसने कहा है कि उसको सँभाल कर रखना तो उसे सँभाल कर रखो। क्या पता कि वह कब किस काम आ जाये।"

इसके कुछ दिनों बाद ऐसा हुआ कि वहाँ के राजकुमार की शादी होने को हुई तो उसने अपने लिये शाही कपड़े बनवाये। जब दरजी उसकी एक सुन्दर सी पोशाक सिलने बैठा तो उसको उस रंग का सिल्क का कहीं धागा ही नहीं मिला।

[11] Maybe currency of those times.

राजा ने अपने राज्य में मुनादी पिटवा दी कि जो कोई राजकुमार की पोशाक की रंग का सिल्क का धागा ले कर आयेगा उसको बहुत अच्छा इनाम दिया जायेगा।

कैथरीन की मालकिन ने कहा — "देखो। तुम्हारी लच्छी के धागे का तो यही रंग है। जाओ तुम इसे राजा के पास ले जाओ ताकि वह तुम्हें उसके लिये कोई सुन्दर भेंट दे दे।"

सो कैथरीन ने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने और अपनी लच्छी ले कर राजा के दरबार में चली गयी। जब वह राजा के सामने पहुँची तो वह तो इतनी सुन्दर लग रही थी कि राजा तो उसके चेहरे से अपनी नजर ही हटा सका।

उसने जा कर कहा — "रौयल मैजेस्टी। मैं आपके लिये उसी रंग के रेशमी धागे की लच्छी ले कर आयी हूँ जो रंग आपको नहीं मिल रहा है।"

तभी एक मन्त्री बोला — "सर मैं बताऊँ कि आप क्या कीजिये। आप इस लच्छी के बराबर तौल कर उसको सोना दे दीजिये।"

राजा इस बात से सन्तुष्ट था। उसने एक तराजू मँगवायी और उसके एक पलड़े पर रेशम की लच्छी रखी और दूसरे पलड़े पर सोने का एक सिक्का रखा।

अब ज़रा सोचो कि क्या हुआ होगा। राजा ने कितने भी सोने के सिक्के तराजू के दूसरे पलड़े पर रखे पर रेशम की लच्छी वाला पलड़ा हमेशा ही भारी रहा।

तब राजा ने एक उससे बड़ी तराजू मँगवायी और उसके पलड़े में अपना सारा खजाना रख दिया पर फिर भी सिल्क की लच्छी वाला पलड़ा भारी ही रहा।

तब राजा ने अपने सिर से अपना ताज उतारा और दूसरे पलड़े पर अपने खजाने के साथ रख दिया। तुरन्त ही सिल्क की लच्छी वाला पलड़ा ऊपर उठ गया और दूसरे पलड़े पर रखी चीज़ों के बराबर हो गया।

राजा ने पूछा — "यह रेशम तुम्हें कहाँ से मिला?"

कैथरीन बोली — "यह मेरी मालकिन ने मुझे दिया।"

राजा चिल्लाया — "यह नामुमकिन है। अगर तुमने मुझे ठीक ठीक न बताया तो मैं तुम्हारा सिर कटवा दूँगा।"

तब कैथरीन ने उसे शुरू से आखीर तक सब कहानी सुना दी।

राजा के दरबार में एक बहुत ही होशियार स्त्री थी। उसने कैथरीन से कहा — "कैथरीन तुमने बहुत दुख सहे हैं पर अब तुम्हारा खुशी का समय आ गया है। पर क्योंकि जब तक राजा का ताज तराजू पर नहीं रखा गया तब तक सिल्क की लच्छी का पलड़ा ऊपर नहीं उठा यह यह बताता है कि तुम रानी बनोगी।"

राजा बोला — "अगर इनको रानी बनना है तो मैं इनको अपनी रानी बनाऊँगा। अब कैथरीन के अलावा कोई और मेरी रानी नहीं बनेगी।"

और फिर ऐसा ही हुआ। जिससे उसकी शादी होने वाली थी उसे उसने खबर भिजवा दी कि अब वह उससे शादी नहीं करना चाहता था और फिर उसने कैथरीन से शादी कर ली।

कैथरीन ने अपनी जवानी में बहुत कुछ सहने के बाद अपने बुढ़ापे में केवल फिर खुशियॉ ही खुशियॉ भोगीं।

बालटी जैसी कहानियों में अच्छी बहिन को इनाम दिया जाता है और बुरी बहिन को सजा दी जाती है। एक दूसरी जानी पहचानी नैतिक कहानी है जिसमें राजा की लड़की को उसके घमंड के लिये सजा मिलती है क्योंकि वह एक अच्छे खासे दुलहे को शादी से मना कर देती है। उसको यह सजा मिलती है कि जो भी पहला आदमी उसका हाथ मॉगेगा उसी से उसकी शादी करा दी जायेगी।

यह ग्रिम्स की एक कहानी का विषय है – "राजा थ्रशबीयर्ड"[12]

या कहना चहिये कि राजा अपनी बेटी की शादी सबसे पहले आये भिखारी से कर देता है। यही विषय इसी कहानी के इटली में कही जाने वाली रूप में भी है। पर इसमें यह राजकुमारी फिर उसी दुलहे के प्रेम में पड़ जाती है जिसको वह एक बार मना कर देती है और जो किसी और तरीके से किसी कुलीन का वेश बना कर आता है। या फिर वह अपने छिपे हुए वेश में उसको कुछ सुन्दर चीज़ें बेचने के बदले में खरीद लेता है।

इटली में इसका जो बहुत ही सामान्य रूप प्रचलित है वह है – कोरोनेदी बर्ती[13] की लिखी हुई कहानी

[12] King Thrushbeard. By Grimms. (Tale No 52)

[13] Coronedi-Berti. Bolognese Tales. (Tale No 15).

29 दाढ़ी में खाने का टुकड़ा[14]

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसकी एक बेटी थी जिसका नाम था स्टैला।[15] वह बहुत सुन्दर थी पर कुछ अकड़ू थी और जिद्दी थी। उसको खुश करना बहुत मुश्किल था उसने अपने पिता का हाल भी खराब कर रखा था।

उसको कई राजाओं और राजकुमारों से शादी के प्रस्ताव आये थे परन्तु उसने सबको जवाब दे दिया था। हर किसी में उसने कोई न कोई कमी निकाल दी थी। वह किसी के साथ शादी नहीं करने वाली थी।

इस तरह से वह बड़ी होती रही। राजा हमेशा इसी सोच में पड़ा रहता कि वह अपना राज्य किसे सौंप कर जायेगा। सो उसने अपनी काउन्सिल बुलायी और इस मामले पर उनकी सलाह मॉगी।

उन्होंने उसको एक बड़ी दावत देने की सलाह दी जिसमें उसे सब बड़े बड़े राजाओं और राजकुमारों को बुलाना चाहिये। क्योंकि उनका कहना था कि जब इतने सारे लोग वहॉ मौजूद होंगे तो कोई न कोई तो राजकुमारी जी को पसन्द आ ही जायेगा।

राजा को यह विचार पसन्द आया और उसने तुरन्त ही एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम करने के लिये हुक्म दे दिया और

[14] The Crumb in the Beard. Tale No 29.
[15] Stella – name of the Princess

आस पड़ोस के सभी राजाओं राजकुमारों और कुलीन लोगों को उसमें आने का न्यौता दे दिया।

फिर उसने अपनी बेटी को बुलाया और उससे कहा — "सुनो बेटी स्टैला। मैंने ऐसे ऐसे करने का विचार किया है ताकि मैं तुम्हारे लिये कोई ऐसा दुलहा ढूँढ सकूँ जो तुम्हें खुश कर सके। देखो मेरी बच्ची। मेरे अब बाल सफेद हो रहे हैं मुझे कोई न कोई ऐसा चाहिये जिसके ऊपर अपने राज्य और ताज की जिम्मेदारी छोड़ सकूँ।"

स्टैला ने अपने पिता को सिर झुकाया और कहा कि वह उसकी खुशी के लिये अपनी पूरी पूरी कोशिश करेगी।

राजाओं और राजकुमारों और कुलीन लोगों का आना शुरू हो गया। और जब दावत का समय आया वे सब अपनी अपनी सीट पर बैठ गये।

तुम लोग सोच सकते हो कि वह दावत किस तरीके की रही होगी। कमरा कैसे सजाया गया होगा। सभी की गर्दनों से सोना चॉदी लटक रहा था। कमरे के चारों कोनों में चार फव्वारे लगाये गये थे जिनसे रह रह कर शराब निकल रही थी और चारों तरफ खुशबुऐं फैल रही थी।

जब आदमी लोग खाना खा रहे थे स्टैला एक दरवाजे के पीछे खड़ी थी। उसकी एक दासी उसके पास खड़ी थी। वह बार बार इशारे से उससे कह रही थी — "यह वाला। नहीं नहीं वह वाला। देखो योर मैजेस्टी वह कितना सुन्दर नौजवान बैठा हुआ है।"

"हॉ सुन्दर तो है पर उसकी नाक ज़रा लम्बी है।"

"और वह वाला जो आपके पिता के पास बैठा है।"

"उसकी तो ऑखें ही चाय के प्याले के नीचे रखने वाली प्लेट की तरह हैं।"

"और वह जो उधर मेज के सिरहाने की तरफ बैठा हुआ है।"

"उसका तो मुॅह ही कितना बड़ा है। उसके मुॅह से तो ऐसा लग रहा है जैसे वह खाने का बहुत शौकीन हो।"

थोड़े में कहो तो उसने सभी में कोई न कोई दोष निकाल दिया था – सिवाय एक के। उसने कहा कि वह उसे पसन्द आया। पर लगता है कि वह बहुत ही गन्दा आदमी है क्योंकि खाने के बाद उसकी दाढ़ी में रोटी का एक टुकड़ा लगा हुआ है।

इत्तफाक से उस नौजवान ने यह सुन लिया। उसने राजकुमारी से इसका बदला लेने की सोची। अब यह राजकुमार ग्रीन हिल के राजा का बेटा था और वहॉ आये लोगों में सबसे सुन्दर था।

जब दावत खत्म हो गयी तो राजा ने अपनी बेटी को बुलाया और उससे पूछा — "क्या खबर है बेटी स्टैला।"

स्टैला ने बताया कि एक नौजवान उसे पसन्द आया था पर उसकी दाढ़ी में रोटी का एक टुकड़ा लगा हुआ था। इससे उसे लगा कि वह गन्दा आदमी है इसलिये वह उससे शादी नहीं करना चाहती। राजा ने उसे प्यार से समझाया — "बेटी देख लो तुम पछताओगी।" कह कर वह वहॉ से चला गया।

स्टैला का अपना कमरा एक चौराहे की तरफ खुलता था और उसके सामने एक बेकर की दूकान थी। एक रात जब वह सोने की तैयारी कर रही थी तो उसने उस कमरे से आती एक इतनी सुरीली आवाज सुनी जिसमें आटा छाना जाता था कि वह उसके दिल को छू गयी।

वह खिड़की की तरफ दौड़ी और उसे सुनती रही जब तक कि वह गाना खत्म नहीं हो गया। फिर उसने अपनी दासी से पूछा कि वह आदमी कौन था जो इतना मीठा गा रहा था।

दासी बोली "यह आप मुझ पर छोड़ दीजिये। मैं आपको पता लगा कर कल बता दूँगी।"

स्टैला उस आदमी के बारे में जानने के लिये बहुत बेचैन थी। उससे समय काटे नहीं कट रहा था। अगले दिन जल्दी ही उसे पता चल गया कि वह बेकर का आटा छानने वाला था।

उस शाम को उसने उसका गाना फिर से सुना। वह खिड़की पर लगे पत्थर पर ही खड़ी रही जब तक सब कुछ शान्त नहीं हो गया।

अगले दिन शाम को उसने उसका गाना फिर सुना और अपनी दासी से कहा कि वह उसे खुद देखना चाहेगी जो इतना सुरीला और मीठा गाना गा रहा था।

अगली सुबह वह फिर से अपनी खिड़की के पास जा कर खड़ी हो गयी। जल्दी ही एक नौजवान उसको बेकर की दूकान से बाहर

निकलता नजर आ गया। उसकी सुन्दरता ने उसके ऊपर जैसे कोई जादू डाल गया हो। वह उससे बुरी तरह प्यार करने लगी।

तुमको यह पता होना चाहिये कि यह वही राजकुमार था जो उस दिन राजा की दावत में शामिल हुआ था और जिसे स्टैला ने "गन्दा" कह दिया था। सो उसने अपने आपको कुछ इस तरह से छिपाया कि स्टैला उसे पहचान न सकी क्योंकि वह खुद उससे बदला लेने की तैयारी कर रहा था।

एक दो बार उसकी नजर में आने के बाद अब वह उसे अपना टोप उतार कर नमस्ते करने लगा। स्टैला उसकी तरफ देख कर मुस्कुरा देती और अब हर समय अपनी खिड़की पर ही खड़ी रहती।

इसके बाद वे आपस में बोलने चालने लगे और शाम को अब वह उसके लिये उसकी खिड़की के नीचे खड़े हो कर गीत गाता। थोड़े में कहो तो वे अब ईमानदारी से एक दूसरे को प्यार करने लगे थे।

जब उसको पता चला कि स्टैला की अभी शादी नहीं हुई है तो उसने उससे शादी की बात की। उसने तुरन्त ही हॉ कर दी। पर बाद में जब उससे पूछा गया कि वह अपने जीने के लिये क्या करता था तो वह बोला — "मेरे पास तो एक पैनी भी नहीं है। जो कुछ भी थोड़ा बहुत मैं कमाता हूँ वह तो मेरे लिये ही काफी नहीं होता।"

स्टैला बोली — "मैं तुम्हें अपना सारा पैसा दे दूँगी और जो कुछ भी तुम चाहोगे वह भी मैं तुमको दे दूँगी।"

स्टैला को उसके घमंड की सजा देने के लिये स्टैला के पिता और राजकुमार के पिता ने आपस में सलाह कर ली थी सो उन्होंने यह दिखाया कि उन दोनों को इस बात का पता ही नहीं है और स्टैला को वह जो कुछ भी महल से ले जाना चाहती थी ले जाने दिया।

अगले दिन सारे दिन स्टैला अपने कपड़े चॉदी और और दूसरा सामान बॉधती रही। रात को राजकुमार खिड़की के नीचे आया तो उसने अपना बॅधा हुआ सामान नीचे फेंक दिया।

ऐसा कुछ समय तक चलता रहा फिर एक शाम उसने स्टैला से कहा — "सुनो स्टैला। अब समय आ गया है।"

स्टैला भी बस इसी पल का इन्तजार कर रही थी। अगली रात को उसने अपनी कमर में रस्सी बॉधी और खिड़की से नीचे उतर गयी। राजकुमार ने सहारा दे कर उसे जमीन पर उतारा उसकी बॉह पकड़ी और वहॉ से जल्दी से चले गये।

वह उसको बहुत दूर एक दूसरे शहर में ले गया। जहॉ वह एक सड़क पर पहले दरवाजे के पास पहुॅचा। उसने दरवाजा खोला और एक रास्ते पर दूर तक चल कर फिर एक दरवाजे तक पहुॅचे जिसे खोलने पर उनको एक बहुत छोटा सा कमरा मिला जिसमें बस बहुत ऊपर एक खिड़की थी।

फर्नीचर के नाम पर वहॉ भूसे का एक बिस्तर था एक बैन्च थी और एक गन्दी सी मेज पड़ी थी।

अब तुम सोच सकते हो कि स्टैला ने जब यह जगह देखी होगी तो उसे कैसा लगा होगा। वह तो बस यही सोच रही थी कि वह मर क्यों नहीं गयी।

जब राजकुमार ने उसको इतना आश्चर्यचकित देखा तो उससे पूछा — "क्या बात है? क्या तुम्हें घर अच्छा नहीं लगा? क्या तुम्हें पता नहीं कि मैं एक गरीब आदमी हूँ? क्या मैंने तुम्हें धोखा दिया?"

"तुमने उन सब चीज़ों का क्या किया जो मैंने तुम्हें दी थीं?"

"ओह। मेरे ऊपर बहुत कर्जा था सो पहले मैंने उससे उनका कर्जा चुका दिया जिनसे मैंने कर्जा लिया था। फिर बाकी बची हुई चीज़ों को मुझे जैसा अच्छा लगा मैंने वैसे उनको इस्तेमाल कर लिया। अब तुम काम करने के लिये और अपनी रोटी कमाने के लिये अपना मन पक्का कर लो जैसे मैं करता हूँ।

मैं इस शहर के राजा के यहाँ उनका सामान उठाने का काम करता हूँ और इस काम के लिये महल जाता रहता हूँ। उन्होंने मुझसे कल कपड़े धुलायी करने के लिये कहा है सो कल सुबह तुम भी मेरे साथ चलने के लिये तैयार रहना। मैं तुम्हें दूसरी स्त्रियों के साथ काम पर लगवा दूँगा।

जब उनके घर खाना खाने जाने का समय हो तो तुम कहना कि तुम्हें भूख नहीं है। जब वे सब वहाँ से चली जायें तो तुम वहाँ से दो कमीजें चुरा लेना। तुम उनको अपने स्कर्ट में छिपा कर यहाँ ले आना।"

यह सब सुन कर स्टैला बेचारी फूट फूट कर रो पड़ी। उसने कहा कि यह काम करना उसके लिये नामुमकिन है। पर उसके पति ने कहा कि वह वैसा ही करे जैसा उसने उससे कहा है वरना वह उसे मारेगा।

अगली सुबह सुबह होते ही उसका पति खुद भी उठा और उसे भी तैयार कराया। राजकुमार ने उसके लिये एक धारीदार स्कर्ट और एक जोड़ी मोटा झोटा सा जूता खरीद दिया था। वह उसने उसको पहनाया और फिर महल ले गया।

वहॉ पहुॅच कर वह उसे कपड़े धोने की जगह ले गया दूसरी स्त्रियों से उसका परिचय कराया और उसे यह याद दिला कर कि उसके लिये उसके घर में क्या इन्तजार कर रहा था चला गया।

फिर वह जल्दी से अपने घर गया राजा जैसा तैयार हुआ और फिर महल के फाटक पर खड़े हो कर अपनी पत्नी के आने का इन्तजार करने लगा।

इस बीच स्टैला ने वही किया जो उसके पति ने उससे करने के लिये कहा। उसने दो कमीजें भी चारी कर ली थीं। जब वह महल से जा रही थी तो उसे राजा ने देखा लिया।

वह बोला — "ओ सुन्दर लड़की। तुम हमारे बोझा उठाने वाले की पत्नी हो। हो न?"

फिर उसने उससे पूछा कि उसके स्कर्ट के नीचे क्या छिपा हुआ था। कह कर उसे इतना हिलाया कि दो कमीजें वहॉ से नीचे गिर पड़ीं।

अब क्या था राजा चिल्लाया — "अरे देखो तो यह बोझा उठाने वाले की पत्नी तो चोर है। इसने यहॉ से कुछ कमीजें चुरा ली हैं।"

यह सुन कर बेचारी स्टैला तो रोती हुई घर भागी। उधर राजकुमार भी अपना वेश बदल कर शाम को घर पहुँचा तो स्टैला ने उसे वह सब बताया जो कुछ भी उसके साथ उस दिन महल में हुआ था। उसने उससे विनती की कि वह अब उसे महल में न भेजे।

पर वह बोला कि अगले दिन वे लोग कुछ खास पकाने वाले थे सो रसोईघर में उसको उनकी सहायता के लिये उसे जाना ही चाहिये और वहॉ से उसे थोड़ा सा आटा चुरा लाना चहिये।

उस दिन भी उसके साथ पहले दिन की तरह से ही हुआ। उस दिन भी उसकी चोरी पकड़ी गयी। और जब उसका पति शाम को घर लौटा तो उसने उसे एक शापित आदमी की तरह से रोता हुआ पाया। उसने अपने पति से कहा कि वह महल जाने की बजाय मर जाना ज़्यादा पसन्द करेगी।

वह फिर बोला — "कल राजा के बेटे की शादी है। वहॉ एक बहुत बड़ी दावत होगी। सो कल उसको वहॉ जरूर जाना चाहिये और रसोई में बर्तन धुलवाने चाहिये।"

साथ में उसने यह भी कहा कि जब भी उसको मौका मिले तो वहॉ से उसको एक बर्तन भर कर मॉस का पानी चुरा लाना चाहिये और उसे इस तरह लाना चाहिये कि जिससे उसे कोई देख न ले।

उसको वैसा ही करना पड़ा जैसा राजकुमार ने उससे कहा था। जैसे ही उसने मॉस के पानी का बर्तन छिपाया कि उसी समय राजकुमार वहॉ आ पहुँचा और बोला कि उसे बड़े कमरे में जाना चाहिये अभी वहॉ पर दावत के बाद नाच होने वाला है।

वह नाच में नहीं जाना चाहती थी पर राजकुमार उसे जबरदस्ती उसका हाथ पकड़ कर नाच में खींच कर ले गया। ज़रा सोचो वह कैसा नाच नाच रही होगी – उन्हीं कपड़ों में जिनमें वह रसोईघर में काम कर रही थी और मॉस के पानी का बर्तन हाथ में लिये।

राजा ने मजाक मजाक में अपनी तलवार उसकी बगल में चुभाना शुरू किया जब तक कि मॉस के पानी का बर्तन टूट नहीं गया और सारा पानी फर्श पर बिखर नहीं गया।

यह देख कर सब हॅस पड़े। यह देख कर बेचारी स्टैला तो बेहोश हो कर गिर पड़ी। वे सब उसको होश में लाने के लिये सिरका लाने के लिये दौड़े।

आखिर राजा की मॉ वहॉ आयी और बोली — "बस बहुत हो गया बेटा। अब रुक जाओ तुमने खुद ने उससे काफी बदला ले लिया है।"

फिर वह स्टैला से बोली — "देखो मैं तुम्हारी मॉ हूॅ। और यह सब इसने तुम्हारे इसे "गन्दा" कहने का बदला लेने के लिये किया है।"

फिर वह उसको उसकी बॉह पकड़ कर दूसरे कमरे में ले गयी जहॉ दासियों ने उसको रानी की तरह से सजाया। उसके माता पिता भी वहीं आ गये। उन्होंने उसको चूमा और गले लगाया। उसके पति ने उसके साथ ऐसा व्यवहार करने के लिये माफी मॉगी। दोनों में समझौता हो गया उसके बाद वे सुख से रहे।

उस दिन के बाद से उसने अपना पाठ अच्छी तरह से सीख लिया था कि घमंड करना अच्छी बात नहीं है।

30 परी औरलैन्डा[16]

इटली की लोक कथाओं की एक मजेदार बात यह है कि इनमें गुड़ियें और कठपुतलियॉ भी पायी जाती हैं। ये कभी कभी मालकिन की अनुपस्थिति दिखाती हैं या फिर उसकी जगह ले कर पति का गुस्सा सहती हैं। ऐसी कथाऐं दक्षिण इटली में ज़्यादा पायी जाती हैं। यह नीचे लिखी कथा नैपिल्स[17] की लोक कथाओं में से एक है।

एक बार की बात है कि एक सौदागर था जिसके कोई बच्चा नहीं था। एक बार उसे अपना व्यापार करने के लिये बाहर जाना पड़ा तो उसकी पत्नी ने उससे कहा — "यह लो यह अॅगूठी लो और इसे अपनी उॅगली में पहन लो। तुम मेरे लिये एक गुड़िया ले कर आना जो मेरे जितनी बड़ी हो। जो अपने आप से चल सकती हो सिलाई कर सकती हो और अपने आप कपड़े पहन सकती हो।

अगर तुम उसे लाना भूल जाओ तो यह अॅगूठी लाल पड़ जायेगी और तुम्हारा जहाज़ न तो आगे चलेगा और न पीछे ही जायेगा।"

और फिर वैसा ही हुआ। वह गुड़िया लाना भूल गया और जहाज़ पर चढ़ गया। अब वह जहाज़ तो हिल कर न दे।

जहाज़ के नाविक ने कहा — "जनाब आप यहॉ कुछ भूल गये हैं क्या।"

---

[16] The Fairy Orlanda. Tale No 30. From Naples area.

[17] Naples is a port city in Southern Western part of Italy.

जितने लोग वहॉ बैठे हुए थे बोले — "नहीं हम तो नहीं भूले।"

यह सौदागर सबसे पीछे बैठा हुआ था। जब नाविक इसके पास आया और इससे भी वही पूछा तो इसने अपने हाथ की तरफ देखा और बोला — "हॉ मैं अपनी पत्नी के लिये गुड़िया खरीदना भूल गया हूँ।"

वह जहाज़ से नीचे उतरा उसने गुड़िया खरीदी और फिर से जहाज़ पर चढ़ गया। अब जहाज़ चल पड़ा था।

नैपिल्स पहुँच कर वह उस गुड़िया को अपनी पत्नी के पास ले गया। वह बहुत अच्छे कपड़े पहने थी। वह एक बहुत सुन्दर नौजवान लड़की जैसी लग रही थी। उसकी पत्नी उस गुड़िया को देख कर बहुत खुश हुई। उसने गुड़िया से बातें कीं और फिर दोनों छज्जे के पास ही काम करते रहते और बात करते रहते।

छज्जे के सामने ही एक राजकुमार रहता था। उसे उस गुड़िया से प्यार हो गया और वह उसके प्रेम में बीमार पड़ गया। रानी ने देखा कि उसका बेटा बीमार हो गया है।

उसने अपने बेटे से पूछा — "बेटे क्या बात हो गयी है। कम से कम अपनी मॉ को तो बताओ। कल को हम लोग मर जायेंगे और तुम राज करोगे। अगर तुम इसी तरह से बीमार पड़े रहे तो तुम भी मर जाओगे फिर कौन राज करेगा।"

राजकुमार बोला — "मॉ मैं इसलिये बीमार पड़ गया हूॅ कि एक नौजवान लड़की है – सौदागर की बेटी जो हमारे सामने ही रहती है। वह इतनी सुन्दर है कि उसने मेरे ऊपर जैसे अपने रूप की मोहिनी डाल दी है।"

रानी बोली — "ठीक है बेटा। मैं तुम्हारी शादी उससे करा दूॅगी। अगर वह किसी खानाबदोश की बेटी भी हुई तो भी मैं तुम्हारी शादी उससे करा दूॅगी।"

राजकुमार बोला — "यह तुम बड़ा अच्छा करोगी मॉ। सो हम सौदागर को बुलवा लें?"

सो उन्होंने एक नौकर को सौदागर के घर भेज दिया – हर मैजेस्टी ने आपको अपने महल में बुलाया है।"

"वह मुझसे क्या चाहती हैं।"

"वे आपसे बात करना चाहती हैं।"

सौदागर महल में गया तो उसने रानी से पूछा — "महारानी आपको क्या चाहिये।"

रानी ने पूछा — "क्या तुम्हारे कोई बेटी है।"

"नहीं मैजेस्टी।"

"इसका क्या मतलब है कि नहीं मैजेस्टी। मेरा बेटा तुम्हारी बेटी के प्यार में पागल है और बीमार पड़ा है और तुम कहते हो कि तुम्हारे कोई बेटी नहीं है।"

"ओह योर मैजेस्टी वह। वह तो एक गुड़िया है कोई लड़की वड़की नहीं है।"

रानी बोली — "मुझे तुम्हारी यह बेमतलब की बात नहीं सुननी। अगर तुम **15** दिन के अन्दर अन्दर अपनी बेटी को यहॉ नहीं लाये तो तुम्हें फॉसी लगा दी जायेगी।"

सौदागर बेचारा रोता हुआ घर चला गया। जब उसकी पत्नी ने देखा कि उसका पति रो रहा है तो उसने उससे पूछा — "प्रिय क्या बात है क्यों रो रहे हो। महल में राजा ने तुमसे ऐसा क्या कहा कि तुम रो पड़े।"

सौदागर रोते हुए बोला — "प्रिये तुम बिल्कुल अन्दाजा नहीं लगा सकतीं कि मेरे साथ क्या हुआ। राजा का बेटा तुम्हारे पास जो गुड़िया है उसके प्रेम में पड़ गया है। वह बीमार भी पड़ गया है।"

"क्या? वह बीमार पड़ गया है? क्या उसे दिखायी नहीं देता कि वह तो केवल एक गुड़िया है?"

"उसको विश्वास ही नहीं होता। उसका कहना है कि वह मेरी बेटी है। और अगर मैं उसको **15** दिन के अन्दर अन्दर उसके पास नहीं ले कर गया तो मुझे फॉसी दे दी जायेगी।"

पत्नी बोली — "तो इसमें इतना परेशान होने की क्या बात है। तुम यह गुड़िया ले कर शहर भर में घूमो और तब देखो कि क्या होता है।"

उसने ऐसा ही किया। जब वह गुड़िया को लिये बाहर पागल सा घूम रहा था तो एक बूढ़े ने कहा — "यह आप क्या कर रहे हैं?"

"मैं तुम्हें क्यों बताऊँ?"

बूढ़ा बोला — "मुझे सब पता है।"

इस पर सौदागर बोला — "अगर तुम्हें सब पता है तो मेरी मौत की कोई तरकीब बताओ।"

बूढ़ा बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। आप फलॉ फलॉ जगह चले जाइये वहॉ एक परी रहती है जिसका नाम परी औरलैन्डा है। उसके महल में कोई पहरेदार नहीं है और उसके महल में कोई सीढ़ी भी नहीं है।

आप यह वायलिन लें और यह रेशम की सीढ़ी लें। जब आप उसके महल के पास पहुँच जायें तो यह वायलिन बजाना शुरू कर दीजियेगा। परी और उसकी **12** दासियॉ खिड़की पर आ जायेंगी। वह परी आपकी सहायता करेगी।"

सौदागर बूढ़े के बताये रास्ते पर चलता चला गया। उसको वह महल भी मिल गया जिसका कोई पहरेदार नहीं था और न ही उसमें कोई सीढ़ी थी।

उसने अपनी वायलिन बजानी शुरू कर दी। उसकी वायलिन की आवाज सुन कर परी औरलैन्डा और उसकी **12** दासियॉ वहॉ

प्रगट हो गयीं। परी ने पूछा "आपको क्या चाहिये। आपने हमें क्यों बुलाया है।"

"ओ परी औरलैन्डा मेरी सहायता करो।"

"कैसी सहायता।"

सौदागर बोला — "मेरे पास यह गुड़िया है। राजा का बेटा इस गुड़िया से प्रेम करने लगा है और इसे मेरी बेटी समझता है। वह बीमार पड़ गया है। मैं क्या करूँ। अगर मैं इसे उसको **15** दिन के अन्दर अन्दर उसको नहीं देता हूँ तो वे मुझे फॉसी लगा देंगे।"

परी औरलैन्डा बोली — "यह सीढ़ी दीवार के सहारे लगाओ और वह गुड़िया मुझे दो। दो घंटे इन्तजार करो फिर मैं तुम्हें यह गुड़िया वापस करती हूँ।"

सौदागर ने वह गुड़िया उसे दे दी। दो घंटे इन्तजार किया। परी वापस आयी और बोली — "यह लो अपनी बेटी लो। अब यह हर किसी से बोलेगी – राजा से भी रानी से भी पर राजकुमार से नहीं बोलेगी। विदा।"

कह कर परी वहीं गायब हो गयी और सौदागर अपनी बेटी को वहॉ से ले कर घर आ गया। वह उसे अपनी पत्नी के पास ले गया।

गुड़िया ने उसे देख कर पूछा — "मॉ तुम कैसी हो।"

"मैं बिल्कुल ठीक हूँ बेटी। तुम अब तक कहॉ थीं।"

"मैं पिता जी के साथ गॉव गयी थी अब मैं वापस आ गयी हूॅ।"

15 दिन में सौदागर ने उसको बहुत अच्छी तरह से सजाया और उसे महल ले गया। जैसे ही राजा ने उसे देखा तो वह रानी से बोला — "मेरा बेटा ठीक कहता था। यह बहुत सुन्दर है।"

सौदागर की बेटी अन्दर गयी और उसने राजा और रानी से बात की पर वह राजकुमार से नहीं बोली। यह देख कर राजकुमार को बहुत शर्म आयी कि वह लड़की उसके माता पिता से तो बोली मगर उससे नहीं बोली। उसने सोचा "इसका क्या मतलब है। हो सकता है कि इसको यहॉ बोलने में शर्म आ रही हो।"

उन दोनों की शादी हो गयी पर फिर भी वह उससे नहीं बोली तो राजकुमार को उसे अलग करना पड़ा। अब दोनों दो अलग अलग कमरों में रहते थे।

इस बीच राजकुमार ने अपने लिये कोई दूसरी राजकुमारियॉ देखनी शुरू कर दी थीं। एक दिन जब वह अपनी किसी राजकुमारी दोस्त के साथ नाश्ता कर रहा था तो उसकी पत्नी ने एक नौकर को बुलाया — "यहॉ आओ। क्या राजकुमार अभी भी मेज पर हैं।"

"जी योर हाइनैस।"

"अच्छा रुको।" उसने तुरन्त ही अपने दोनों हाथ काटे और उनको ओवन में रखे तो उसमें से **10** सौसेजैज़ निकल

आये। उसने उन्हें नौकर को देते हुए कहा — "लो इन्हें राजकुमार के पास ले जाओ।"

वह उनको राजकुमार को देते हुए बोला — "राजकुमारी जी ने ये आपके लिये भेजे हैं।"

राजकुमार ने पूछा — "ये कैसे बनाये गये।"

नौकर बोला — "राजकुमार। राजकुमारी जी ने अपने दोनों हाथ काटे और उनको ओवन में रख दिया। मैं तो देख कर दंग रह गया।"

राजकुमार बोला — "ठीक है ठीक है। चलो इन्हें खाते हैं।"

उसकी दोस्त ने कहा — "यह तो मैं भी कर सकती हूँ।"

सो उसने अपने हाथ काट दिये और उनको ओवन में रख दिया। उसके हाथ तो जल गये और वह मर गयी।

राजकुमार बोला — "ओह यह तुमने मेरे लिये क्या किया। मेरे लिये अपने आपको मार दिया।"

कुछ समय बाद उसने किसी और से दोस्ती की तो वह जब उसके साथ पहली बार मेज पर बैठा राजकुमारी ने एक और नौकर को बुलाया — "तुम कहाँ जा रहे हो।"

"मैजेस्टी मैं राजकुमार की मेज के पास जा रहा हूँ।"

"रुको।"

उसने अपनी दोनों बॉहें काटीं उन्हें ओवन में रखा तो उसमें से एक भुनी हुई और दूसरी पुडिंग निकल आयी। "जाओ इनको ले जा कर राजकुमार की मेज पर रख दो।"

नौकर वहॉ गया और बोला — "राजकुमार..."

कि राजकुमार बीच में ही टोक कर बोला — "मुझे तुम्हारी बेकार की बातें नहीं सुननी।"

"पर आप मेरी बात तो सुनें।"

"ठीक है कहो।"

सो नौकर ने राजकुमार को बताया कि किस तरह राजकुमारी ने अपनी दोनों बॉहें काट कर ओवन में डाल दीं और उसमें से यह भुनी हुई और यह पुडिंग निकल आयी। राजकुमार की दूसरी साथिन ने भी ऐसा ही करने की कोशिश की पर वह मर गयी।

कुछ समय बाद राजकुमार ने एक तीसरी लड़की चुनी तो उसकी भी मौत ऐसे ही हो गयी। इस बार उसकी पत्नी ने अपनी दोनों टॉगें ओवन में रखीं तो उसमें से एक बहुत बड़ा भुना हुआ और दो सूअर के मॉस के टुकड़े निकल आये। उसकी इस तीसरी दोस्त ने यह करने की कोशिश की तो वह भी मर गयी।

इस पर राजकुमार ने सोचा — "इसने तो मेरी तीन दोस्तों को मार दिया। इससे तो मैं बहुत दुखी हो गया। अब मैं किसी से प्यार नहीं करूॅगा।

रात को जब राजकुमारी सोने गयी तो लैम्प ने कहा "मुझे प्यास लगी है।"

राजकुमारी बोली — "ओ तेल की कुप्पी। ज़रा लैम्प को तेल दे दो।"

तेल की कुप्पी बोली — "मैम इसने मुझे बहुत तकलीफ पहुँचायी है।"

राजकुमारी बोली — "तेल की कुप्पी। तुमने लैम्प को तकलीफ क्यों पहुँचायी। परी औरलैन्डा कितनी सुन्दर है। परी औरलैन्डा कितनी सुन्दर है। परी औरलैन्डा कितनी सुन्दर है।"

इस तरह से वह रात भर करती रही और उसने हर चीज़ पर जादू डाल दिया – लैम्प पर भी और तेल की कुप्पी पर भी।

जब राजकुमार ने यह सुना तो एक दिन उसने एक दासी से कहा कि वह राजकुमारी के सोने के कमरे में घुस जाये और उसके बिस्तर के नीचे छिप जाये और देखे कि रात को वह क्या करती है। दासी ने ऐसा ही किया। तो लैम्प और तेल की कुप्पी के साथ फिर से वैसा ही हुआ।

दासी ने आ कर राजकुमार को सब बताया तो राजकुमार ने सोचा कि "आज मैं खुद जा कर यह सब अपनी ऑखों से देखूँगा।"

उस रात वह खुद अपनी पत्नी के बिस्तर के नीचे जा कर छिप गया। उस रात भी वही हुआ।

लैम्प बोला — "मैम मुझे पीने को चाहिये।"

राजकुमारी बोली — "ओ तेल की कुप्पी। ज़रा लैम्प को तेल दे दो।"

तेल की कुप्पी बोली — "मैम इसने मुझे बहुत तकलीफ पहुँचायी है।"

राजकुमारी बोली — "तेल की कुप्पी। तुमने लैम्प को तकलीफ क्यों पहुँचायी। परी औरलैन्डा कितनी सुन्दर है। परी औरलैन्डा कितनी सुन्दर है। परी औरलैन्डा कितनी सुन्दर है।"

वह सारी रात यही कहती रही "परी औरलैन्डा कितनी सुन्दर है।"

राजकुमार बोला — "भगवान परी औरलैन्डा को खुश रखे।"

राजकुमारी बोली — "क्या? इस एक शब्द को कहने में इसे इतनी देर लगी?"

यह सुन कर राजकुमारी ने राजकुमार को चूमा और गले लगा लिया और फिर वे सारी ज़िन्दगी खुश रहे।

अब हम एक दूसरी तरह की लोक कथाओं की तरफ चलते हैं जिनमें हीरो को कोई जादू की चीज़ मिल जाती है और फिर वह उसको खो भी देता है। फिर अलग अलग तरीकों से वह उसको पा भी लेता है। ऐसी कहानियों के तीन रूप हैं।

पहली तरह की लोक कथाओं में हीरो ऐसी चीज़ को किसी चालाक स्त्री की वजह से खोता है पर उसे दो तरह के फलों की सहायता से वापस पा लेता है। जिनमें से एक फल शारीरिक नुकसान पहुँचाता है और दूसरा फल उसे ठीक कर देता है।

दूसरी तरह की लोक कथाओं में फल नहीं हैं बल्कि मालिक अपनी चीज़ को या तो खेल में धोखाधड़ी कर के या फिर लड़की को अपने प्यार में फँसा कर पा लेता है।

इसके तीसरे रूप में आदमी जो अक्सर कोई जमींदार होता है जो दो बार असली जादुई चीज़ों को नकली चीज़ों में बदल देता है और सामान्यतया ये चीज़ें किसी तीसरी जादुई चीज़ सामान्यतया किसी डंडी की सहायता से वापस ली जाती हैं। यह डंडी उस आदमी को मार कर उसे वह चीज़ वापस करने के लिये मजबूर की जाती हैं।

इस तरह की लोक कथाओं में से पहली तरह की लोक कथा आगे दी जाती है – "गड़रिया जिसने राजा की बेटी को हँसाया"।

31 गड़रिया जिसने राजा की बेटी को हॅसाया[18]

एक बार की बात है कि एक राजा और रानी थे जिनके एक ही बेटी थी। वे दोनों उसे बहुत प्यार करते थे। जब वह **15** साल की हुई तो वह अचानक बहुत दुखी हो गयी और उसका हॅसना ही बन्द हो गया।

राजा ने सारे राज्य में मुनादी पिटवा दी कि जो कोई उसकी बेटी को हॅसायेगा, चाहे वह कोई राजकुमार हो या कोई किसान हो या फिर कोई भिखारी ही क्यों न हो वही उसका पति होगा। बहुत सारे लोगों ने उसको हॅसाने की कोशिश की पर कोई उसको हॅसा न सका।

उस राज्य में एक गरीब स्त्री भी रहती थी जिसके एक बेटा था जो बहुत ही आलसी था। वह कोई काम करता तो था ही नहीं पर वह कुछ सीखना भी नहीं चाहता था।

एक दिन वह मैदान में भेड़ें चरा रहा था तो वह एक कुॅए के पास आया और पानी पीने के लिये उसके ऊपर झुका तो उसने उसकी घिर्री[19] पर एक बहुत सुन्दर अॅगूठी देखी। उसको वह

[18] The Shepherd Who Made the King's Daughter Laugh. Tale No 31. By Laura Gonzenbach. (Tale No 31)

[19] Translated for the word "Pulley Wheel" – see its picture above – a child is drawing water from a well through the pulley.

बहुत अच्छी लगी तो उसने वह अपनी दॉये हाथ की अॅगूठी वाली उॅगली में पहन ली।

जैसे ही उसने उसे पहना तो तो वह तो बहुत ज़ोर ज़ोर से छींकने लगा। उसकी तो छींकें ही न रुकें। कि अचानक उसकी उॅगली से वह अॅगूठी निकल गयी और उसकी छींकें भी बन्द हो गयी। उसकी छींकें जैसे अचानक शुरू हुई थीं वैसे ही अचानक बन्द भी हो गयीं।

उसने सोचा कि "अगर ये छीकें अॅगूठी की वजह से आयी और गयी हैं तब तो मैं इससे अपनी किस्मत बना सकता हूॅ। मैं कोशिश करता हूॅ शायद मैं इससे राजकुमारी जी को हॅसा सकूॅ।"

उसने वह अॅगूठी अपने बॉये हाथ में पहन ली पर उसने देखा कि उस हाथ में पहनने से उसको छींकें नहीं आयीं।

वह अपनी भेड़ें घर की तरफ ले चला। उसने अपने मालिक से छुट्टी ली और शहर की तरफ चल दिया जहॉ राजकुमारी रहती थी। वहॉ पहुॅचने के लिये उसे एक घना जंगल पार करना पड़ता था। वह जंगल इतना बड़ा था कि जब तक उसने उसे पार किया तब तक अॅधेरा होने को आने लगा था।

उसने सोचा "अगर डाकू लोग मेरी अॅगूठी देख लेंगे तो वे इसे मुझसे छीन लेंगे और फिर तो मैं बर्बाद हो जाऊॅगा। तो मैं एक पेड़ पर चढ़ जाता हूॅ और वहीं अपनी रात गुजारता हूॅ।"

सो वह एक पेड़ पर चढ़ गया और बहुत जल्दी ही सो भी गया। उसको सोये हुए बहुत देर नहीं हुई थी कि वहॉ **13** डाकू आये और इतनी ज़ोर ज़ोर से बातें करने लगे कि उस गड़रिये की ऑख खुल गयी।

डाकुओं का सरदार बोला — "सब लोग अपना अपना हाल बताओ कि आज हर एक ने क्या क्या किया।"

सो हर एक ने सरदार को दिखाया कि उसने क्या क्या लूटा था। तेरहवें डाकू ने सरदार को एक मेजपोश एक बटुआ और एक सीटी दिखायी और कहा — "मैंने आज ये तीन बहुत बड़े खजाने लूटे हैं। इनमें हर एक के अपने अपने गुण हैं।

अगर कोई यह मेजपोश बिछा कर यह कहे कि "ओ मेरे छोटे मेजपोश मुझे मैकैरोनी या भुना हुआ मॉस दो तो उसको ये सब चीज़ें तुरन्त ही मिल जायेंगी।

इसी तरह से यह बटुआ मॉगने पर जितना चाहो उतना पैसा देगा। और जो इस सीटी की आवाज सुनेगा बह तुरन्त ही नाचने लग जायेगा चाहे उसकी मर्जी हो या न हो।"

डाकुओं ने तुरन्त ही उस मेजपोश की ताकत को जॉचा और फिर सोने चले गये। सरदार ने ये कीमती चीज़ें अपने पास ही रख लीं। जब वे सब खर्राटे मार रहे थे तो गड़रिया पेड़ से नीचे उतरा वे तीनों चीज़ें उठायीं और वहॉ से भाग लिया।

अगले दिन वह शहर पहुँचा और राजा से मिलने की इजाज़त माँगी। उसने कहा कि "मैं राजा से मिलना चाहता हूँ। मैं कोशिश करूँगा कि उनकी बेटी हँस जाये।"

नौकरों ने उसको मिलने से काफी रोकना चाहा पर वह अपनी ज़िद पर अड़ा रहा सो नौकरों को उसे राजा से मिलाने के लिये अन्दर ले जाना ही पड़ा। वे उसको एक बड़े कमरे में ले गये जिसमें राजा की बेटी एक शानदार सिंहासन पर बैठी हुई थी और उसके चारों तरफ दरबारी लोग बैठे हुए थे।

गड़रिये ने राजा से पूछा — "अगर मैं राजकुमारी को हँसाने की कोशिश करूँगा तो उससे पहले तो आप मेरे ऊपर एक मेहरबानी करें कि आप मुझे इस अंगूठी को अपने दाँये हाथ की उँगली में पहनाने की इजाज़त दें।"

राजा ने जैसे ही उसकी अँगूठी अपने दाँये हाथ में पहनी कि उसने छींकना शुरू कर दिया। वह अपनी छींकें नहीं रोक सका और छींकता हुआ कमरे में इधर उधर घूमने लगा। यह देख कर सारा दरबार हँसने लगा।

राजा की बेटी भी इसको देख कर अपने को न रोक सकी और अपने सिंहासन से उतर कर हँसते हँसते इधर उधर भागने लगी।

फिर वह हाथ जोड़ कर राजा से बोला — "हुजूर। मैंने राजकुमारी को हँसा दिया अब आपका बोला हुआ इनाम मेरा है।"

"क्या तुम ओ नीच गड़रिये। तुमने न केवल सारे दरबार में मुझे हॅसी का पात्र बनाया है बल्कि अब तुम्हें मेरी बेटी से शादी भी करनी है? जल्दी करो। इससे इसकी ऑगूठी ले लो और इसे जेल में डाल दो।"

ऐसा ही किया गया। गड़रिये को जेल में डाल दिया गया। वहॉ जादुई मेजपोश उसको और उसके साथियों सबको बहुत बढ़िया बढ़िया खाने देता रहा। जब राजा को इसका पता चला तो उसके हुक्म से उससे वह भी ले लिया गया।

अब बटुआ उन सबको आराम की और बहुत सारी चीज़ें दे रहा था। पता चलने पर उसको भी उससे छीन लिया गया और अब उसके पास बस उसकी एक सीटी रह गयी।

गड़रिये ने सोचा "अब अगर हम खा नहीं सकते पैसा खर्च नहीं कर सकते तो हम लोग कम से कम नाच तो सकते हैं। बस यही सोच कर उसने अपनी सीटी निकाली और बजानी शुरू कर दी। अब क्या था सारे कैदियों ने और पहरेदारों ने वहॉ पर नाचना शुरू कर दिया। और इस बीच उन सबने बहुत शोर और ऊधम मचाया।

जब राजा ने यह सुना तो वह भी अपने महल से यह तमाशा देखने के लिये वहॉ दौड़ा आया। जब वह वहॉ आया तो उसने भी नाचना शुरू कर दिया। किसी तरह नाचते नाचते उसने गड़रिये से उसकी सीटी लेने का हुक्म दिया। जैसे ही उससे सीटी ले ली गयी तब सब तरफ शान्त हो गया।

अब गड़रिये के पास कुछ भी नहीं था। वह जेल में ऐसे ही कुछ समय तक रहता रहा कि एक दिन उसको कहीं से पुरानी रेती मिल गयी जिससे जेल की सलाखें काट कर वह वहॉ से भाग गया।

वह सारा दिन घूमता रहा और फिर आखिर उसी जंगल में आ पहुॅचा जिसमें वह पहले था। तभी उसने वहॉ एक अंजीर का पेड़ देखा जिस पर बहुत सारी अंजीरें लगी हुई थीं – एक तरफ काली अंजीरें थीं और दूसरी तरफ सफेद अंजीरें।

उनको देख कर उसको लगा कि वैसे फल तो उसने पहले कभी देखे ही नहीं थे। एक ऐसा पेड़ जिस पर काली और सफेद अंजीरें एक साथ लगी हों। मैं उन्हें खा कर देखता हूॅ।

उसने काली अंजीर मुश्किल से चखी होगी कि उसने देखा कि उसके ऊपर दो सींग उग आये हैं। "ओह मैं बदकिस्मत। अब मैं क्या करूॅ।"

अब क्योंकि उसे बहुत भूख लगी थी तो उसने कुछ सफेद अंजीरें तोड़ीं और खा गया। लो उनको खाते ही उसका एक सींग गायब हो गया। उसने कुछ और सफेद अंजीरें खायीं तो उसका दूसरा सींग भी गायब हो गया।

यह देख कर वह खुशी से चिल्ला पड़ा "ओह मेरी तो तकदीर बन गयी। अब तो राजा को मेरी सारी चीज़ें वापस देनी पड़ेंगी। और साथ में राजकुमारी भी सौदे में।"

गड़रिये अपना वेश बदला और दो टोकरी अंजीर ले कर शहर गया – एक टोकरी काली वाली और दूसरी सफेद वाली। काली वाली अंजीर उसने राजा के रसोइये को बेच दीं जो उसे बाजार में ही मिल गया था।

राजा के खाना खाते समय उसने वे काली अंजीरें मेज पर रखीं तो राजा उनको देख कर बहुत खुश हुआ। उसने उनमें से कुछ अंजीरें अपनी पत्नी को दीं कुछ अपनी बेटी को दीं। बाकी बची अंजीरें वह खुद खा गया।

अभी उन्होंने अंजीरें खाना खत्म किया ही था कि उन्होंने आश्चर्य से एक दूसरे की तरफ देखा। सबके सिर पर सींग उग आये थे। राजा की रानी और बेटी तो रोने लगीं। राजा ने गुस्सा हो कर अपने रसोइये को बुलाया और उससे पूछा कि उसे ये अंजीरें किसने बेची थीं।

रसोइया बोला — "सरकार एक किसान था।"

"उसे यहॉ ले कर आओ।"

गड़रिया तो महल के पास ही खड़ा था। जैसे ही रसोइया महल से बाहर निकला उसने गड़रिया को वहॉ सफेद अंजीरें लिये हुए खड़ा देखा तो उस पर चिल्लाया — "आज सुबह तुमने मुझे कैसी

खराब अंजीरें बेची थीं। जैसे ही राजा रानी और राजकुमारी जी ने उन्हें खाया तो उनके सिर पर तो सींग उग आये।"

गड़रिया बोला — "चुप रहो। मेरे पास उसका इलाज है। इसे खाते ही उनके सिर से सब सींग चले जायेंगे। तुम मुझे बस राजा के पास ले चलो।"

रसोइया उसको राजा के पास ले गया। गड़रिया बोला — "शान्त हो जाइये। अब आप मेरी ये अंजीरें खाइये।" कहते हुए उसने एक सफेद अंजीर राजा के सामने आगे बढ़ा दी। जैसे ही उसने वह सफेद अंजीर खायी तो उसके सिर से सींग गायब हो गया। यह देख कर राजा बहुत खुश हुआ।

गड़रिया फिर बोला — "इससे पहले कि मैं आपको ये अंजीरें और दूँ पहले आप मेरी सीटी वापस कर दीजिये और अगर नहीं तो आप अपने सींग अपने पास ही रख सकते हैं।"

राजा तो सींगों से बहुत ही डर गया था। उसने तुरन्त ही उसकी सीटी उसको वापस कर दी। गड़रिये ने तब रानी को एक अंजीर दी जिसे खा कर उसका एक सींग चला गया।

जब रानी का एक सींग चला गया गड़रिया बोला — "अब आप मेरा बटुआ वापस कर दीजिये नहीं तो मैं अपनी ये अंजीरें वापस ले जाऊँगा।" राजा ने उसको उसका बटुआ भी वापस दे दिया। और गड़रिये ने तब राजकुमारी का एक सींग गायब कर दिया।

अब उसने अपना मेजपोश माँगा। राजा ने उसको उसका मेजपोश भी दे दिया। सो उसने राजा को एक अंजीर और दे दी और इस तरह से राजा का दूसरा सींग भी हटा दिया।

अब गड़रिये ने राजा से अपनी अँगूठी माँगी। राजा ने उसको उसकी अँगूठी देनी पड़ी। तब उसने रानी का दूसरा सींग हटाया।

अब रह गयी केवल राजकुमारी। गड़रिया बोला — "अब आप अपना वायदा पूरा करें और राजकुमारी की शादी मेरे साथ कर दें नहीं तो ये अपना सींग जब तक अपने पास रख सकती हैं जब तक ये ज़िन्दा रहेंगी।"

सो राजकुमारी को उससे शादी करनी पड़ी। शादी के बाद उसने उसे दूसरी अंजीर खाने के लिये दी जिससे उसका दूसरा सींग भी चला गया।

उनकी शादी बड़ी धूमधाम से हुई और जब राजा मर गया तो उसका राज्य गड़रिये को मिल गया। दोनों ने बहुत दिनों तक राज किया वे बहुत खुश रहे और हम तो जड़ों का एक गट्ठर ही बन कर पड़े रहे।

इसी कहानी का एक दूसरा रूप भी है जिसके तीन उदाहरण दिये जा सकते हैं पर उनमें से एक भी यहॉ विस्तार में वर्णन करने के लायक नहीं है पर हम उसको संक्षेप में दे रहे हैं।

इन कथाओं के पहले उदाहरण में एक राजकुमारी हीरो से तीन जादुई चीज़ें, यानी एक बटुआ जो कभी खाली नहीं होता, एक शाल जो आदमी को अदृश्य कर देता है और एक सींग जिसके बजाने से सेना इकट्ठी हो जाती है जीत जाती है तो हीरो जब वह राजकुमारी बीमार होती है एक पादरी बन कर महल में जाता है और राजकुमारी उसके सामने स्वीकार करती है कि हॉ वे तीनों चीज़ें उसी ने चुरायी हैं। पादरी उससे उसी समय वे तीनों चीज़ें वापस ले लता है।

इसी कथा का दूसरे उदाहरण में जो फ्लोरैन्स में कहा सुना जाता है उस रूप में एक गड़रिये का बेटा अपने को पुर्तगाल के राजा का बेटा बताता है और राजकुमारी के साथ खेल खेलता है और जीत जाता है। पर फिर उसका असली रूप सामने आता है तो उसको जेल में डाल दिया जाता है।

वहॉ वह अपना जादुई मेजपोश जिसे वह राजा को राजकुमारी के कमरे में एक रात के सोने के बदले में दे देता है। एक जादुई बक्सा जो हमेशा पैसे से भरा रहता है और एक बाजा जो जिसके बजने पर सब नाचने लगते हैं राजा को उसी शर्त पर यानी राजकुमारी के कमरे में एक रात के सोने के बदले में दे देता है। बाद में गड़रिया राजकुमारी से शादी कर लेता है और जब राजा मर जाता है तो वही राजा का राज्य भी ले लेता है।

इन कथाओं का तीसरा उदाहरण सिसिली का दिया जा सकता है।[20] इस कथा में परियॉ पीटर को एक बटुआ, एक मेजपोश और एक वायलिन देती हैं। वह स्पेन के राजा की बेटी के साथ शतरंज[21] खेलने जाता है क्योंकि उसका कहना है कि वह उसी से शादी करेगी जो उसको शतरंज में हरायेगा। राजकुमारी उसको धोखा दे कर वह बाज़ी जीत जाती है और साथ में उसका बटुआ भी। पीटर को जेल में डाल दिया जाता है।

जेल में वह अपना मेजपोश इस्तेमाल करता है। राजकुमारी उसके बारे में जान जाती है तो उससे फिर से शतरंज खेलती है। जब पीटर दूसरी तरफ देख रहा होता है वह उससे फिर से धोखा करती है सो उसको अपना मेजपोश राजकुमारी को देना पड़ता है। पीटर को फिर से जेल में डाल दिया जाता है।

---

[20] Giuseppe Pitre. (Tale No 26).

[21] Translated for the word “Chess” – Chess is an indoor game. See its picture above.

अगली बार वह अपने जादुई वायलिन के लिये राजकुमारी के साथ शतरंज खेलता है। इस बार जेल के साथी उसको राजकुमारी के खेलने की चाल बता देते हैं। सो इस बार वह ठीक से देखभाल कर खेलता है और जीत जाता है। उनकी शादी हो जाती है। बाद में पीटर जेल में बन्द सारे हराये हुए लोगों को आजाद कर देता है। बाद में अपनी वायलिन से उन सबको भगा देता है।

इस कथा का यह तीसरा रूप बहुत ज़्यादा लोकप्रिय है जो हम यहॉ दे रहे है। इसको हमने नैरूकी की मौन्टैलीज़ टेल्स से लिया है।[22]

[22] Nerucci. Montanese Tales. (Tale No 43).

32 गधा जो पैसे देता है[23]

एक बार की बात है कि एक गरीब विधवा थी। उसके केवल एक ही बेटा था। उसका देवर किसी जगह नौकरी करता था। एक दिन उसने अपने बच्चे से कहा — "जाओ अपने चाचा के पास जाना और उनसे कुछ खाने के लिये मॉग लाओ।"

बच्चा खेत पर गया और अपने चाचा से थोड़ी सी सहायता करने के लिये कहा। उसने कहा — "चाचा। हम लोग भूख से मर रहे हैं। मेरी मॉ बुन कर बहुत थोड़ा सा कमाती है और मैं कुछ कमाने के लिये अभी बहुत छोटा हूॅ। हमारी कुछ सहायता कीजिये क्योंकि हम आपके सम्बन्धी हैं।"

चाचा ने कहा — "हॉ हॉ क्यों नहीं। तुमको तो बहुत पहले आ जाना चाहिये था तो मैं तुम्हारी सहायता और पहले कर सकता था। पर कोई बात नहीं। आज मैं तुमको एक ऐसी चीज़ देता हूॅ जो तुम्हें हमेशा ही सहायता करती रहेगी। इसके बाद फिर तुमको किसी और चीज़ की आवश्यकता ही नहीं होगी।

यह लो यह एक गधा है जो पैसे देता है। तुमको बस इसके नीचे केवल एक कपड़ा बिछाने की आवश्यकता है और यह गधा उसे चमकते हुए सिक्कों से भर देगा। पर ध्यान रखना कि इसके

[23] The Ass That Lays Money. Tale No 32. By Nerucci. "Montanese Tales". (Tale No 43).

बारे में तुम किसी को बताना नहीं और किसी और के पास इसे छोड़ना नहीं।"

लड़का खुश खुश चला गया। जब वह काफी दूर चला गया तो वह सोने के लिये एक सराय में रुका क्योंकि उसका घर बहुत दूर था। उसने सराय के मालिक से कहा कि उसको रहने की जगह चाहिये और रात को भी उसका गधा उसके पास ही रहेगा।

सराय का मालिक बोला — "यह तुम क्या कह रहे हो। यह नहीं हो सकता।"

लड़का बोला — "ऐसा क्यों नहीं हो सकता। यह मेरा गधा है मैं इसे नहीं छोड़ सकता।"

दोनों कुछ देर तक आपस में बहस करते रहे फिर सराय के मालिक ने उसे गधे को रात को रखने की इजाज़त दे दी। उसने इजाज़त तो दे दी पर उसको कुछ शक हो गया।

सो जब वे दोनों कमरे में बन्द हो गये तो उसने कमरे की चाभी के छेद से अन्दर देखा तो देखा वह आश्चर्यजनक दृश्य सोना देने का। सराय का मालिक चिल्लाया — "ओह मेरे भगवान। मुझे तो बेवकूफ ही होना चाहिये अगर मैं ये सोने के टुकड़े अपने हाथ से जाने दूँ तो।"

उसने तुरन्त ही वैसा ही उसी रंग का उसी साइज़ का एक दूसरा गधा ढूँढा और जब लड़का सो गया तो उसे लड़के के गधे की जगह रख कर लड़के का गधा ले लिया।

सुबह को लड़के ने अपने पैसे दिये और अपना गधा ले कर चल दिया। पर रास्ते में उसने गधे से पैसा माँगने की कोशिश की पर उस गधे ने तो उसे पैसे ही नहीं दिये। बेवकूफ बच्चे की समझ में ही नहीं आया कि वह क्या सोचे और क्या करे।

पर बाद मे सोचने पर उसकी समझ में आ गया कि यह गधा उसका नहीं था। इस धोखे की शिकायत करने के लिये वह तुरन्त ही सराय की तरफ वापस चल दिया।

उसकी शिकायत सुन कर सराय वाला चिल्लाया — "तुम्हारे ऐसा कहने पर मुझे आश्चर्य होता है। हम सब यहाँ पर ईमानदार लोग हैं और किसी की कोई चीज़ नहीं चुराते। ओ खरदिमाग तुम चले जाओ यहाँ से वरना तुम्हें कुछ ऐसा दिया जायेगा जिसे तुम कुछ दिनों तक याद रखोगे।"

बच्चा यह सुन कर रो पड़ा और उसे अपने गधे के साथ अपने चाचा के खेत पर लौटना पड़ा। आ कर उसने बताया कि उसके साथ क्या हुआ था।

चाचा बोला — "अगर तुम उस सराय में न रुकते तो तुम्हारे ऊपर यह मुसीबत नहीं आती। खैर कोई बात नहीं। मैं तुम और तुम्हारी माँ की सहायता के लिये तुम्हें एक दूसरी भेंट देता हूँ। पर इसका भी ध्यान रखना। इसके बारे में किसी से कुछ कहना नहीं और इसको सँभाल कर रखना।

लो यह लो एक मेजपोश। जब भी तुम्हें कुछ चाहिये तब इसे अपने सामने फैलाना और कहना "मेजपोश तैयार करो।" तो जो चीज़ तुम्हें चाहिये तुम्हें वही मिल जायेगी।"

बच्चे ने खुशी खुशी वह मेजपोश लिया और वहॉ से चल दिया। पर जैसा कि वह बेवकूफ था वह उसी सराय में फिर से रुका। उसने सराय के मालिक से कहा — "मुझे ठहरने के लिये जगह दो पर मेरे लिये खाना बनाने की कोई जरूरत नहीं है। जो मुझे चाहिये वह मेरे पास सब कुछ है।"

अब सराय का मालिक तो चालाक था। उसको फिर से शक हो गया कि यह लड़का उससे कुछ छिपा रहा है। उसने कमरे के उसी चाभी वाले छेद से अन्दर देखा तो उसने मेजपोश को खाना बनाते देखा।

मालिक ने सोचा यह तो मेरी सराय के लिये बहुत अच्छा रहेगा। मैं इसे अपने हाथ से नहीं जाने दूँगा। उसने तुरन्त ही वैसे ही एक मेजपोश का इन्तजाम किया जिसकी वैसी ही कढ़ाई थी और उसमें वैसी झालर लगी हुई थी और बच्चे वाले मेजपोश से उसे बदल दिया।

सो सुबह को जब लड़का उठा तो उसे किसी तरह की कोई धोखाधड़ी नजर नहीं आयी जब तक कि वह एक जंगल तक नहीं पहुँच गया। यहॉ उसे भूख लगी थी सो उसने अपना मेजपोश

बिछाया और बोला "मेजपोश तैयार करो।" पर यह क्या मेजपोश ने तो उसको कोई खाना नहीं दिया।

वह मेजपोश तो वही जादुई मेजपोश नहीं था। उसने उसे कोई खाना नहीं दिया। निराश हो कर लड़का फिर से इस बात की शिकायत ले कर सराय के मालिक के पास पहुँचा। पर इस बार तो अगर वह वहाँ से भाग नहीं गया होता तो सराय के मालिक ने उसकी बहुत पिटायी की होती।

वहाँ से भागा भागा वह फिर अपने चाचा के पास पहुँचा। चाचा ने जब उसे इस तरह भागते आते देखा तो पूछा "क्या हुआ बेटे।"

लड़का बोला — "चाचा। उस सराय के मालिक ने इस बार मेरा मेजपोश भी चुरा लिया।"

चाचा भी अबकी बार उसकी अच्छी पिटायी करने वाला था कि यह सोच कर रुक गया कि वह अभी बच्चा ही तो था।

वह बोला — "ठीक है मैं समझता हूँ। अबकी बार मैं तुम्हें एक ऐसी चीज़ दूँगा जिससे तुम उस चोर सराय के मालिक से अपनी हर चीज़ वापस पा लोगे।

यह लो यह एक डंडी है। इसको अपनी पेटी में छिपा लो। अगर कोई तुमसे तुम्हारा कोई सामान छीनने आये तो तुम इसे बहुत ही धीमी आवाज में कहना "पीटो पीटो।" तो यह उसे तब तक पीटती रहेगी जब तक तुम इसे रुकने के लिये नहीं कहोगे।"

अब ज़रा सोचो लड़के ने वह डंडी कितनी खुशी से ले ली होगी। यह एक बहुत सुन्दर पालिश की गयी डंडी थी। इसका हैन्डिल सोने का था और यह देखने में बहुत सुन्दर लगती थी।

लड़के ने अपने चाचा को उसकी मेहरबानी के लिये धन्यवाद दिया और घर की तरफ चल पड़ा। वह फिर उसी सराय में आया और बोला — "मालिक मैं आज की रात यहीं ठहरना चाहता हूँ।"

सराय के मालिक ने उसकी डंडी के बारे फैसला कर लिया था जिसे वह लड़का अपने हाथ में लिये हुए था। रात को जब लड़का सो गया तो वह उसके कमरे से उसे लेने गया। लड़का तो केवल सोने का बहाना कर रहा था वह तो अपनी डंडी का पहरा दे रहा था।

जैसे ही सराय के मालिक ने उसकी पेटी से वह डंडी निकालने की कोशिश की लड़के को पता चल गया तो वह बोला "पीटो पीटो"। बस फिर क्या था डंडी ने सराय के मालिक को ज़ोर ज़ोर से पीटना शुरू कर दिया। सब चीज़ें टूटने फूटने लगीं – ड्रौअर वाली आलमारी मुँह देखने वाले शीशे कुर्सियाँ खिड़कियों में लगे शीशे आदि आदि।

सराय का मालिक गला फाड़ कर चिल्लाया — "मुझे बचाओ ओ लड़के मैं मर रहा हूँ।"

लड़का बोला — "मैं तब तक इसे नहीं रोकूँगा जब तक तुम मेरी चीज़ें – मेरा गधा जो पैसे देता है और मेजपोश जो मेरा खाना बनाता है मुझे वापस नहीं करोगे।"

और अगर सराय का मालिक मरना नहीं चाहता था तो उसे लड़के की इच्छा पूरी करनी ही थी।

जब लड़के को अपनी चीज़ें मिल गयीं तो वह अपनी माँ के पास चला गया और जा कर उसे बताया कि उसके साथ क्या क्या हुआ था।

वह फिर बोला — "माँ अब हमें किसी चीज़ की जरूरत नहीं है। हमारे पास एक गधा है जो हमें पैसे देता रहेगा। हमारे पास एक मेजपोश है जो हमें बढ़िया बढ़िया खाने खिलाता रहेगा। हमारे पास एक डंडी है जो जब भी मुझे कोई परेशान करेगा तो वह उसे पीटती रहेगी।

अब वह स्त्री और उसका बेटा अपनी इतनी गरीबी से इतने अमीर हो गये थे कि लोग उनसे जलने लगे थे। अब उन्होंने सोचा कि वह अब लोगों को एक दावत दें ताकि उस समय वे अपनी सम्पत्ति लोगों को दिखा सकें।

नियत किये दिन सब सम्बन्धी उस स्त्री के नये घर आये पर दिन के **12** बज गये। फिर एक बज गया। फिर दो बज गये। पर रसोईघर में तो आग भी नहीं जल रही थी और कहीं खाने का कोई सामान भी नहीं रखा हुआ था।

सम्बन्धियों ने आपस में बात की "क्या इन्होंने हमारा बेवकूफ बनाया है। लगता है कि हमको तो यहॉ से आज बिना खाना खाये ही जाना पड़ेगा।

पर जैसे ही घड़ी ने दो बजाये लड़के ने अपना मेजपोश बिछाया और उससे कहा "मेजपोश एक शानदार दावत का खाना तैयार करो।" और यह लो मेजपोश ने बहुत बढ़िया बढ़िया खाना निकाल कर रखना शुरू कर दिया।

लोगों ने उस दिन बहुत अच्छी दावत खायी। लड़के ने उन्हें पैसो की भेंटें भी दीं। लड़का और उसकी मॉ दोनों फिर बहुत आराम से रहे।

33 डौन जोसफ़ पेयर[24]

अगली कहानी जिस पर अब हम अपना ध्यान देने जा रहे हैं वह है "बूट पहने हुए बिल्ला"[25]। जिस रूप में यह कहानी बच्चों में लोकप्रिय है वह इसका फ्रांस का रूप है। चार्ल्स परौ ने इसे लोकप्रिय बनाया। परौ से पहले इसके दो साहित्यिक रूप मिलते हैं। इसका एक रूप स्ट्रापरोला का लिखा हुआ है और इसका दूसरा रूप जियामबतिस्ता बासिले की पुस्तक "पैन्टामिरोन" में मिलता है।[26] इनके अलावा भी इस कहानी के कई और रूप भी मिलते हैं जो बड़े अजीबो गरीब से हैं। जो रूप इस कहानी का हम यहाँ दे रहे है यह इटली के सिसिली द्वीप में प्रचलित है।

एक बार की बात है कि तीन भाई थे। उनके पास एक नाशपाती के पेड़ था उसी पेड़ से कमाई कर के वे रहते थे। एक दिन उन तीनों में से एक भाई कुछ नाशपातियाँ तोड़ने गया तो उसने देखा कि उस पेड़ की नाशपातियाँ तो पहले से ही तोड़ी जा चुकी हैं।

उसने अपने भाइयों से कहा — "भाइयो अब हम क्या करें क्योंकि हमारी नाशपातियाँ तो पहले ही किसी ने तोड़ ली हैं।" सो उस रात सबसे बड़ा भाई अपने नाशपाती के पेड़ की चौकीदारी करने गया।

---

[24] Don Joseph Pear. Tale No 33. By Giovanni Pitre. (Tale No 88)

[25] Puss in Boots.

[26] Its first version can be read in "Straparola's Facetious Nights". And its second older version can be read in "Pentamerone" by Giambattista Basile under the title "Pippo". Both tales are available in Hindi written by Sushma Gupta in her books "Pentamerone" and "Straparola Ki Raatein"

पर वह रात को सो गया। जब सुबह हुई तो दूसरा भाई वहॉ गया तो उसने बड़े भाई से पूछा "भैया तुमने क्या किया। क्या तुम कल सो गये थे। देखो न फिर किसी ने हमारी नाशपातियॉ तोड़ ली हैं। आज की रात मैं पहरा दूॅगा।" सो उस रात उसके छोटे भाई ने पहरा दिया।

अगली सुबह जब उनका सबसे छोटा भाई उधर आया तो उसने देखा कि उनके पेड़ की नाशपतियॉ फिर से तोड़ी जा चुकी हैं। उसने पूछा — "क्या तुम ठीक से पहरा दे रहे थे। तुम जाओ आज की रात में इस पेड़ की रखवाली करूॅगा। मुझे देखना यह है कि वे लोग मुझे भी धोखा दे सकते हैं या नहीं।"

सो उस रात सबसे छोटा भाई वहॉ पहरा देने के लिये रुक गया। वहॉ उसने पेड़ के नीचे रात को बजाना और नाचना शुरू कर दिया। जब वह नहीं बजा रहा था तो एक लोमड़ी ने देखा कि लगता है कि अब लड़का सोने चला गया सो वह वहॉ आयी पेड़ पर चढ़ी और बची हुई नाशपातियॉ तोड़ कर ले जाने लगी।

जब वह पेड़ से नीचे उतर कर जाने लगी तो लड़के ने उस पर अपनी बन्दूक का निशाना लगाया और उसे चलाने ही वाला था कि वह बोली — "मुझे मत मारो। मुझे मत मारो डौन जोसेफ़। क्योंकि मैं तुम्हें डौन जोसेफ़ पेयर के नाम से पुकारूॅगी और तुम्हारी शादी राजा की बेटी से करा दूॅगी।"

यह सुन कर डौन जोसेफ़ बोला — "पर अब मैं तुम्हें मिलूँगा कहाँ। और राजा तुम्हारा क्या लगता है जो वह अपनी बेटी की शादी मुझसे कर देगा। वह तो तुम्हें एक ठोकर मारेगा और तुम उसके सामने फिर कभी जाने की हिम्मत ही नहीं करोगी।"

फिर भी डौन जोसेफ़ ने दया कर के उसे जाने दिया। लोमड़ी वहाँ से एक जंगल की तरफ चली गयी। वहाँ से उसने कई तरह के शिकार पकड़े – गिलहरी बड़े खरगोश चिड़ियें और उनको राजा के दरबार में ले गयी।

अब वह तो देखने वाला दृश्य था। राजा तो उसको देखता ही रह गया। लोमड़ी बोली —"सर मैजेस्टी। मुझे डौन जोसेफ़ पेयर ने ये शिकार ले कर भेजा है। आप उनकी तरफ से ये शिकार स्वीकार करें।"

राजा बोला — "सुनो ओ छोटी लोमड़ी। मैंने कभी डौन जोसेफ़ पेयर का नाम नहीं सुना जो तुम मेरे सामने ले रही हो।"

लोमड़ी ने वे शिकार वहीं छोड़े और फिर डौन जोसेफ़ के पास भाग गयी। डौन के पास पहुँच कर वह बोली — "आराम से जोसेफ़ आराम से। मैंने तुम्हारा पहला शिकार राजा के पास पहुँचा दिया है और उसने उसे स्वीकार भी कर लिया है।"

एक हफ्ते बाद लोमड़ी फिर जंगल गयी। वहाँ उसने सबसे अच्छे जानवर पकड़े और उनको ले कर फिर राजा के पास पहुँच

गयी और बोली — "सर मैजेस्टी। डौन जोसेफ़ पेयर ने आपके लिये ये शिकार भेजे हैं।"

राजा बोला — "मेरी बच्ची। मुझे नहीं मालूम कि यह डौन जोसेफ़ पेयर कौन है। मुझे लगता है कि तुम्हें कहीं और भेजा जा रहा है। मैं बताऊँ तुम्हें। तुम इस डौन जोसेफ़ पेयर को यहाँ ले कर आओ ताकि मैं इन्हें जान जाऊँ कि ये कौन हैं।"

लोमड़ी को तो वे शिकार वहीं छोड़ कर जाने थे सो वह बोली — "सरकार मैं गलती पर नहीं हूँ। मुझे मेरे मालिक ने यहीं भेजा है और कहा है कि वह राजकुमारी से शादी करना चाहते हैं।"

इतना कह कर लोमड़ी डौन जोसेफ़ पेयर के पास लौट आयी और उससे बोली — "आराम से। सब ठीक चल रहा है। मैं राजा के पास एक बार और गयी तो फिर तो मामला तय ही समझो।"

डौन बोला — "मुझे विश्वास नहीं होता जब तक कि राजकुमारी मेरी पत्नी न बन जाये।"

इसके बाद लोमड़ी एक ओगरे[27] की पत्नी के पास गयी और उससे जा कर कहा — "क्या हम अपना सोना चाँदी बाँट लें।"

ओगरे की पत्नी बोली — "हाँ हाँ क्यों नहीं। तुम मापने वाला ले आओ तो हम यह काम भी पूरा कर लेंगे।"

[27] Ogre (Ogress – feminine) is a supernatural animal. He eats human beings too.

लोमड़ी राजा के पास गयी और उससे बजाय यह कहने के कि "ओगरे की पत्नी आपका माप उधार माँग रही है।" उसने कहा कि "डौन जोसेफ़ पेयर आपसे अपना सोना चाँदी नापने के लिये आपका माप कुछ देर के लिये उधार लेना चाहते हैं।"

राजा ने सोचा "क्या। इस डौन जोसेफ़ पेयर के पास इतना खजाना है जो इसको माप की जरूरत पड़ गयी। क्या वह मुझसे भी ज़्यादा अमीर है।"

उसने लोमड़ी को माप दे दिया।

जब वह अपनी बेटी के साथ अकेले में था तो उसने बातों बातों में उससे कहा — "ऐसा लगता है कि यह डौन जोसेफ़ पेयर तो बहुत अमीर है क्योंकि वह तो अपना सोना चाँदी माप इस्तेमाल कर के रख रहा है।"

उधर लोमड़ी माप ले कर ओगरे की पत्नी के पास गयी और उसने सोने और चाँदी के नाप नाप कर अलग अलग ढेर लगाने शुरू कर दिये। जब उसने यह खत्म कर लिया तब लोमड़ी डौन जोसेफ़ के पास गयी और उसने उसे नये कपड़े पहनाये।

उसने उसे एक हीरे जड़ी घड़ी पहनायी। कई अँगूठियाँ पहनायीं जिनमें से एक उसकी होने वाली दुलहिन के लिये भी थी। और उसको उसी तरह से तैयार किया जैसे उसकी शादी हो रही हो।

अब लोमड़ी ने उससे कहा — "देखो डौन जोसेफ़। मैं तुमसे पहले जाती हूँ। बाद में तुम राजा के पास आना और अपनी दुलहिन को ले कर चर्च जाना।"

डौन राजा के पास पहुँचा उसने अपनी दुलहिन को लिया और चर्च चला गया। जब उनकी शादी हो गयी तो राजकुमारी तो गाड़ी में बैठ गयी और दुलहा घोड़े पर सवार हो गया।

लोमड़ी ने डौन जोसेफ़ से इशारों से बताया कि वह उसके आगे आगे जा रही है और वह उसके पीछे पीछे आये और गाड़ी और घोड़े उसके भी पीछे आयें।

वे लोग इसी तरह से चल दिये। लोमड़ी एक भेड़ों के रहने की जगह आयी तो वहाँ एक लड़का भेड़ें चरा रहा था। जैसे ही लड़के ने लोमड़ी को देखा तो उस पर एक पत्थर मारा तो लोमड़ी रोने लगी। रोते रोते वह बोली — "मैं तुझे मरवा दूँगी। क्या तुझे वे घुड़सवार आते दिखायी दे रहे हैं। अब मैं तुझे उनसे मरवा दूँगी।"

लड़का डर गया डर के मारे बोला — "अगर तुम मेरे साथ ऐसा कुछ न करो तो मैं फिर तुम्हें पत्थर नहीं मारूँगा।"

लोमड़ी बोली — "अगर तू चाहता है कि मैं तुझे न मरवाऊँ तो जब राजा इधर से गुजरे और पूछे कि ये भेड़ें किसकी हैं तो तू कहना कि ये भेड़ें डौन जोसेफ़ पेयर की हैं। क्योंकि डौन जोसेफ पेयर उनके दामाद हैं और वह तुझे बहुत इनाम देंगे।"

जब वे सब लोग उधर से गुजरे तो राजा ने पूछा "ये भेड़ें किसकी हैं?"

लड़के ने जैसा लोमड़ी ने उससे कहने के लिये कहा था कह दिया "ये सारी भेड़ें डौन जोसेफ़ पेयर की हैं।"

राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ उसने उसको कुछ पैसे दिये। सब और आगे चले। लोमड़ी डौन जोसेफ़ पेयर से 10 कदम आगे चल रही थी। डौन जोसेफ़ पेयर ने लोमड़ी से फुसफुसा कर पूछा — "तुम मुझे कहॉ ले जा रही हो। ऐसा कौन सा देश है जहॉ जा कर मुझे लगेगा कि मैं बहुत अमीर हूॅ। हम कहॉ जा रहे हैं।"

लोमड़ी बोली — "आराम से डौन जोसेफ़ पेयर। यह सब तुम मुझ पर छोड़ दो।"

वे लोग चलते चलते रहे। आगे चल कर लोमड़ी ने जानवरों का एक और झुंड देखा जिसे एक गड़रिया चरा रहा था। उसने भी जैसे ही लोमड़ी को देखा तो उस पर पत्थर मारे तो लोमड़ी ने उसको भी वही धमकी दी और वही बोलने के लिये कहा जो उसने पहली जगह बोलने के लिये कहा था।

राजा उधर से गुजरा तो उसने पूछा — "ओ गड़रिये ये किसके जानवर हैं।"

"जी ये डौन जोसेफ़ पेयर के जानवर हैं।" राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ कि उसके दामाद के पास इतनी सम्पत्ति है उसने उसको एक सोने का सिक्का दिया।

डौन जोसेफ़ पेयर यह देख कर एक तरफ तो बहुत खुश था पर दूसरी तरफ बहुत परेशान था। वह नहीं जानता था कि इस सबका अन्त क्या होगा।

लोमड़ी ने एक बार पीछे मुड़ कर देखा तो डौन जोसेफ़ पेयर बोला — "ओ लोमड़ी तुम मुझे कहॉ ले जा रही हो। तुम तो मुझे बर्बाद कर दोगी।"

लोमड़ी चलती रही जैसे उसे इस बात से कोई मतलब ही नहीं था। तब वे एक ऐसी जगह आये जहॉ बहुत सारे घोड़े और घोड़ियॉ चर रहे थे। वह लड़का जो उन्हें चरा रहा था उसने लोमड़ी के ऊपर एक पत्थर फेंका।

उसने लड़के को डरा धमका कर उससे भी वही कहलवा दिया। जब राजा ने पूछा कि वे गोड़े किसके थे तो उसने जवाब दिया डौन जोसेफ़ पेयर के।

चलते चलते वे एक कुॅए के पास तक आ गये। ओगरे की पत्नी वहीं बैठी हुई थी। उसको देखते ही लोमड़ी ने डर से कॉपना और वहॉ से ऐसे भागना शुरू कर दिया जैसे वह किसी से डर कर भाग रही हो। "ओ मेरी दोस्त। देखो वे लोग आ रहे हैं। ये घुड़सवार हमें मार डालेंगे। चलो हमको इस कुॅए में छिप जाना चाहिये।"

ओगरे की पत्नी भी यह सुन कर डर गयी और बोली — "हॉ हॉ हमें कुॅए में छिप जाना चाहिये।"

लोमड़ी ने कहा — "क्या मैं तुम्हें पहले फेंक दूँ।"

"हॉ हॉ दोस्त तुम ऐसा ही करो।" और लोमड़ी ने उसे कुँए में धक्का दे दिया। फिर लोमड़ी उसके महल में आयी।

डौन जोसेफ़ पेयर भी अपनी पत्नी और ससुर के साथ साथ उसके पीछे पीछे महल में आ गया। लोमड़ी ने उन सबको महल घुमाया उसका खजाना दिखाया।

डौन जोसेफ़ पेयर ने जब अपनी किस्मत बदलती देखी तो वह बहुत खुश हुआ। उससे ज़्यादा उसका ससुर राजा अपनी बेटी की किस्मत देख कर हुआ। कुछ दिनों तक वहॉ खूब धूमधाम रही फिर राजा सन्तुष्ट और सुखी अपने देश लौट गया और अपनी बेटी को उसके पति के पास छोड़ गया।

एक दिन लोमड़ी अपनी खिड़की से बाहर देख रही थी तो उसने देखा डौन जोसेफ़ पेयर और उसकी पत्नी बाहर छत पर जा रहे थे। वहॉ पहुँच कर डौन जोसेफ़ पेयर ने थोड़ी सी धूल अपने हाथ में ली और लोमड़ी के सिर पर फेंक दी।

लोमड़ी ने अपना सिर उठाया और डौन जोसेफ़ पेयर से पूछा — "इतना सब अच्छा काम करने के बाद इसका क्या मतलब है। ख्याल रखना वरना मैं बोल पड़ूँगी।"

पत्नी ने पति से पूछा — "यह लोमड़ी क्या कह रही है।"

पति बोला — "कोई खास बात नहीं। मैंने उसके ऊपर ज़रा सी धूल फेंकी तो वह गुस्सा हो गयी।" कह कर उसने थोड़ी सी धूल नीचे से और उठायी और फिर से लोमड़ी के सिर पर फेंक दी।

लोमड़ी ने फिर गुस्से में भर कर कहा — "जोसेफ़ तुम समझ लो कि मैं बोल दूँगी।"

अब डौन जोसेफ़ पेयर को डर लगने लगा क्योंकि लोमड़ी उसकी पत्नी को सब बता देगी। सो उसने एक मिट्टी का बड़ा सा बर्तन उठाया और लोमड़ी के सिर पर दे मारा। इसकी मार से लोमड़ी तुरन्त ही मर गयी।

इस तरह उस कृतघ्न ने उस लोमड़ी को मार दिया जिसने उसको आज इस जगह पहुँचाया। पर डौन जोसेफ़ पेयर अपनी पत्नी के साथ उस सम्पत्ति का सुख भोगता रहा।

34 बूट पहने हुए बिल्ला[28]

एक बार की बात कि बोहेमिया में एक बहुत ही गरीब स्त्री रहती थी जिसका नाम था सोरियाना। उसके तीन बेटे थे – दुसोलीनो, तैसीफ़ोन और तीसरा खुशकिस्मत कौन्स्टैन्टाइन।[29]

उसके पास केवल तीन चीज़ें थीं – आटा मलने के बाद उसको रखने का एक बरतन, एक चकला और एक बिल्ला। जब सोरियाना काफी बूढ़ी हो गयी और वह मरने वाली हो रही थी तो उसने अपने बच्चों में से अपना बर्तन अपने बड़े बेटे को दिया चकला अपने दूसरे बेटे को दिया और बिल्ला अपने सबसे छोटे बेटे को दिया।

जब उनकी मॉ मर गयी तो उसको दफ़न कर दिया गया। उसके बाद क्योंकि पड़ोसियों को कभी आटा रखने के बर्तन की जरूरत होती तो कभी बेलन की जरूरत होती तो वे उनको उन्हें उधार दे देते।

क्योंकि वे जानते थे कि दोनों भाई बहुत गरीब थे सो इनके बदले में वे उनको कुछ केक बेक कर के दे देते जिसे वे खा लेते पर वे कौन्स्टैन्टाइन को उसमें से कुछ नहीं देते।

---

[28] Puss in Boots. Tale No 34. This tale is given in the "Notes" section of the Book. This translation is from Perrault's edition of 1562 (Venice version).

[29] There lived an old woman named Soriana who had three sons – Dusolino, Tesifone and Constantine the Luckey in Bohemia.

और अब अगर कौन्स्टैन्टाइन उनसे कुछ माँगता भी तो वे उसे उसके बिल्ले के पास जाने के लिये कहते कि जो उसे चाहिये वह वह उसी से ले ले। इससे कौन्स्टैन्टाइन और उसका बिल्ला दोनों को बहुत तकलीफ उठानी पड़ती।

अब यह बिल्ला तो जादू का बिल्ला था। उसको कौन्स्टैन्टाइन पर दया आने लगी और उसके दोनों बड़े भाइयों पर गुस्सा जो उसके साथ इतनी बुरी तरह से बरताव करते थे।

एक दिन उसने कौन्स्टैन्टाइन से कहा — "कौन्स्टैन्टाइन तुम इतने दुखी मत हो क्योंकि मैं तुम्हारी और अपनी दोनों की देखभाल करूँगा।"

सो वह कौन्स्टैन्टाइन को छोड़ कर मैदानों में चला गया। फिर उसने सोने का बहाना किया और एक बड़ा खरगोश[30] पकड़ कर उसे मार दिया। फिर वह शाही महल चला गया और दरबारियों के सामने जा कर बोला कि वह राजा से मिलना चाहता था।

राजा ने जब यह सुना कि एक बिल्ला उससे मिलना चाहता था तो उसने उसको अपने सामने बुलाया और उससे पूछा कि वह क्या चाहता था तो बिल्ला बोला कि उसके मालिक कौन्स्टैन्टाइन ने एक बड़ा खरगोश पकड़ा था जिसे उसने आपके पास भेजा है।

[30] Translated for the word "Hare" – hare is a type of rabbit but is bigger than the rabbit. See its picture above.

राजा ने उसकी भेंट स्वीकार कर ली और उससे पूछा कि यह कौन्स्टैन्टाइन कौन है। बिल्ले ने बताया कि दुनियॉ में सुन्दरता ताकत और अच्छेपन में कौन्स्टैन्टाइन से बढ़ कर और कोई नहीं है। यह सुन कर राजा ने उसका बहुत अच्छे से स्वागत किया और उसको बहुत कुछ खाने पीने को दिया।

जब बिल्ला खा पी चुका तो उसने चालाकी से राजा से छिपा कर अपना पंजा भर कर अपना थैला भर लिया। फिर उसने राजा से जाने की इजाज़त मॉगी और उसे कौन्स्टैन्टाइन के पास ले गया।

कौन्स्टैन्टाइन के भाई लोगों ने जब कौन्स्टैन्टाइन के पास वह खाना पीना देखा तो उन्होंने उससे उनको देने के लिये कहा पर उसने उनको साफ मना कर दिया। इस वजह से उन लोगों में आपस में जलन हो गयी जो उनके दिलों को काटती रही।

कौन्स्टैन्टाइन हालॉकि बहुत सुन्दर था लेकिन वह अकेलेपन की वजह से बहुत परेशान था। उसको खुजली हो गयी जिससे भी वह बहुत परेशान था। पर बिल्ले के साथ नदी पर जाते समय बिल्ले ने उसके शरीर को सिर से पैर तक चाटा उसके बालों में कंघी की। कुछ दिन में ही वह बिल्कुल ठीक भी हो गया।

बिल्ला राजा को भेंटें देता रहा और कौन्स्टैन्टाइन की सहायता करता रहा। पर कुछ समय बाद वह इस तरीके से आते जाते इतना थक गया कि उसको लगा कि वह राजा के दरबारियों को इस तरह आ जा कर नाराज कर देगा।

सो उसने अपने मालिक से कहा — "अगर आप जैसा मैं आपसे कहूँ वैसा ही करें तो मैं आपको बहुत थोड़े समय में ही अमीर बना सकता हूँ।"

उसके मालिक ने पूछा — "कैसे।"

बिल्ला बोला — "आओ मेरे साथ आओ और अब मुझसे कोई और सवाल मत पूछना क्योंकि मैं अब तुम्हें अमीर बनाने के लिये बिल्कुल तैयार हूँ।"

सो वे दोनों एक नदी की तरफ गये जो महल के पास ही थी।

वहाँ पहुँच कर बिल्ली ने अपने समझौते के अनुसार उससे उसके कपड़े उतरवाये और उसको नदी में फेंक दिया। फिर वह ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगी — "बचाओ बचाओ। मास्टर कौन्स्टैन्टाइन डूब रहे हैं।"

राजा ने जब यह सुना तो उसे याद आया कि इस नाम के आदमी ने तो उसको कई भेंटें भेजी हैं। सो उसने अपने कई लोग उसकी सहायता के लिये भेज दिये। जब कौन्स्टैन्टाइन को नदी के बाहर निकाल लिया गया और उसे बढ़िया कपड़े पहना दिये गये तब उसको राजा के सामने ले जाया गया।

राजा ने उसका बड़े प्रेम से अपने महल में स्वागत किया और उससे पूछा कि उसको नदी में क्यों फेंका गया। कौन्स्टैन्टाइन तो पहले से ही दुखी था सो वह कुछ नहीं बोल सका पर बिल्ला जो हमेशा उसके साथ रहता था बोला —

"ओ राजा। कुछ डाकुओं को अपने लोगों से यह पता चल गया कि इनके पास कुछ जवाहरात थे जो ये आपको भेंट में देने आ रहे थे। सो उन्होंने वे इनसे छीन लिये और इनको मारने के विचार से इन्हें नदी में धकेल दिया। पर इन लोगों का लाख लाख धन्यवाद है कि समय पर आ कर इन लोगों ने इनकी जान बचा ली।"

यह देख कर कि कौन्स्टैन्टाइन सुन्दर है और यह जान कर कि वह अमीर भी है राजा ने अपनी बेटी ऐलीसैत्ता[31] को उसको देने का विचार कर लिया। बेटी के लिये उसने बहुत सुन्दर कपड़े भी बनवाये और उसको जवाहरात भी दिये।

जब उन दोनों की शादी हो गयी तो राजा ने **10** खच्चरों पर पैसा लदवाया और पॉच खच्चरों पर कपड़े लदवाये और बहुत सारे नौकर चाकरों के साथ अपनी बेटी को उसके पति के घर भेजा।

जब कौन्स्टैन्टाइन ने देखा कि वह तो अब कितना अमीर हो चुका है तो उसे यही पता नहीं चला कि वह अपनी पत्नी को कहॉ ले कर जाये। उसने अपने बिल्ले से सहायता ली।

तो बिल्ला बोला — "मालिक आप चिन्ता न करें क्योंकि हम आपको सब कुछ देने वाले हैं।"

सो वे सब खुशी खुशी घोड़ों पर सवार हुए और बिल्ला उन सबके आगे आगे तेज़ी से भाग लिया। सबको पीछे छोड़ कर वह आगे निकल गया और कुछ घुड़सवारों से मिला तो उनसे कहा —

[31] Elisetta – name of the Princess

"तुम लोग यहॉ क्या कर रहे हो। तुम यहॉ से तुरन्त ही चले जाओ। वह देखो यहॉ बहुत सारे लोग आ रहे हैं वे तुम्हें बन्दी बना लेंगे। वे लोग तुम्हारे पास ही हैं। तुम्हें उनके घोड़ों की आवाज तो सुनायी पड़ ही रही होगी।"

वे घुड़सवार बेचारे डर गये सो बोले — "तो फिर अब हम क्या करें।"

बिल्ला बोला — "तुम लोग ऐसा करना कि वे लोग अगर तुमसे यह पूछें कि तुम लोग कौन हो तो तुम कहना कि हम कौन्स्टैन्टाइन के लोग हैं। तब तुम्हें कोई परेशान नहीं करेगा।"

यह कह कर बिल्ला आगे चल दिया तो उसे भेड़ों का एक बहुत बड़ा झुंड मिला। उसने उनके मालिकों से भी यही कहा और फिर आगे चल दिया। जो भी उसे उस सड़क पर मिला उसने उससे वही कहने के लिये कहा जो उसने घुड़सवारों से कहने के लिये कहा था।

जो लोग ऐलीसैत्ता के आगे आगे चल रहे थे उन्होंने घुड़सवारों से पूछा — "आप लोग किसके नाइट हैं।" उन्होंने कहा कि हम कौन्स्टैन्टाइन के नाइट्स हैं। सुन कर वह बहुत खुश हुआ। फिर उन्होंने गड़रियों से पूछा कि वे भेड़ें किसकी हैं तो उन्होंने कहा कि ये सब भेड़ें कौन्स्टैन्टाइन की हैं।

उन्होंने कौन्स्टैन्टाइन से कहा कि वे अब उसके राज्य की सीमा में आ चुके हैं। उसने अपना सिर हॉ में हिलाया और फिर जो कुछ उससे पूछा गया उसका उसने उसी तरह से जवाब दे दिया। इससे सारे लोग उसको बहुत अमीर समझने लगे।

आखिर बिल्ला एक बहुत सुन्दर किले के पास आ गया उसमें केवल कुछ नौकर ही दिखायी दे रहे थे। उसने उनसे पूछा — "भले लोगों तुम लोग क्या कर रहे हो। क्या तुम्हें अपनी बर्बादी की भी कुछ खबर है जो तुम्हारे सिर पर मॅडरा रही है।"

नौकर बोले — "क्या। यह तुम क्या कह रहे हो।"

बिल्ला बोला — "एक घंटे के अन्दर अन्दर ही यहॉ बहुत सारे सिपाही आने वाले हैं और तुम्हारे टुकड़े टुकड़े कर देंगे। क्या तुम्हें घोड़ों की हिनहिनाहट की आवाज नहीं सुनायी दे रही।

अगर तुम लोग मरना नहीं चाहते तो जब वे तुमसे पूछें कि तुम लोग किसके नौकर हो तो कहना कि हम कौन्स्टैन्टाइन के नौकर हैं। तब वे तुमको छोड़ देंगे।"

उन्होंने ऐसा ही किया। जब सब लोग वहॉ आये तो उन्होंने पूच कि वह सुन्दर किला किसका है तो उन्होंने जवाब दिया कि कौन्स्टैन्टाइन का। तब वे लोग उस किले में घुसे और उनका बहुत आदर किया गया।

पर वास्तव में उस किले का मालिक एक बहुत ही बहादुर सिपाही वैलैन्टीनो[32] था। कुछ देर पहले ही वह अपना किला छोड़ कर अपनी पत्नी को लाने के लिये गया हुआ था जिससे उसकी अभी अभी शादी हुई थी।

पर उसके साथ ऐसा कुछ बुरा हुआ कि इससे पहले कि वह अपनी पत्नी के घर पहुँचता उसका एक जान लेवा ऐक्सीडैन्ट हो गया जिसमें वह तुरन्त ही मर गया। सो अब कौन्स्टैन्टाइन ही उस किले का मालिक बन गया।

जल्दी ही बोहेमिया का राजा मोरैन्डो[33] भी मर गया तो वहाँ के लोगों ने कौन्स्टैन्टाइन को ही अपना राजा चुन लिया क्योंकि वह एक मरे हुए राजा की बेटी का पति था और उस राज्य के ऊपर उसी का अधिकार था।

इस तरह कौन्स्टैन्टाइन एक गरीब से ऊपर बढ़ कर एक राजा बन गया और अपनी पत्नी के साथ बहुत समय तक ज़िन्दा रहा और राज किया। फिर उसके बच्चों ने राज किया।

[32] Valentino
[33] Morando

35 सुन्दर भौंह[34]

अब जो कहानी हम यहाँ देंगे वह काफी पुरानी है। इसका एक चरित्र बस एक ऐक्सीडैन्ट है। इस कहानी को "ऋणी लाश"[35] का टाइटिल दिया जा सकता है। क्योंकि इस कहानी में इसका हीरो एक लाश के लिये आदर दिखाता है। इस लाश ने जब यह आदमी ज़िन्दा था तो उसने उससे कई लोगों से कुछ कर्जा लिया था पर अपने जीवनकाल में उसे चुका न सका।

पर जब तक वह अपना सारा कर्जा न चुका देता तब तक उसे दफ़नाया नहीं जा सकता था। तब हीरो ने उसका कर्जा वापस किया तो उस आदमी की आत्मा हीरो के लिये एक अच्छी परी बन गयी। जब वह खतरे में होता तो वह उसकी रक्षा करती है और आखीर में वह उसके लिये अच्छी किस्मत ले कर आती है। इस केन्द्र के चारों तरफ और भी कई घटनाऐं भी घूमती हैं। इस कहानी के उदाहरण के तौर पर हम, क्योंकि यह कम मिलती है, इसलिये हम इसका यह इस्त्रियन रूप[36] दे रहे हैं।

एक बार की बात है कि एक पिता था जिसके एक बेटा था। जब इस बच्चे की पढ़ाई पूरी हो गयी तो इसके पिता ने कहा — "बेटा तुम अब पढ़ लिख गये हो और तुम बड़े भी हो गये हो अब तुम घूमने लायक हो गये हो। मैं तुम्हें एक जहाज़ देता हूँ ताकि तुम व्यापार करने के लिये उसमें सामान भर सको। सँभाल कर खरीदना और बेचना। ध्यान रहे फायदा कर के लाना।"

उसने उसको सामान खरीदने के लिये **6000** स्कूदी[37] दीं और बेटा अपनी यात्रा पर चल दिया। अभी वह अपनी यात्रा पर ही था

[34] Fair Brow. Tale No 35.
[35] "The Thankful Dead"
[36] Istrian Version
[37] Skudi – the then currency in use

और उसने अभी तक कोई चीज़ ख़रीदी या बेची नहीं थी कि वह एक शहर आ पहुँचा। समुद्र के किनारे ही उसने एक अर्थी देखी और यह भी देखा कि जो कोई उसके पास से जा रहा था वह कोई एक पैनी या फिर कोई दो पैनी उसकी लाश के ऊपर डालता जा रहा था।

अपना यात्री वहाँ पहुँचा और पूछा — "यह आप लोग इस अर्थी को यहाँ क्यों रखे हुए हैं क्योंकि इसे तो कब्र में होना चाहिये था।"

"क्योंकि इसके ऊपर दुनियाँ भर का कर्जा था और यह यहाँ की रीति है कि किसी भी मरे हुए आदमी को जब तक नहीं दफ़नाया जा सकता जब तक उसके ऊपर कर्जा होता है।"

"पर इसको यहाँ रखने का फायदा। आप लोग मुनादी पिटवा दें कि जिसने भी इसको उधार दिया हो वह मेरे पास आये मैं इसका उधार चुकता करूँगा। कम से कम इसको फिर दफ़नाया तो जा सकेगा।"

लोगों ने यह मुनादी पिटवा दी और उसने उसका सारा कर्जा उतार दिया। पर अब उसके पास एक पैनी भी नहीं बची थी सो वह अपने पिता के पास लौट आया।

पिता उसको देखते ही बोला — "क्या खबर। इतनी जल्दी तुम्हारे वापस आने का क्या मतलब है।"

लड़का बोला — "समुद्र पार करने के बाद हमको कुछ समुद्री डाकू मिल गये उन्होंने मेरा सब कुछ लूट लिया।"

उसके पिता ने कहा — "कोई बात नहीं बेटा। कम से कम यही अच्छा है कि उन्होंने तुम्हारी जान बख्श दी। मैं तुम्हें और पैसा देता हूँ पर तुम अबकी बार इस दिशा में मत जाना।"

उसने उसको फिर **6000** स्कूदी दिये तो बेटे ने कहा — "पिता जी चिन्ता मत कीजिये अबकी बार मैं उस तरफ नहीं जाऊँगा। मैं दूसरी तरफ जाऊँगा।"

वह वहाँ से चल दिया और अपनी यात्रा शुरू की। रास्ते में उसको तुर्की का एक जहाज़ दिखायी दिया। उनको देख कर उसने सोचा कि यह ज़्यादा अच्छा रहेगा कि मैं उनको अपने जहाज़ पर बुला लूँ बजाय इसके कि वे हमें अपने जहाज़ पर बुलायें।

वे उसके जहाज़ पर आ गये। जब वे उसके जहाज़ पर आ गये तो उसने उनसे पूछा "आप सब कहाँ से आये हैं।"

वे बोले — "हम लैवन्त[38] से आये हैं।"

"तुम्हारे पास क्या सामान है।"

"कुछ नहीं। बस एक सुन्दर लड़की।"

"यह लड़की तुम्हारे पास कहाँ से आयी।"

[38] Levant – an area in Southern Turkey. See the map above.

"इसकी सुन्दरता की वजह से। हम इसको फिर से बेचना चाहते हैं। हमने इसको एक सुलतान से चुराया है। यह बहुत ही सुन्दर है।"

"तुमको इसके कितने पैसे चाहिये।"

"हम इसके **6000** स्कूदी चाहते हैं।"

जो पैसा उसके पिता ने उसे व्यापार के लिये दिया था उससे उसने वह लड़की खरीद ली और उसे अपने जहाज़ पर ले आया। वह फिर अपने पिता के घर लौटा ऊपर गया तो उसके पिता ने कहा — "आओ मेरे सुन्दर बेटे आओ। अबकी बार तुम क्या लड़कियों का व्यापार कर के आये हो।"

बेटा बोला — "पिता जी। मैं आपके लिये एक बहुत सुन्दर अँगूठी ले कर आया हूँ। इसे मैं आपको इनाम के लिये ले कर आया हूँ। इसमें न मुझे कोई शहर खर्च करना पड़ा है और न ही कोई महल। यह दुनियाँ की सबसे सुन्दर स्त्री है जैसी आपने शायद ही कभी देखी हो। यह तुर्की के सुलतान की बेटी है। यह मेरी पहली खरीद है।"

यह सुन कर उसका पिता चिल्लाया — "अरे ओ अभागे। क्या यही वह सामान है जो तू ले कर आया है?"

उसने दोनों के साथ बुरा व्यवहार किया और दोनों को अपने घर से निकाल दिया। वे बेचारे बदकिस्मत यह नहीं सोच पाये कि वे कहाँ शरण लें। वे वहाँ से चले गये। उनके शहर के पास ही एक

बहुत बड़ी बिल्डिंग में कुछ कमरे थे। वे वहीं जा कर उनमें से एक कमरे में रहने लगे।

लड़का बोला — "अब हम यहॉ क्या करें। मुझे तो कोई काम आता नहीं। न मुझे कोई काम आता है न ही व्यापार।"

राजकुमारी बोली — "मुझे पेन्टिंग आती है मैं बहुत अच्छी तस्वीरें बनाती हूॅ। मैं तस्वीरें बनाऊॅगी तुम जा कर बेच आना।"

लड़का बोला — "यह तो बड़ी अच्छी बात है।"

लड़की ने कहा — "पर याद रखना कि तुम किसी से कहना नहीं कि वे तस्वीरें मैंने बनायी हैं।"

"नहीं नहीं। मैं किसी से भी नहीं कहूॅगा।"

X X X X X X x

इन लोगों को हम यहीं तस्वीरे बनाते बेचते छोड़ते हैं और तुर्की चलते हैं। अपनी बेटी के खोने के बाद तुर्की के सुलतान ने अपनी बेटी की खोज में चारों तरफ अपने जहाज़ भेजे। ये जहाज़ उसकी खोज में इधर उधर गये।

अब ऐसा हुआ कि उनमें से एक जहाज़ उधर भी आ निकला जिस शहर में सुलतान की बेटी रहती थी। जहाज़ में से बहुत सारे नाविक जमीन पर गये।

एक दिन पति ने पत्नी से कहा — "प्रिये अब तुम कई तस्वीरें बनाओ क्योंकि आज हम उन सबको बेच देंगे।"

उसने कई तस्वीरें बना दीं और उससे कहा कि वह उनमें से किसी को भी **20** स्कूदी से कम कीमत में न बेचे। उसने बहुत सारी तस्वीरें बना दी थीं और वह उनहें चौराहे पर बेचने के लिये ले गया। कुछ तुर्क लोग वहॉ आये।

जब वे तस्वीरें उन्होंने देखीं तो उनको लगा कि ये तस्वीरें जरूर ही किसी राजकुमारी की बनायी हुई होंगी। वे उस आदमी के पास आये और उससे पूछा कि वह उनको किस कीमत पर बेच रहा था। पति ने कहा कि वे बहुत मॅहगी है और वह किसी को भी **20** स्कूदी से कम में नहीं बेचेगा।

वे बोले — "ठीक है। हम सब तस्वीरें खरीद लेंगे पर हमें कुछ और तस्वीरें भी चाहिये।"

वह बोला — "आप मेहरबानी कर के मेरी पत्नी के घर आइये जो ये तस्वीरें बनाती है।"

वे उसके घर गये और जब उन्होंने सुलतान की बेटी को वहॉ देखा तो उसको पकड़ लिया बॉधा और तुर्की की तरफ ले चले। अब यह पति तो बेचारा अपनी पत्नी के बिना बहुत दुखी हो गया। इसको तो कोई काम आता नहीं था। यह अकेला घर में रह गया था। अब यह क्या करे।

वह रोज समुद्र के किनारे टहलता ताकि उसको कोई जहाज़ मिल जाये और वह उसको चढ़ा ले पर उसे कोई जहाज़ दिखायी ही नहीं दिया।

एक दिन उसने एक बूढ़े को एक छोटी सी नाव में मछली पकड़ते देखा तो वह उससे चिल्ला कर बोला — "आप मुझसे कितनी अच्छी दशा में हैं।"

बूढ़ा बोला — "ऐसा कैसे मेरे प्यारे बेटे।"

लड़का बोला — "क्या आप मुझे अपने साथ मछली पकड़ने के लिये ले चलेंगे।"

बूढ़ा बोला — "क्यों नहीं बेटा। अगर तुम आना चाहोगे तो मैं तुम्हें जरूर ले चलूँगा। आओ मेरी नाव में बैठ जाओ।"

"भगवान का बहुत बहुत धन्यवाद।"

"आ जाओ।"

तुम मछली पकड़ने वाले कॉटे के साथ और मैं नाव के साथ
हो सकता है कि हम लोग कुछ मछलियॉ पकड़ लें

"मैं मछलियॉ बेच दूँगा क्योंकि मुझे बेचने में कोई शर्म नहीं है और हम एक साथ रहेंगे।"

उन्होंने खाना खाया और फिर सो गये। अचानक समुद्र में बहुत ज़ोर का तूफान उठा और उन लोगों को तुर्की ले गया। जब तुर्क लोगों ने वहॉ एक नाव देखी तो उन्होंने उनको अपना दास बना लिया और उनको देश के सुलतान के पास ले गये।

सुलतान ने कहा — "इन सब लोगों को बागीचे में काम पर लगा दो। इनमें से एक को फूलों के गुलदस्ते बनाने दो और दूसरे को उसमें पौधे लगाने दो आदि आदि।"

सो उन्होंने बूढ़े को बागीचे माली का काम दे दिया और नौजवान से कहा कि वह रोज राजकुमारी के लिये फूल ले कर जाये। राजकुमारी को सुलतान ने उसकी दासियों के साथ एक ऊँची मीनार में बन्द कर रखा था।

वे वहाँ बहुत आराम से थे। रोज वे बागीचे जाते थे और दूसरे मालियों से जान पहचान करते थे। कुछ दिन बीत गये एक बार बूढ़े ने कुछ गिटार बाँसुरी वायलिन आदि संगीत के वाद्य बनाये। नौजवान के पास जब भी समय होता तो वह उन्हें बहुत सुन्दर तरीके से बजाता। यह "सुन्दर भौंह" जिसकी खुद की आवाज किसी भी संगीत के वाद्य से ज़्यादा मीठी थी गाता भी था।

एक दिन उसकी पत्नी ने जो वहाँ मीनार में ही थी ये मीठे गीत सुन कर अपनी दासी से पूछा — "यह कौन इतना सुन्दर बजा रहा है और कौन इतना मीठा गा रहा है।"

वे बाहर छज्जे पर निकल कर आयीं तो उसने सुन्दर भौंह को देखा तो उसको तुरन्त ही ऊपर बुलाने का सोचा। उसने जो फूलों से टोकरियाँ भरा करते थे उनमें से एक से कहा कि इस नौजवान को एक फूलों की टोकरी में रखो और फूलों में छिपा दो।

उन्होंने ऐसा कर दिया तो उसने वह टोकरी ऊपर खींच ली। जब वह ऊपर आया तो उसने अपनी पत्नी को देखा। उसने उसको गले लगाया और फिर वे दोनों वहॉ से भागने का प्लान बनाने लगे।

तब राजकुमारी ने अपनी दासियों से कहा कि वह बिना किसी को बताये वहॉ से भाग जाना चाहती है।

सो उन्होंने एक बहुत बड़ा जहाज़ मोती और कीमती जवाहरातों से भरा उसमें सोने की जवाहरात जड़ी छड़ें रखीं फिर उन्होंने उसमें सबसे पहले सुन्दर भौंह को उतारा फिर राजकुमारी को उतारा और फिर उसकी दासियों को उतारा। वे सब उस जहाज़ पर चढ़ कर वहॉ से चल दिये।

जब वे खुले समुद्र में पहुॅचे तो नौजवान बोला — "अरे मैं उस बूढ़े को तो वही भूल गया जिसके साथ मैं यहॉ तक आया था।"

सुन्दर भौंह बोला — "चाहे कुछ हो जाये चाहे मेरी जान ही क्यों न चली जाये पर मुझे उसे वहॉ से लाना ही पड़ेगा क्योंकि मैंने उससे वायदा किया है जो मेरा विश्वास है।"

सो वे वापस गये बूढ़े को देखा जो अभी भी उनका एक गुफा में इन्तजार कर रहा था। उन्होंने उसको वहॉ से लिया जहाज़ में बिठाया और अपनी यात्रा पर चल दिये।

जब वे अपने घर के पास आ गये तब बूढ़ा बोला — "अब मेरे बच्चे हमें अपना अपना हिसाब बराबर कर लेना चाहिये और अपनी चीज़ों को बॉट लेना चाहिये।"

लड़का बोला — "सुनो ओ भले बूढ़े। जो भी चीज़ यहाँ है वह आधी तुम्हारी है आधी मेरी है।"

बूढ़ा बोला — "और तुम्हारी पत्नी भी तो आधी मेरी है।"

लड़का बोला — "चलो मैं तीन चौथाई हिस्सा तुम्हें देता हूँ और मैं केवल चौथाई हिस्सा ही लेता हूँ पर मेरी पत्नी को तुम अकेला छोड़ दो। क्या तुम चाहते हो कि मैं उसे दो हिस्सों में बाँट दूँ?"

बूढ़ा बोला — "तुमको पता होना चाहिये कि मैं उस आदमी की आत्मा हूँ जिसका कर्जा उतार कर तुमने उसे ठीक से दफ़न करवाया था। और तुमको यह सब अच्छी चीज़ें इसलिये मिलीं क्योंकि तुमने एक अच्छा काम किया था।"

कह कर वह वहाँ से गायब हो गया। सुन्दर भौंह ने जब यह सुना तो वह तो खुशी से मर ही गया। जब वे शहर पहुँचे उन्होंने एक तोप का गोला छोड़ा क्योंकि सुन्दर भौंह शहर में आ गया था – वहाँ का सबसे अमीर आदमी।

उसने अपने पिता को बुलवाया और उनको अपना सब हाल बताया कि उस पर क्या गुजरी। फिर वह अपने पिता के साथ ही रहने के लिये चला गया। पिता बूढ़ा था सो जल्दी ही चल बसा और उसकी सारी सम्पत्ति उसके बेटे को मिल गयी।

36 लायनब्रूनो[39]

हमने यह पहले ही लिख दिया था कि हम इस पुस्तक में कोई भी साहित्यिक कहानी शामिल नहीं करेंगे। इसी लिये हमने स्ट्रापरोला और बासिले की कहानियॉ इसमें शामिल नहीं की हैं और न ही किसी और पुस्तक की कहानी शामिल की है जो बहुतायत से मौजूद हैं। इस पुस्तक के आखिरी अध्याय की कहानियॉ केवल बहुत लोकप्रिय वाली कहानियॉ हैं।

इसके उदाहरणस्वरूप और तुलना के लिये हम यह कहानी यहॉ दे रहे हैं — "लायनब्रूनो" जो सबसे पुरानी और बहुत ही लोकप्रिय कहानी है। इसका सबसे पूरा रूप डोमैनीको कौम्पारैत्ती ने दिया है हम वही यहॉ प्रस्तुत कर रहे है।

एक बार की बात है कि एक समुद्र यात्री था। उसकी एक पत्नी थी और तीन या चार बच्चे थे। वह मछली पकड़ने का काम करता था और वह और उसका परिवार उसके मछली पकड़ने के काम से जो उसकी आमदनी होती थी उसी में गुजर बसर करते थे।

तीन या चार साल से मछलियॉ कुछ कम मिल रही थीं सो वह एक सारडीन मछली भी नहीं पकड़ पाया था। बेचारा मछियारा। इस बुरे समय की वजह से वह बेचारा धीरे धीरे अपनी सारी चीज़ें बेचने पर मजबूर हो गया। अब वह केवल भीख मॉग कर ही गुजारा करता था।

एक दिन वह मछली पकड़ रहा था कि उसने उस दिन एक सीपी तक नहीं पकड़ी थी। वह मडोना और सब सेंटों[40] को बुरा

[39] Lionbruno. Tale No 36. By Domenico Comparetti. (Tale No 41)

[40] Madonna, means Mary (Jesus' mother) and saints

भला कह रहा था कि अचानक समुद्र के बीच से एक आदमी उठा जो उसका दुश्मन[41] था और उसने मछियारे से पूछा — "क्या बात है तुम इतना दुखी क्यों हो।"

मछियारा बोला — "और क्या बात हो सकती है सिवाय इसके कि मेरी किस्मत ही खराब है। तीन चार साल हो गये हैं मैं इस समुद्र में अपने आपको इस काम में बर्बाद कर रहा हूँ पर अब तक में एक रस्सी तक नहीं पकड़ सका हूँ जिससे लटक कर मैं अपनी जान भी दे सकूँ।"

दुश्मन बोला — "अगर तुम अगले **13** सालों में मुझे अपनी पत्नी के अगले बच्चे को देने के लिये तैयार हो तो अब से ले कर जब तक तुम अपना बच्चा मुझे देते हो इस बीच मैं कुछ ऐसा कर सकता हूँ कि जिससे तुम इतनी सारी मछलियाँ पकड़ लोगे कि तुम दुनियाँ के एक बहुत अमीर आदमी बन जाओगे।"

इससे मछियारा समझ गया कि निश्चित रूप से यह उसका दुश्मन है। उसने सोचा कि "मेरी पत्नी को कुछ सालों से बच्चा नहीं हुआ है तो क्या वह यह सोच पायेगी कि अब उसके बच्चा होगा सो इस बीच मैं इससे यह सौदा कर ही लेता हूँ। ओह वह तो अब बुढ़िया हो गयी है अब उसके क्या बच्चे होंगे।"

[41] Translated for the word "Enemy" – but it seems here it means "Satan"

सो दुश्मन की तरफ घूमते हुए उसने उससे कहा — "क्योंकि तुम यह सौदा करना चाहते हो तो मैं यह सौदा कर लेता हूँ। पर याद रखना कि तुम मुझे इस बीच बहुत अमीर बना दोगे।"

दुश्मन बोला — "तुम चिन्ता न करो। बस तुम मुझसे यह सौदा पक्का कर लो बाकी मैं देख लूँगा।"

मछियारा बोला — "आराम से आराम से। यह सौदा पक्का करने से पहले हम कुछ और बातें भी तो तय कर लें।"

"वे क्या।"

"सुनो। अगर मेरी पत्नी के इस बीच यानी **13** साल में कोई बच्चा नहीं हुआ तो?"

"तो तुम अमीर रहोगे और मुझे कुछ मत देना।"

"यही मैं जानना चाहता था। अब हम यह सौदा कर सकते हैं।" और फिर उन्होंने सारी चीज़ों के बारे में सब कुछ तय कर लिया। दुश्मन यह सौदा कर के वहाँ से गायब हो गया। मछियारे ने मछलियाँ पकड़नी शुरू कर दीं और अब उसके जाल में हर तरह की मछलियाँ फँसने लगीं। और वह हर दिन अमीर होता जा रहा था।

यह सब देख कर वह बहुत खुश हो रहा था कि "मैंने दुश्मन को अच्छा धोखा दिया।" पर बेचारे को क्या पता था कि उसने दुश्मन को नहीं बल्कि दुश्मन ने उसको धोखा दिया था।

अब तुमको यह पता होना चाहिये कि जिस समय वे यह सौदा कर रहे थे कि मछियारे की पत्नी को हालाँकि वह बूढ़ी तो थी पर

उसे मॉ बनने की आशा हो गयी थी और दुश्मन यह बात जानता था।

समय आने पर मछियारे की पत्नी ने एक सुन्दर बेटे को जन्म दिया। उन्होंने उसका नाम रखा – लायनब्रूनो।

दुश्मन अचानक ही वहॉ प्रगट हुआ — "मछियारे मछियारे।"

गरीब मछियारे ने उससे कॉपते हुए पूछा — "मैं तुम्हारी क्या सेवा कर सकता हूॅ।"

दुश्मन बोला — "तुम्हारे वायदे का समय हो गया। लायनब्रूनो अब मेरा है।"

मछियारा बोला — "तुम ठीक कहते हो। पर तुम अपना वायदा तो याद करो। तुम्हें याद है न कि **13** साल में। अभी तो केवल कुछ महीने ही गुजरे हैं।"

दुश्मन बोला — "यह तो तुम ठीक कहते हो। ठीक है तो फिर हम इसके **13** साल में मिलते हैं।" कह कर वह गायब हो गया।

इस बीच लायनब्रूनो हर दिन बड़ा होता रहा सुन्दर होता रहा। उसके माता पिता ने उसको स्कूल भेजा। पर समय तो बीतता ही जा रहा था। उसके **13** साल भी खत्म होने को थे।

समय पूरा होने से एक दिन पहले दुश्मन वहॉ फिर आया और बोला — "मछियारे मछियारे।"

अभागे मछियारे ने उसे उसकी भयानक आवाज से से ही पहचान लिया था सो उसने सोचा ओह अब मैं क्या करूॅ। पर

उसको उसका जवाब तो देना ही था। वह क्या जवाब दे। उसका सौदा पक्का था और अब उसका समय भी आ चुका था।

अब मछियारे की इच्छा थी या नहीं पर उसे अपने बेटे को अगले दिन समुद्र के पास भेजना पड़ा। अगले दिन जब वह स्कूल से लौटा तो उसकी मॉ ने उसको कुछ खाना ले कर उसके पिता के पास भेजा।

दुखी पिता समुद्र में अन्दर की तरफ गया हुआ था सो उसके बेटे को वह दिखायी नहीं दिया। लड़का वहीं किनारे पर उसका इन्तजार करने के लिये बैठ गया।

उसने वहॉ पड़े कुछ लकड़ी के टुकड़े उठा लिये और उनके कौस बनाने लगा। उन कौसों को वह अपने चारों तरफ गाड़ता जाता था। इस तरह से वह चारों तरफ से कौसों से घिर गया। एक कौस उसके हाथ में था और वह बराबर अपनी प्रार्थना गा रहा था।

लो वहॉ तो उसका दुश्मन उसको लेने के लिये चला आ रहा था। पास आ कर वह बोला — "लड़के तुम यहॉ क्या कर रहे हो।"

वह बोला — "मैं अपने पिता का इन्तजार कर रहा हूॅ।"

दुश्मन ने चारों तरफ निगाह डाली तो उसने देखा कि वह तो उसको पकड़ कर नहीं ले जा सकता था क्योंकि वह तो छोटे छोटे कौसों के बीच में बैठा हुआ था। और इसके अलावा एक कौस

उसके हाथ में भी था। उसने लड़के को एक भद्दी निगाह से देखा और चिल्लाया — "ओ लड़के ये सारे कौस नष्ट कर दो।"

लड़का बोला — "नहीं मैं ये कौस नष्ट नहीं करूँगा।

"दुश्मन फिर चिल्लाया — "मैं कहता हूँ कि इन सबको नष्ट कर दो वरना... ।"

उसने अपने बदसूरत और भयानक चेहरे से उसे डराने धमकाने की कोशिश की तो बेचारे बच्चे ने अपने चारों तरफ के सारे कौस बिगाड़ दिये पर जो कौस उसके हाथ में लगा था उसे नहीं छोड़ा।

दुश्मन बोला — "इसको भी तोड़ दो।"

बेचारा बच्चा यह सुन कर रो पड़ा — "नहीं नहीं मैं इसे नहीं तोड़ूँगा।"

दुश्मन ने उसको फिर धमकी दी फिर अपनी ऑखें घुमा घुमा कर डराया पर बच्चा अपने इरादे का पक्का था। उसी समय आसमान में एक चमकीली रोशनी चमकी। परियों की रानी परी कोलीना[42] नीचे आयी और बच्चे को उसके बालों से पकड़ कर उठा कर ले गयी। इस तरह से उसने बच्चे को दुश्मन से बचाया।

अगर तुमने आसमान में कभी बिजली कौंधती हुई देखी हो उसी तरह से दुश्मन की ऑख नाक कान सब जगह से आग की लपटें निकलने लगीं। पर इतनी सारी लपटों के बाद भी वह सुरक्षित रहा। परी लायनब्रूनो को सुरक्षित रूप से अपने शानदार महल में ले गयी।

[42] Fairy Colina

वहॉ लायनब्रूनो परियों के बीच में रह कर बड़ा हुआ। तुम सोच सकते हो कि वह वहॉ कितनी अच्छी तरह से रह रहा होगा। उसको वहॉ किसी चीज़ की कोई कमी नहीं थी।

उसकी सुन्दरता भी दिनोंदिन बढ़ती जा रही थी जिसे तुम्हें देखना चाहिये था। इस तरह से कुछ समय बीत गया।

एक दिन लायनब्रूनो ने परी कोलीना से कहा — "मैं अपने माता पिता से कुछ समय के लिये मिलना चाहता हूॅ। आशा है आप मुझे घर जाने की इजाज़त देंगी।"

परी बोली — "नहीं। मैं तुम्हें जाने से रोकूॅगी नहीं। मैं तुम्हें **20** दिन देती हूॅ तुम्हारे माता पिता से मिलने के लिये। पर ध्यान रखना इससे ज़्यादा वहॉ नहीं रुकना। याद रखना कि मैंने तुम्हें दुश्मन से बचाया है और तुम्हें बहुत अमीरी में पाला है। अब यह सम्पत्ति हम दोनों इस्तेमाल करने वाले हैं क्योंकि लायनब्रूनो तुम मेरे पति बनने वाले हो।"

तुम सोच सकते हो कि लायनब्रूनो तो इस बात को बिल्कुल मना कर ही नहीं सका। वह बोला — "आप जैसा कहेंगी मैं वैसा ही करूॅगा।"

परी कोलीना बोली — "लो लायनब्रूनो यह लाल लो। तुम इससे जो कुछ मॉगोगे यह तुम्हें वही दे देगा।"

उसने उससे वह लाल ले लिया। सब परियों ने उसको कुछ कुछ दिया। उसने उनसे भी वे सब चीज़ें लीं और सबको धन्यवाद

दिया। फिर उसने अपनी दुलहिन को गले से लगाया और वहॉ से चल दिया।

लायनब्रूनो तो एक राजकुमार से भी बढ़ कर यात्रा कर रहा था। उसने बहुत ही शानदार पोशाक पहनी हुई थी। वह एक शानदार घोड़े पर सवार था और उसके रक्षक उसके आगे चल रहे थे।

वह अपने शहर आया। फिर चौराहे पर आया तो उत्सुकतावश बहुत सारे लोगों की भीड़ उसके चारों तरफ इकट्ठी हो गयी। वहॉ आ कर उसने अपने पिता मछियारे के घर का पता पूछा। उसने अपने माता पिता को अपना आप नहीं बताया कि वह कौन था बल्कि बस उस रात के लिये रहने की जगह मॉगी।

आधी रात को लायनब्रूनो ने अपने लाल की सहायता से वह टूटा फूटा घर एक बहुत ही शानदार महल में बदल दिया। अगले दिन उसने अपने आपको एक **13** साल के बच्चे में बदल लिया।

फिर उसने अपने माता पिता को सब बताया कि किस तरह परी कोलीना ने उसे दुश्मन के हाथों से बचाया पाला पोसा और अब उससे शादी कर ली।

वह फिर बोला — "मॉ और पिता जी, इसी वजह से मैं अब आपके पास नहीं रह सकता। अभी तो मैं बस आप लोगों से मिलने आप लोगों को गले लगाने और आपको अमीर बनाने आया हूॅ। मैं

आपके पास केवल कुछ दिन ही रह पाऊँगा फिर मुझे यहाँ से जाना पड़ेगा।"

उसके माता पिता ने देखा कि वे इसमें कुछ नहीं कर सकते थे सो उनको इसी में सन्तुष्ट होना पड़ा। एक सुबह लायनब्रूनो अपने लाल की सहायता से जो उसने अपनी उँगली पर पहना हुआ था बहुत सारा पैसा लाया और अपने माता पिता से कहा — "अब यह महल और सारी सम्पत्ति मैं आपके लिये छोड़ता हूँ। अब आपको किसी चीज़ की जरूरत नहीं पड़ेगी। मुझे आशीर्वाद दीजिये अब मैं जाना चाहता हूँ।"

वे बेचारे तो यह सुन कर रो पड़े फिर बोले — "खुश रहो बेटा।" फिर वे आपस में एक दूसरे के गले मिले और लड़का वहाँ से चला गया।

वहाँ से चल कर वह नैपिल्स जैसे एक बड़े शहर में आया और वहाँ की सबसे अच्छी सराय में जा कर रुक गया। फिर वह वहाँ से बाहर घूमने चला गया तो वहाँ उसने एक मुनादी सुनी "जो कोई राजकुमार या नाइट घोड़े पर सवार हो कर भाला हाथ में ले कर एक सोने के सितारे को भेद देगा और उसे ले जायेगा राजा उससे अपनी बेटी की शादी कर देगा।"

ज़रा सोचो कितने सारे राजकुमारों और नाइट्स ने इस लिस्ट में अपना नाम लिखाया होगा। लायनब्रूनो तो इसमें केवल अपनी बहादुरी दिखाना चाहता था सो उसने अपने

मन में सोचा कि "मैं तो केवल वह सितारा ले कर भाग जाना चाहता हूँ।" सो उसने अपने लाल से कहा "कल मैं वह सुनहरा सितारा ले जाना चाहता हूँ।"

राजकुमार और नाइट्स सभी अपनी अपनी किस्मत आजमाने के लिये तैयार होने लगे। हर एक उस सितारे तक पहुँचा उसे अपने भाले से छुआ पर किसी के उसे ले जाने की बात नहीं सुनी गयी। लायनब्रूनो भी आया और अपने भाले को ज़ोर से मार कर उसे ले गया।

वह वहाँ से तुरन्त ही भाग गया और जल्दी से अपनी सराय में चला गया जिससे उसे कोई देख नहीं सका। सब तरफ से यही आवाज आ रही थी "वह कौन है।" "जीतने वाला कहाँ है।" "वह कहाँ गया।" पर उसके बारे में कोई नहीं बता सका।

राजा ने अगले दिन फिर से वही मुनादी पिटवायी तो लायनब्रूनो फिर से बाज़ी मार ले गया। लायनब्रूनो फिर से राजा को हरा गया था। अब तो राजा का गुस्सा बहुत बढ़ गया।

उसने एक और मुनादी पिटवायी पर इस बार उस चालाक राजा ने क्या किया। इस बार उसने बहुत सारे सिपाही उस जगह के चारों तरफ तैनात कर दिये जिससे कोई बच कर न भाग सके। राजकुमारों और नाइट्स अपनी अपनी बारी से आने लगे। पर हर बार की तरह आज भी लायनब्रूनो ही सुनहरा सितारा ले कर चलता बना।

पर सिपाही लोग उससे भी ज़्यादा तेज़ थे। अबकी बार उन्होंने उसको तुरन्त ही पकड़ लिया और राजा के पास ले गये। राजा ने जो अपने सिंहासन पर बैठा था कहा — "तुमने मुझे समझा क्या है कि तुम मुझे दो बार धोखा दे कर भी सन्तुष्ट नहीं हुए और तीसरी बार भी मुझे धोखा दे कर जाने वाले थे।"

लायनब्रूनो बोला — "मुझे बहुत अफसोस है पर मेरे अन्दर आपके सामने आने की हिम्मत नहीं थी।"

"तो तुमको इस काम का जिम्मा ही नहीं लेना चाहिये था। पर अब क्योंकि तुमने यह काम कर लिया है तो अब तो तुमको मेरी बेटी का पति बनना ही पड़ेगा।"

लायनब्रूनो को राजकुमारी से शादी करनी ही पड़ी। राजा ने एक बहुत बड़ी दावत की तैयारी की जिसमें उसने सारे राजकुमारों नाइट्स आदि को बुलाया।

जब कमरा इन सब लोगों से भर गया तो लायनब्रूनो ने राजकुमारी से शादी करने से पहले ही कहा — "योर मैजेस्टी। यह सच है कि आपकी बेटी बहुत सुन्दर है पर मेरी एक पत्नी है जिसके सामने आपकी बेटी सुन्दरता शान किसी मुकाबले में कहीं नहीं ठहरती।"

ज़रा सोचो जब राजा ने उसके ये शब्द सुने तो उसको कैसा लगा होगा। इतने सारे लोगों के सामने यह सुन कर बेचारी राजकुमारी का चेहरा बिल्कुल आग की तरह लाल पड़ गया।

राजा भी बहुत परेशान हो गया। फिर बोला — "अगर ऐसा है और वह इतनी ही सुन्दर है जितना कि तुम उसे बता रहे हो तो हम तुम्हारी पत्नी को देखना चाहेंगे।"

वहॉ बैठे सारे लोग चिल्लाये "हॉ हॉ हम भी देखना चाहेंगे।"

अब बेचारा लायनब्रूनो तो दुविधा में पड़ गया। वह अब क्या करे। उसके पास एक ही रास्ता था और वह था लाल का रास्ता। वह बोला — "ओ मेरे लाल। जा तू मेरी पत्नी परी कोलीना को ले कर आ।"

पर इस बार वह गलती पर था। लाल कुछ भी कर सकता था पर वह परी को वहॉ नहीं ला सकता था क्योंकि उसने खुद ने ही तो उसको जादुई ताकतें दी थीं।

जब कई बार लायनब्रूनो ने ऐसा कहा तो यह बात परी कोलीना के पास पहुॅची पर वह तो गयी नहीं। वह बोली — "मेरे दोस्त ने यह एक बहुत सुन्दर काम किया है। बहुत अच्छे। अब मैं जो कुछ उसे मिलना चाहिये वही उसको दूॅगी।"

उसने अपनी सबसे नीची वाली दासी को बुलाया और उसे राजा के कमरे में अचानक प्रगट कर दिया जहॉ शादी वाले मेहमान इकट्ठे हुए थे। जैसे ही सबने उसे देखा वे एकदम से बोले "बहुत सुन्दर बहुत सुन्दर। क्या यह तुम्हारी पहली पत्नी है?"

लायनब्रूनो बोला — "क्या? यह मेरी पहली पत्नी? यह तो उसकी सबसे नीची वाली दासी है।"

"बहुत सुन्दर। अगर यह उसकी सबसे नीची दासी है तो वह कितनी सुन्दर होगी।"

राजा बोला — "अगर यह तुम्हारी पहली पत्नी नहीं है तो मेरी इच्छा है कि वह खुद यहॉ आये।"

दूसरे लोग भी उसी तरह से चिल्लाये — "हॉ हॉ। उसको बुलाओ।"

बेचारा लायनब्रूनो। उसे फिर से लाल का सहारा लेना पड़ा। पर इस बार भी परी नहीं गयी बल्कि उसने नीची वाली दासी से कुछ और ऊपर वाली दासी को भेज दिया। जैसे ही सबने उसको देखा तो चिल्लाये — "अरे यह तो बहुत सुन्दर है। यही तुम्हारी असली पत्नी होगी। है न?"

लायनब्रूनो फिर बोला — "नहीं यह भी नहीं है। यह तो उसकी दूसरे नम्बर की दासी है। मेरी पहली पत्नी तो कमाल की सुन्दर है।"

तब गुस्से में भर कर राजा ने कहा — "अब हमें इसे रोक देना चाहिये। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारी पहली पत्नी तुरन्त ही यहॉ आये।"

माामला बहुत गम्भीर हो रहा था। बचारे लायनब्रूनो को एक बार फिर से लाल का सहारा लेना पड़ा। उसने कहा — "ओ मेरे लाल अगर तुम्हें सचमुच मेरी सहायता करनी है तो बस अभी वह समय है। तुम परी कोलीना को यहॉ ले कर आओ।"

इस बार बुलावा उसके पास पहुँचा और वह खुद वहाँ आयी। जब वहाँ बैठे सब लोगों ने उसकी सुन्दरता को देखा तो वे तो सारे के सारे मूर्ति बने बैठे रह गये।

पर परी कोलीना लायनब्रूनो के पास गयी उसका हाथ पकड़ने का बहाना किया और उसके हाथ से उसकी अँगूठी निकाल ली और बोली — "ओ गद्दार। अब तुम मुझे नहीं पा सकते जब तक कि तुमने सात जोड़ी लोहे के जूते न फाड़ दिये हों।" और वह गायब हो गयी।

राजा ने गुस्से में भर कर लायनब्रूनो से कहा — "अब मेरी समझ में आ गया कि सुनहरी सितारा लेना तुम्हारे बस की बात नहीं थी। यह तो केवल तुम्हारे पास जो लाल था उसकी ताकत थी। तुम मेरा महल छोड़ कर जा सकते हो।

उसने उसे पकड़ लिया अच्छी तरह से पिटायी की और वहाँ से भगा दिया। इस तरह बेचारा लायनब्रूनो को न तो परी ही मिली और न राजकुमारी ही। वह उस शहर से बहुत दुखी हो कर चला गया।

कुछ दूर जाने पर उसको एक बहुत ज़ोर का शोर सुनायी पड़ा। वह एक लोहार था। वह उसके पास गया और बोला — "मालिक। मुझे सात जोड़ी लोहे के जूते चाहिये।"

"अगर आपकी मर्जी होगी तो मैं आपको लिये **12** जोड़ी बना दूँगा पर मुझे ऐसा लगता है कि आपने भगवान से इस बात का

समझौता कर लिया है कि आप उतने दिन तक ज़िन्दा रहेंगे जितने सौ साल उनको आपको फाड़ने में लगेंगे।"

लायनब्रूनो बोला — "तुम्हें इस बात से क्या मतलब है। तुम्हारे लिये इतना काफी है कि मैं तुम्हें उनके दाम दूँगा। तुम मेरे लिये जूते बनाओ और अपनी जबान अपने काबू में रखो।"

उसने उसके लिये तुरन्त ही सात जोड़ी लोहे के जूते बना दिये। लायनब्रूनो ने उसको उनके दाम दिये एक जोड़ी जूता पहना। तीन जोड़ी जूते अपने थैले के एक तरफ लटकाये और दूसरे तीन जोड़ी जूते उसने थैले के दूसरी तरफ लटकाये और चल दिया।

काफी समय तक चलने के बाद वह रात को एक जंगल में आ पहुँचा। अचानक कहीं से तीन डाकू आये और उन्होंने लायनब्रूनो से कहा — "ओ भले आदमी। तुम यहाँ कैसे आये।"

लायनब्रूनो बोला — "मैं एक गरीब यात्री हूँ। अँधेरा हो रहा था सो मैं यहाँ आराम के लिये रुक गया। पर आप लोग कौन हैं।"

"हम लोग भी यात्री हैं।"

कह कर सब वहीं आराम करने के लिये रुक गये।

अगले दिन सुबह लायनब्रूनो उठा उसने तीनों डाकुओं से विदा ली और अपने रास्ते चल दिया। पर वह अभी मुश्किल से कुछ कदम दूर ही गया होगा कि उसने उनके झगड़ने की आवाज सुनी।

अब तुम्हें पता होना चाहिये कि उन्होंने तीन बहुत ही कीमती चीज़ें चुरायी हुई थीं और अब वे उसके बँटवारे पर लड़ रहे थे।

उनमें से एक बोला — "हम लोग तो बेवकूफ हैं। अभी हमारे पास वह यात्री था वह हमारा यह बॅटवारा कर सकता था। हम पहले उससे बॅटवारा करवा लेते फिर हम उसे जाने देते। चलो उसे वापस बुला लेते हैं।"

सो उन्होंने उसको आवाज लगायी और वह उनके पास आ गया। "मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूॅ।"

वे बोले — "ओ भले आदमी हमारे पास तीन बहुत कीमती चीज़ें हैं जिन्हें हमें आपस में बॉटना है। हमें उनको हममें बॉटने में तुम्हारी सहायता चाहिये"।

लायनब्रूनो ने पूछा कि वे तीन चीज़ें कौन सी थीं जिन्हें वे बॅटवाना चाहते थे।

उन्होंने कहा कि एक जोड़ी जूते हैं। एक बटुआ है और एक शाल है। इन तीनों की अपनी अपनी खासियत है। जो कोई बूट पहन लेता है वह हवा से भी तेज़ भागने लगता है।

अगर तुम बटूए से कहो "खुल जा और बन्द हो जा" तो वह तुरन्त ही तुम्हें **100** डकैट[43] दे देता है। आखीर में जो इस शाल को ओढ़ लेता है वह दुनियॉ की नजरों से अदृश्य हो जाता है। वह सबको देख सकता है पर दूसरा कोई उसको नहीं देख सकता।

लायनब्रूनो बोला — "यह बात तय करने के लिये कौन क्या चीज़ लेगा पहले मैं तो उन चीज़ों को देख लूॅ।"

[43] Ducat – Italian currency of olden times

"हॉ यह तो ठीक है।"

पहले तो लायनब्रूनो ने बूट पहने तो देखा कि वह उनको पहन कर वाकई हवा से तेज़ भाग सकता था। उसने बूट पहने ही छोड़ दिये। डाकुओं ने पूछा "तुम्हें बूट कैसे लगे।"

"बहुत ही बढ़िया।

"अब मैं तुम्हारा बटुआ देखता हूँ।" उसने चारों डाकुओं से वह बटुआ अपने हाथ में लिया और बोला — "खुल जा बन्द हो जा।"

तुरन्त ही उसमें से 100 चॉदी के डकैट निकल आये।

"अब मैं देखता हूँ कि यह शाल कैसे काम करता है। उसने उसको पहना और उसके बटन बन्द करने शुरू किये और फिर डाकुओं से पूछा — "क्या तुम लोग मुझे देख सकते हो।"

डाकुओं ने कहा "हॉ हम देख सकते हैं।"

उसने और बटन बन्द करने शुरू किये और फिर पूछा "क्या अब तुम मुझे देख सकते हो।"

डाकू फिर बोले "हॉ हम तुम्हें अभी भी देख पा रहे हैं।"

जब उसने शाल का आखिरी बटन भी बन्द कर लिया तब उसने फिर पूछा कि क्या वे उसे देख सकते थे। सब एक साथ बोले — "नहीं अब हम तुम्हें नहीं देख पा रहे।"

वह बोला — "अगर तुम अब मुझे नहीं देख पा रहे हो तो फिर तुम मुझे कभी नहीं देख पाओगे।"

उसने अपने लोहे के जूते फेंक दिये और वहाँ से हवा से भी तेज़ भाग लिया।

जब तीनों डाकुओं को इस तरह से धोखा दिया गया तो सोचो ज़रा उन डाकुओं बेचारों पर क्या गुजरी होगी। वे बहुत गुस्सा हो गये और उन्होंने आपस में एक दूसरे की बहुत पिटायी की। खास कर के उसकी जिसने लायनबूनो को वापस बुलाया था।

लायनबूनो डाकुओं को धोखा देने के बाद अपने रास्ते पर खुशी खुशी जाने लगा। एक लम्बी यात्रा के बाद वह एक दूसरे जंगल में आ पहुँचा। जंगल के बीच उसने धुँए की एक छोटी सी लकीर उठती देखी।

भयानक चट्टानों के बीच वहाँ उसने एक छोटी सी कुटिया देखी जो जंगली झाड़ियों से घिरी हुई थी। उसका एक छोटा सा दरवाजा था जो आइवी[44] की बेल से ढका हुआ था। जिससे वह दिखायी नहीं दे रहा था।

लायनबूनो दरवाजे की तरफ बढ़ा और दरवाजा धीरे से खटखटाया। अन्दर से एक बुढ़िया की आवाज आयी — "दरवाजा कौन खटखटा रहा है।"

[44] Ivy is a kind of leafy creeper plant which people use to cover their walls etc for beauty. It is very common in Britain. It's leaf's shape is of several kinds. Some are poison Ivy too which are harmful when touched.

लायनब्रूनो बोला — "मैं एक गरीब ईसाई हूँ। यहाँ तक आते आते मुझे रात हो गयी है अगर हो सके तो मैं एक रात यहाँ ठहरना चाहता हूँ।"

दरवाजा खुला और लायनब्रूनो घर में घुसा तो बुढ़िया बोली — "अरे ओ अभागे नौजवान। तुमने इतनी दूर जगह ठहरने के लिये और अपने आपको बर्बाद करने के लिये कैसे सोचा।"

यह बुढ़िया कोई साधारण स्त्री नहीं थी यह बोरिआ[45] थी। क्या तुम बोरिआ को जानते हो कि वह कौन है? वह उत्तरी हवा की माँ है।

लायनब्रूनो बोला — "ओ मेरी प्यारी बुढ़िया। मेरी चाची। मैं इस जंगल में खो गया हूँ क्योंकि मैं अपनी पत्नी – परी कोलीना की खोज में बहुत देर से यात्रा करता चला आ रहा हूँ और मुझे अभी तक उसका अता पता नहीं मिला है।"

बुढ़िया बोली — "तुमने बहुत बड़ी गलती कर दी है बेटा। अब हम क्या करेंगे। मेरे बेटे आने वाले होंगे। भगवान ही तुम्हारी सहायता करेगा क्योंकि वे तो तुम्हें आते ही खाना चाहेंगे।"

लायनब्रूनो काँपते हुए चिल्लाया — "ओह अभागा मैं। माँ ऐसे कौन से तुम्हारे बेटे हैं जो ईसाइयों को भी खा जाते हैं।"

बुढ़िया बोली — "मेरे बच्चे। तुम नहीं जानते कि तुम कहाँ हो। क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि इस जंगल के बीच में जो यह

[45] Borea – mother of North Wind

मकान है यह हवा का मकान है। और क्या तुम मुझे नहीं पहचानते। मैं बोरिआ हूँ सब हवाओं की मॉ।"

"तो फिर अब मैं क्या करूँ। ओह मेरी प्यारी चाची। मेरी सहायता करो। अपने बेटों को मुझे मत खाने दो।"

आखिर बुढ़िया ने उसे एक बक्से में छिपा दिया और उससे कहा कि जब उसके बेटे आ जायें तो वह ज़रा सी भी आवाज न करे।

जल्दी ही एक बहुत ज़ोर की आवाज सुनायी दी। सब हवाऐं अपने घर लौट रही थीं। जैसे जैसे वे पास आती जा रही थीं वे और तेज़ होती जा रही थीं। पेड़ों और शाखाओं के टूटने की आवाजें सुनायी दे रही थी।

आखिर वे हवाऐं घर आ गयीं उन्होंने दरवाजा खोला और घर के अन्दर कदम रखा।

"नमस्ते मॉ।"

"खुश रहो बेटा।" मॉ ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

एक एक कर के सारी हवाऐं घर में आ गयीं। आखीर में जो हवा घुसी उसका नाम सिरोको[46] था। जैसे ही वे अन्दर घुसे तो उन्होंने पूछा कि अरे यह आदमी के मॉस की खुशबू कैसी है। यहॉ तो कोई ईसाई है।

[46] Sirocco – the youngest son of Borea.

मॉ बोली — "तुम भी कितने बड़े बेवकूफ हो। यहॉ आदमी के मॉस की खुशबू कहॉ है। तुम क्या समझते हो कि यहॉ आने की हिम्मत कौन करेगा। कौन अपनी ज़िन्दगी खतरे में डालेगा।"

पर उसके बेटों को विश्वास नहीं हुआ। खास कर के उस जिद्दी सिरोको को। लायनब्रूनो ने तो बस अपनी ज़िन्दगी भगवान के हाथों में सौंप दी थी। उसको महसूस हो रहा था कि मौत बस उसके पीछे ही खड़ी है।

उधर बोरिआ भी अपने बेटों को यह विश्वास दिलाने में सफल हो गयी थी कि वहॉ कोई आदमी नहीं था। बच्चों ने पूछा — "मॉ आज खाने के लिये क्या है। हम बहुत दूर की यात्रा कर के आये हैं हमें भूख लगी है।"

"आओ बच्चो। मैंने आज तुम्हारे लिये बहुत ही बढ़िया पोलेन्टा[47] बनाया है। जैसे ही वह बन कर तैयार हो जायेगा मैं उसे मेज पर लगा दूँगी।

अगले दिन बोरिआ ने अपने बेटों से कहा — "कल तुम लोग किसी आदमी के मॉस की खुशबू की बात कर रहे थे न। तो तुम मुझे बताओ कि अगर तुम्हें वाकई कोई आदमी दिखायी दे जाये तो तुम क्या करोगे।"

"अब। अब हम उसके साथ कुछ नहीं करेंगे। पर कल रात तो हम उसे फाड़ खा जाते।"

---

[47] Polenta is an Italian dish made from corn flour by boiling it.

"पर आज तुम लोग उसके साथ ऐसा कुछ नहीं करोगे। सचमुच?"

"सचमुच।"

"ठीक है अगर तुम मुझको सेंट जौन की कसम देते हो कि तुम उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचाओगे तो मैं तुम्हें एक ज़िन्दा आदमी दिखा सकती हूँ।"

उसके सब बेटे एक साथ बोले — "आदमी। ज़िन्दा आदमी। यहाँ। दिखाओ माँ। हम सेंट जौन की कसम खाते हैं कि हम उसको किसी तरह का कोई नुकसान नहीं पहुँचायेंगे। हम उसके सिर का एक बाल भी नहीं छुऐंगे।"

"तब लो यह देखो।" कह कर उसने बक्सा खोल दिया।

तुमने हवा की आवाजें तो सुनी हैं न। बस उन्हीं आवाजों के साथ वे उसके चारों तरफ घूमने लगीं। उन्होंने सबसे पहले यही पूछा कि वह वहाँ आया कैसे क्योंकि किसी भी आदमी का वहाँ आना नामुमकिन था।

लायनब्रूनो बोला — "यह केवल भगवान की इच्छा थी कि मेरी यात्रा वहाँ आ कर खत्म हुई है। मुझे परी कोलीन के महल जाना है। क्या आप लोगों में से कोई मुझे बता सकेगा कि वह कहाँ है।"

बोरिआ ने अपने सब बच्चों से पूछा तो उनको भी कुछ नहीं पता था। जब उसने अपने सबसे छोटे बेटे से पूछा — "बेटा सिरोको। क्या तुम उसके बारे में कुछ जानते हो।"

"मैं? क्या मुझे उसके बारे में कुछ मालूम नहीं होना चाहिये? मैं भी अपने भाइयों की तरह से ही हूँ जो छिपने की जगह नहीं जानते। परी कोलीना तो प्यार की मारी है। उसका कहना है कि उसके प्रेमी ने उसे धोखा दिया है। वह अपने दुख से इतनी दुबली हो गयी है कि बस वह कुछ दिन की ही मेहमान है।

और मुझे इस बात के लिये फाँसी लगा देनी चाहिये क्योंकि मैंने उसको इस हालत में देखा है और फिर भी उसे तंग किया है और उसे बहुत निराशा की हालत में धकेल दिया है।

मैंने उसके महल की खिड़की के पास बहुत शोर मचा कर बहुत आनन्द उठाया है। कई बार तो मैंने उसकी खिड़की भी खोल दी है और उसके कमरे में रखी चीज़ें उलट पुलट कर दी हैं। यहाँ तक कि वह पलंग भी जिस पर वह सोती है।"

लायनब्रूनो बोला — "ओ मेरे प्यारे सिरोको। मेरे अच्छे सिरोको। मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो। क्योंकि तुमने मुझे उसका समाचार सुनाया है तो मुझ पर इतनी कृपा और करो कि तुम मुझे उसके महल का रास्ता और दिखा दो।

मेरी शादी परी कोलीना से पक्की हो चुकी है। यह झूठ है कि मैंने कोलीना को धोखा दिया है। बल्कि अगर मैं उसको न पा सका तो मैं तो दुख के मारे मर ही जाऊँगा।"

सिरोको बोला — "मेरे बच्चे। मेरा काम इतना है कि मैं तुम्हें वहाँ ले जाऊँगा। हालाँकि मुझे तुम्हें अपनी गर्दन पर बिठा कर ले

जाना चाहिये पर मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं तो हवा हूँ तुम मेरी गर्दन पर से फिसल जाओगे। अगर तुम मेरी तरह होते तो यह मामला बहुत आसान होता।"

लायनब्रूनो बोला — "तुम उसकी चिन्ता न करो। तुम मुझे बस रास्ता दिखाते जाना मैं तुमसे पीछे नहीं रहूँगा।"

सिरोको ने अपने मन में कहा "लगता है यह पागल है।"

फिर बोला — "ठीक है अगर तुम अपने आपको इतना मजबूत समझते हो तो हम लोग कल सुबह चलने की कोशिश कर सकते हैं। अभी तो चल कर सोते हैं क्योंकि बहुत देर हो गयी है। भगवान ने चाहा तो हम कल जल्दी ही उठ कर चल देंगे।"

अगले दिन सिरोको बहुत जल्दी ही उठ गया और उसने लायनब्रूनो को उठाया — "लायनब्रूनो लायनब्रूनो उठो।"

लायनब्रूनो तुरन्त ही उठा और उसने जल्दी से अपने बूट पहने अपना बटुआ लिया ठीक से अपना शाल पहना और सिरोको के साथ चल दिया।

बाहर निकल कर सिरोको ने लायनब्रूनो से कहा कि देखो यह रास्ता है जो हमको लेना है। सँभाल कर। मुझे अपनी आँखों से ओझल मत होने देना बाकी मैं देख लूँगा। अगर सूरज छिपने के कुछ घंटे बाद मैं आज रात को तुम्हें वहाँ न पहुँचा दूँ तो तुम मुझे गधा कह सकते हो।"

वे चल दिये वे हवा की तरह भागने लगे। कुछ कुछ देर में सिरोको उसको पुकार लेता "लायनब्रूनो लायनब्रूनो" और वह जवाब देता "ऐसा नहीं सोचना कि मैं तुमसे पीछे रह जाऊँगा।"

ऐसे सवाल जवाब करते करते वे सूरज छिपने के दो घंटे बाद परी कोलीना के महल आ पहुँचे।

सिरोको बोला — "लो हम आ गये। यह तुम्हारी सुन्दर कोलीना का छज्जा है। अब देखो कि मैं तुम्हारे उसकी खिड़की कैसे खोलता हूँ। सावधान। जैसे ही मैं खिड़की खोलूँ तुम उसके अन्दर कूद जाना।"

और उसने ऐसा ही किया। इससे पहले कि नौकर लोग उस छज्जे की खिड़की बन्द करते वह उसके अन्दर जा चुका था। वह कोलीना के पलंग के नीचे छिप गया था।

बाद में परी की एक दासी ने कहा — "मालकिन। अब आपको कैसा लग रहा है। क्या आपको कुछ ज़्यादा अच्छा नहीं लग रहा है।"

परी कोलीना बोली — "ज़्यादा अच्छा? मैं तो अधमरी हो रही हूँ। इस कुटिल हवा ने तो मुझे मार ही डाला था।"

"पर मालकिन। आप आज शाम को कुछ नहीं खायेंगी क्या? थोड़ी सी चौकलेट या काफी या फिर मॉस का पानी।"

"नहीं मुझे कुछ नहीं खाना। मेरी बिल्कुल इच्छा नहीं है।"

"कुछ तो ले लीजिये। आपने तीन चार दिन से कुछ नहीं खाया है। सचमुच में आपको कुछ खाना चाहिये।"

दासी ने उससे इतनी जिद की कि उससे बचने के लिये उसने कहा — "ठीक है कुछ ले आना। अगर मेरी इच्छा होगी तो मैं खा लूँगी।"

उसकी दासी थोड़ी सी कौफी ले आयी और उसके पलंग के बराबर में सिरहाने की तरफ रख कर चली गयी।

लायनब्रूनो ने अपना शाल ओढ़ा हुआ था सो उसे कोई नहीं देख सकता था। वह पलंग के नीचे से निकला और उसने वह कौफी पी ली। उसके बाद दासी उसके लिये कुछ मॉस का पानी और एक कबूतर ले कर आयी।

वह बोली — "ओह भगवान का धन्यवाद है कि आपने कौफी और चौकलेट पी ली। अब यह मॉस का पानी और थोड़ा सा कबूतर और ले लें ताकि आपको थोड़ी ताकत आ जाये और आप कल और अच्छा महसूस करें।"

मालकिन ने यह सब सुन कर सोचा कि लगता है कि ये दासियॉ मिल कर उसका मजाक बना रही हैं उसने तो कोई कौफी और चौकलेट नहीं पी। सो वह बोली — "ओ बेवकूफ खरदिमागो। यह तुम लोग क्या कह रही हो। क्या कौफी और चौकलेट के गिलास अभी भी यहीं नहीं रखे हुए हैं। मैंने तो कुछ छुआ ही नहीं है।"

दासियों को लगा कि उनकी मालकिन का दिमाग कुछ खराब हो गया है। तब लायनब्रूनो ने अपना शाल उतार दिया और पलंग के नीचे से निकल आया और बोला — "ओ मेरी दुलहिन। क्या तुम मुझे जानती हो।"

परी कोलीना बोली — "ओह मेरे लायनब्रूनो तुम।" कह कर उसने लायनब्रूनो को अपने गले से लगा लिया। "तब यह सच नहीं है कि तुम मुझे भूल गये हो।"

"अगर मैं तुम्हें भूल गया होता तो मैं तुमको ढूँढने के लिये इतने कष्ट न सहता। पर यह तो बताओ कि क्या तुम मुझे अभी भी प्यार करती हो।"

परी बोली — "ओ लायनब्रूनो अगर मैं तुमसे प्यार नहीं करती तो तुम मुझे इस समय नहीं पा सकते थे। और अब तुम देख सकते हो कि बिल्कुल अच्छी हो गयी हूँ क्योंकि मैंने तुम्हें देख लिया है।"

फिर उन्होंने साथ साथ खाया पिया। नौकरों को बुलाया और उत्सव मनाया। अगले दिन उनकी शादी की तैयारियाँ की गयीं और धूमधाम से उनकी शादी मनायी गयी। शाम को बहुत बढ़िया नाच हुआ और दावत हुई जो देखने लायक थी।

यह कहानी यहॉ बहुत ही लोकप्रिय है और बहुत दिनों से लोगों में कही सुनी जाती रही है। पर इस कहानी का यह रूप हमने यहॉ इसलिये दिया है क्योंकि यह रूप ही लोगों मे कहा सुना जाता रहा है। इसी लिये हमने इसमें से इसका साहित्यिक रूप निकाल भी दिया है। ऐसी कई कहानियॉ इस अध्याय में शामिल की जा सकती हैं पर सबसे अच्छी और जानी पहचानी कहानी हमने यहॉ दे दी है जो इटली के "बहुत लोकप्रिय साहित्य" से सम्बन्धित है।

अध्याय 3ः ओरिऐन्ट की कहानियॉ

मध्य कालीन युग में इटली की भौगोलिक स्थिति और उसके दूसरे देशों से व्यापारिक सम्बन्धों की वजह से इसके साहित्य में विदेशी साहित्य भी जुड़ गया है। यह विदेशी तत्व ओरिऐन्टल है जो या तो सीधे सीधे पूर्व के लोगों से मिलने पर शामिल हुआ है या फिर पहले स्पेन और फिर वहॉ से फ्रांस से इटली आया है। हालॉकि यह ओरिऐन्टल तत्व वहॉ बहुत लोकप्रिय है पर यह आया साहित्य से ही है। ये कहानियॉ यूरोप की लगभग सारी भाषाओं में अनुवाद की जा चुकी हैं। इनमें कुछ कहानियॉ फ्रांस से ली गयी हैं। कुछ कहानियॉ इसमें पैन्टामिरोन और स्ट्रापरोला की रातें[48] से ली गयी है।

इस भाग में केवल वही कहानियॉ दे गयी हैं जिनमें किसी बात का कोई शक नहीं है। आसानी के लिये इसकी कुछ कहानियॉ अध्याय 6 में भी दी गयी हैं। इस तरह की पहली कहानी लाफ़ौन्टेन, 9–1 है जिसका केवल एक ही इटैलियन रूप मिलता है – जियूसैप्पे पित्रे[49] का।

[48] Both Pentamerone (by Giambattista Basile, 1634) and Straparola's Nights (by Straparola, 1550) are available in Hindi translated by Sushma Gupta.

[49] Lafontaine (IX, I). The only Italian version is from Giuseppe Pitre. (Tale No 194).

37 किसान और मालिक[50]

एक बार की बात है कि एक किसान अपने खेत वाले घर में बैठ कर अपने मालिक और कुछ दूसरे लोगों से भेड़ों और चीज़ के बारे में बात कर रहा था कि किसी ने उसे कुछ चीज़ दी थी पर वह सब चूहे खा गये।"

तो मालिक ने जो अमीर था घमंडी था और मोटा था उसे बेवकूफ कहा और कहा कि यह चूहों के बस की बात नहीं थी। वहॉ और जितने लोग भी मौजूद थे उन्होंने मालिक की बात के लिये हॉ की और किसान को गलत बताया। अब वह बेचारा गरीब आदमी क्या कहता। बात से बात बनती है।

कुछ समय बाद मालिक ने कहा कि अगर हलों को तेल लगा दिया जाये तो उनको जंग लगने से बचाया जा सकता है। चूहों ने उसको खा लिया है।

किसान बोला — "पर मालिक यह कैसे सम्भव है कि चूहे मेरी चीज़ नहीं खा सकते जबकि आपके हल की नोकें खा सकते हैं।"

पर मालिक और दूसरे लोगों ने कहना शुरू किया — "ओ बेवकूफ तुम चुप रहो। ओ बेवकूफ तुम चुप रहो। मालिक ठीक कहते हैं।"[51]

[50] The Peasant and the Master. Tale No 37.

[51] This story belongs to fables of Oriental origin which have joined Italian collections.

पंचतन्त्र में यह कहानी कुछ इस तरह दी हुई है —

एक सौदागर अपनी कुछ तराजुऐं अपने पड़ोसी के पास रखवा देता है। जब वह उनको वापस चाहता है तो वह पड़ोसी कहता है कि उनको तो चूहे खा गये। सौदागर बेचारा चुप रह जाता है।

कुछ दिनों बाद वह अपने उसी पड़ोसी से अपने नहाने में सहायता करने के लिये उसका बेटा मॉगता है। नहाने के बाद सौदागर पड़ोसी के बेटे को एक गुफा में बन्द कर देता है। बाद में जब उसका पिता सौदागर से अपने बेटे के बारे में पूछता है तो वह कहता है कि उसे तो बाज़ पकड़ कर ले गया। तब पड़ोसी चिल्लाता है — "तू झूठा है। एक बाज़ एक लड़के को कैसे ले जा सकता है।"

तो सौदागर कहता है — "अगर एक बाज़ लड़के को पकड़ कर नहीं ले जा सकता तो मेरी तराजू को भी चूहे नहीं खा सकते। इसलिये अगर तुझे अपना बेटा चाहिये तो पहले मेरी तराजू दे।"

38 कृतघ्न[52]

एक बार की बात है कि एक आदमी था जो जंगल में लकड़ी इकट्ठी करने गया। वहॉ उसने एक सॉप देखा जो एक पत्थर के नीचे आ कर कुचल गया था। उसने अपनी कुल्हाड़ी की सहायता से वह बड़ा पत्थर उठाया तो सॉप रेंग कर बाहर आ गया।

जब वह थोड़ी देर बाहर पड़ा रहा तब वह बोला — "मैं तुम्हें खाना चाहता हूॅ।"

आदमी बोला — "आराम से। पहले हम किसी से इस बात का फैसला करा लें कि मेरी तुम्हारी सहायता करने के बाद तुम मुझे खा सकते हो या नहीं और अगर इसमें मेरी कोई गलती हो तब तुम मुझे खा लेना।"

सो पहला जज जो उनको मिला वह था घोड़ा। वह बिल्कुल डंडी जितना पतला था और एक ओक के पेड़ से बॅधा हुआ था। जहॉ तक उसका मुॅह जाता था वहॉ तक तो उसने पेड़ की पत्तियॉ खा ली थीं क्योंकि वह भूखा था।

सॉप ने उस घोड़े से पूछा — "क्या यह ठीक है कि मैं इस आदमी को खा लूॅ जिसने मेरी जान बचायी है।"

[52] The Ingrates. Tale No 38. By Domenieco Comparetti. (Tale No 67).

घोड़ा बोला — "अरे यह तो ठीक से भी ज़्यादा है। ज़रा मुझे देखो। मैं एक बहुत ही अच्छा घोड़ा था। मैं अपने मालिक को कई साल तक कहॉ कहॉ ले कर नहीं गया। और अब मुझे क्या मिला।

अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ और मैं कुछ नहीं कर सकता तो उन्होंने मुझे यहॉ इस ओक के पेड़ से बॉध दिया है। कुछ पत्ते खाने के बाद मैं मर जाऊँगा।

तुम इस आदमी को खा लो क्योंकि जो लोग अच्छा करते हैं उन्हें कोई इनाम नहीं मिलता और जो बुरा करते हैं उनको अच्छा इनाम मिलता है। खा लो इससे तुम आज यह एक अच्छा काम करोगे।"

उसके बाद उनको एक शहतूत का पेड़ मिला। उसके अन्दर छेद ही छेद हो रहे थे क्योंकि वह बहुत बूढ़ा हो गया था। सॉप ने उससे भी पूछा कि क्या यह ठीक था कि वह उस आदमी को खा ले जिसने उसकी जान बचायी हो।

पेड़ तुरन्त ही बोला — "हॉ बिल्कुल। मैंने अपने मालिक को कितनी सारी पत्तियॉ दी हैं उसके रेशम के कीड़ों को खाने के लिये जिससे उसने बहुत ही बढ़िया किस्म के कीड़े पैदा किये हैं। पर देखो अब जब में सीधा खड़ा नहीं हो सकता तो मेरा मालिक कहता है कि वह मुझे आग में डलवा देगा। तुम इसे खा जाओ ऐसा कर के तुम बहुत अच्छा करोगे।"

उसके बाद उनको एक लोमड़ी मिली। आदमी उसको एक तरफ को ले गया और उससे विनती की कि वह उसकी तरफ ही बोले। लोमड़ी ने कहा कि अपना फैसला देने से पहले वह यह मामला खुद देखेगी कि सॉप को कैसे बचाया गया था।

सो वे तीनों उसी जगह पर वापस लौटे जहॉ यह घटना हुई थी और आ कर सब कुछ वैसा ही कर दिया जैसा इस घटना होने से पहले था। पर जैसे ही आदमी ने सॉप पत्थर के नीचे देखा तो चिल्लाया — "तुम जहॉ हो मैं तुम्हें वहीं छोड़ता हूॅ।"

और फिर सॉप वहीं रहा।

अब लोमड़ी इस फैसला करने के लिये एक थैला भर कर मुर्गियॉ चाह रही थी तो आदमी ने उसे वे अगली सुबह देने का वायदा किया। तो लोमड़ी अगली सुबह अपनी मुर्गियॉ लेने के लिये आदमी के घर पहुॅची।

आदमी ने पहले ही कुछ कुत्ते एक थैले में भर कर रखे हुए थे सो उसने वह थैला उसको पकड़ा दिया और उससे कहा कि वह उन मुर्गियों को वहॉ से कहीं दूर ले जा कर खाये क्योंकि उसके शोर से घर की मालकिन को पता लग सकता था कि उसकी मुर्गियॉ लोमड़ी को दे दी गयी हैं और वह यह नहीं चाहता।

सो लोमड़ी ने उस थैले को वहीं नहीं खोला और उसको ले कर कुछ दूर चली गयी। दूर एक घाटी में पहुॅच कर उसने वह थैला

खोला तो लो उसमें तो मुर्गियों की बजाय कुत्ते थे जैसे ही वे कुत्ते बाहर निकले उस लोमड़ी को खा गये।

यही दुनियॉ है कि जो भलाई करता है उसको नुकसान होता है और जो बुरा काम करता है उसको इनाम मिलता है।

यही कहानी जियूसैप्पै पित्रे की नम्बर **273** कहानी भी है – "आदमी सॉप और लोमड़ी"। गौन्ज़ैनबाक की नम्बर **69** कहानी भी है – "शेर घोड़ा और लोमड़ी"। इसका एक रूप मोरोसी में भी पाया जाता है वही हम यहॉ आगे दे रहे हैं।[53] यह कहानी इस पुस्तक में आगे कहानी नम्बर **49** है – "आदमी सॉप और लोमड़ी"।

[53] Similar stories can be found – by Giuseppe Pitre. (Tale No 273), "The Man the Snake and the Fox". Another one by Laura Gonzenbach, (Tale No 69), "The Lion the Horse and the Fox". Its third version from Morosi is given here in the last as Tale No 49 – "The Man the Serpent and the Fox".

यह एक बहुत ही बड़े आश्चर्य की बात होती अगर हमारे यहॉ की कहानियों में "**1001** रातों की कहानियॉ" हिली मिली नहीं होती तो। यह बताना तो लगभग असम्भव सा है कि वे कहानियॉ लोगो को साहित्यिक स्रोतों से मिलीं या फिर वे अकेली अकेली कहानियॉ इटली में केवल कह सुन कर ही आ गयीं।[54] बहुत दिनों तक तो लोग इन कहानियों को अपनी कहानियॉ समझते रहे और जैसे चाहे बदलते रहे। दूसरी कहानियों में घटी घटनाऐं उनमें जोड़ते रहे जब तक कि वे मूल कहानियों से बिल्कुल ही नहीं बदल गयीं।

उदाहरण के लिये "अलादीन और आश्चर्यजनक चिराग"[55] वाली कहानी सिसिली से ले कर लोम्बार्डी[56] तक पायी जाती है पर उसके किसी भी एक रूप में उसकी सारी घटनाऐं नहीं मिलतीं। सिसिली के एक रूप में जो मसीना में कहा सुना जाता है अलादीन अपना चिराग नहीं खोता। सिसिली के ही पलेरमो वाले रूप में अलादीन के चिराग के खो जाने के बाद वह उसकी खोज में जाता है तो रास्ते में एक चींटी एक गरुड़ और एक शेर की लड़ाई का निपटारा करता है जिससे खुश हो कर वे उसको अपनी अपनी ताकत देते हैं कि वह फिर उनके जैसा बन सकता था। अन्त में वह जादूगर को ढूँढ लेता है जिसकी ज़िन्दगी उसके शरीर से बाहर कहीं छिपी रहती है। उसको बड़ी ही बुरी हालत में मारा जाता है।

इसके रोम में कहे सुने जाने रूप में अलादीन के महल की खिड़की के खत्म न होने की बात नहीं बतायी गयी है। जादूगर को मारना जरूरी है जैसा कि पलेरमो में कहे सुने जाने रूप में पाया जाता है। बल्कि कुछ और भी ऐसी घटनायें हैं जो ओरिऐन्ट के मूल रूप में नहीं पायी जातीं।

मैन्टुआन[57] में कहे सुने जाने वाले रूप में चिराग का कहीं जिक ही नहीं है बल्कि उसमें एक जंग लगी अॅगूठी है जिसे सबसे छोटा भाई एक मरे हुए मुर्गे में पाता है जिसे उनके पिता ने उसके तीनों भाइयों को दिया था। जब वह अॅगूठी जादूगर के पास आ जाती है और महल गायब हो जाता है तो हीरो उसकी पत्नी और अंगूठी को ढूँढने जाता है। रास्ते में मछलियों का राजा और चिड़ियों का राजा उसकी सहायता करते हैं।

गरुड़ कैदी राजकुमारी के लिये एक चिट्ठी ले कर जाता है जो जादूगर से अॅगूठी ले लेती है और उसे एक पत्थर पर घिसती है और जब वह पूछता है कि उसकी क्या इच्छा है तो वह

---

[54] Individual stories of One Thousand and One Nights were long before common in Italy than their collection when they were first translated n French 1704-1717

[55] Aladdin and the Wonderful Lamp – a 1001 Nights story.

[56] From Sicily to Lombardy

[57] Mantuan

कहती है कि वह चाहती है कि वह महल वहीं पहुॅच जाये जहॉ पहले था और जादूगर समुद्र में डूब जाये।

इसी कहानी के बराबर की लोकप्रियता की एक और कहानी है और वह है "अली बाबा और चालीस चोर"। इटली में जो इसके रूप मिलते है उनमें इस नम्बर को **40** के बजाय **13** या **12** या **6** कर दिया गया है। जियूसैप्पै पित्रे में जो रूप इसके दिये हैं उन सबमें केवल एक ही घटना मिलती जुलती है – तेल के डिब्बों में चोरों का पहचाना जाना और उनके ऊपर उबलते हुए तेल का डाल कर उनका मारा जाना।

जियूसैप्पै पित्रे के दिये हुए एक रूप में चोर कोयले के थैलों में छिप जाते हैं और चालाक लड़की उनको गर्म लाल लोहे की सलाखों से बींध देती है। एक दूसरे रूप में चोर तेल से भरी हुई खालों में छिप जाते हैं और उनको किसी कौनवैन्ट की ननों की सरदार को तेल के लिये बेच दिया जाता है। एक नन को कुछ शक होता है तो वह अपनी साथिनों को उनको गर्म लाल लोहे की सलाखों से हल्का सा मारने के लिये बुलाती है।

सिसिली में कहे सुने जाने वाले एक दूसरे रूप में[58] अरब की इस कहानी का केवल पहला हिस्सा मौजूद है कि डाकुओं की गुफा किसी खास शब्द के कहे जाने से खुलती है – "दरवाजा खुल जा" और "दरवाज बन्द हो जा"। इस कहानी का अन्त एक भाई के मर जाने से होता है जो गुफा में घुस तो गया था पर वहॉ एक डाकू के हाथ मारा गया था जो वहीं रह गया था।

यह केवल मैन्टुआ[59] में कहे सुने जाने वाले रूप में ही है कि इसमें पूरी कहानी दी गयी है। चोरों को मारने के लिये तेल की बजाय उबलता हुआ पानी इस्तेमाल किया गया है। बाद में नौकरानी चोरों के सरदार को मार देती है।

"तीसरे कलन्दर"[60] की कहानी को डोमैनीको कौम्पारैत्ती ने अपनी कहानी "फ्रांस के राजा का बेटा" में विस्तार से प्रस्तुत किया है।

"दो ईर्ष्यालु बहिनें"[61] कहानी में कई कहानियों की घटनाऐं शामिल हैं।

"कुबड़े की कहानी"[62] जियूसैप्पै पित्रे और स्ट्रापरोला की कहानियों में मिलती है।

---

[58] Laura Gonzenbach. (Tale No 79). "The Story of the Twelve Robbers"

[59] Mantua is a place. This version, "The Cunning Maid", Tale No 7, by Visentini is the complete story.

[60] The Story of the Third Qalandar" is told in detail in Comparetti, Tale No 65, "The Son of the King of France

[61] "Two Envious Sisters"

[62] "The Story of the Hunchback"

"गधा बैल और किसान"[63] की कहानी जो वज़ीर अपनी बेटी को सुलतान से शादी करने से रोकने के लिये सुनाता है जियूसैप्पे पित्रे की कहानियों में पायी जाती है और स्ट्रापरोला की कहानियों में भी।

"शाहज़ादा अहमद और परी परीबानू" की सुन्दर कहानी नैरूकी की लिखी हुई कहानियों में पायी जाती है[64] – "तीन भेटें या कालीनों की कहानी"। इसमें तीन भेंटें हैं – जादुई दूरबीन जो कितनी भी दूर का दिखा सकती है, जादुई कालीन जो हवा में उड़ा कर कहीं भी ले जा सकता है और जादुई अंगूर जो मुर्दे में भी जान डाल सकते हैं। इटली में कहा सुना जाने वाला इसका रूप इसके मूल ओरिऐन्ट रूप से काफी मिलता जुलता है।

ऐसा ही कुछ उसी संग्रह की एक और दूसरी कहानी के बारे में भी कहा जा सकता है जो नम्बर **48** है "तुरीन का एक यात्री"[65] जो "सिन्दबाद की चौथी समुद्री यात्रा" ही है।

अरेबियन नाइट्स की आखिरी कहानी हम यहॉ बतायेंगे "द सैकंड रौयल मैन्डीकैन्ट" की है जिसे डोमैनीको कौम्पारैत्ती ने "मेरी खुशी" के नाम से दिया है।[66] जादूगर शैतान है और यह कहानी यहॉ खत्म होती है जहॉ किसान का बेटा शैतान को जो मुर्गी के रूप में है मार डालता है। और यही कारण है कि वह कहता है कि अब कोई शैतान नहीं है।

ओरिऐन्ट की कहानियों का पहला संग्रह यूरोप में **1106** से पहले ही बनाया गया था।[67] इस संग्रह की एक कहानी इटैलियन साहित्य में पायी जाती है।[68]

इस संग्रह की एक कहानी में – एक शहर के दो नागरिक साथ साथ मक्का जा रहे थे। रास्ते में उनके पास खाने की इतनी कमी हो गयी कि उनके पास बस केवल एक रोटी का आटा ही बचा था। दोनों नागरिकों ने एक गॉव वाले को उसके हिस्से की रोटी लेने के लिये उसको धोखा देने के लिये यह स्कीम बनायी।

---

[63] "The Ass the Ox and the Peasant" Giuseppe Pitre's story entitled "The Curious Wife", (Tale No 282). And is also found in Straparola's (Day 12, Tale No 3).

[64] Nerucci. "The Three Presents, or the Story of the Carpets". (Tale No 40). The same story is given "Folktales of Italy" by Italo Calvino, Translated by George Martin. 1980. Tale No 65. entitled "Salmanna Grapes"

[65] "A Trveller from Turin" in Nerucci's collection. (Tale No 48).

[66] "The Second Royal Mendicant" story given by Domenieco Comparetti under the title "My Happiness", (Tale No 63).

[67] The collection was "Disciplinia Clericalis", means "Teachings for Clerks or Clergymen". By a Spanish Petrus Alphonsi

[68] This is the story, Giuseppe Pitre (Tale No 138) "The Treasure"

जब रोटी पक रही थी तो उन्होंने एक दूसरे को यह सलाह दी कि जब तक रोटी पकती है तब तक सो लिया जाये। और फिर जिसका सपना सबसे अच्छा हो वही वह सारी रोटी ले ले। जब वे नागरिक सो रहे थे तो गॉव वाला जिसने उनकी स्कीम कुछ कुछ भॉप ली थी उठा और आधी पकी रोटी खा कर फिर से सो गया।

दोनों नागरिकों में से एक ने हड़बड़ाते हुए उठाने का बहाना किया और बताया कि उसने सपना देखा कि दो देवदूत उसको स्वर्ग के दरवाजे की तरफ भगवान के सामने लिये जा रहे थे। दूसरे नागरिक ने बताया कि दो देवदूत उसे पकड़े हुए नरक में ले जा रहे थे। गॉव वाले ने यह सब सुन फिर भी उसने सोने का बहाना किया। जब उसके साथियों ने उसे जगाया तो वह आश्चर्य से बोला — "अरे यह मुझे कौन बुला रहे हैं।"

तो दोनो बोले — "हम हैं तुम्हारे साथी।"

वह बोला — "क्या तुम लोग वहॉ से वापस आ गये।"

"हमको कहॉ जाना था और कहॉ से वापस आना था।"

गॉव वाला बोला — "अरे मुझे तो लगा कि तुममें से एक को तो दो देवदूत स्वर्ग ले गये और दूसरे को नरक ले गये सो मैंने सोचा कि अब तो तुम लोग वापस आने वाले नहीं हो सो मैंने सारी रोटी खा ली।

यही कहानी जियूसैप्पै पित्रे ने भी लिखी है[69]। वह लिखता है कि एक साधु था जो बहुत ही अच्छा टीचर था। वह अपनी यात्रा पर अपने एक बहुत ही चालाक आदमी को ले कर गया। एक दिन साधु को किसी ने कोई मछली भेंट की। उसने चाहा कि वह अकेला ही उसे खा ले सो उसने अपने साथी से कह कि जो कोई सबसे अच्छा सपना देखेगा उसको सारी मछली मिल जायेगी। सपने और परिणाम दोनों वही हैं जो मूल कहानी में हैं।

इटली के "डिसीप्लीन क्लैरीकैलिस" में एक कहानी और है — "एक राजा के पास एक कहानी सुनाने वाला है जो उसे पॉच कहानियॉ रोज सुनाता है। एक दिन ऐसा होता है कि राजा अपने राज्य के काम से दुखी हो जाता है और सो नहीं पाता तो वह अपने कहानी सुनाने वाले से पात्व से ज़्यादा कहानी सुनाने के लिये कहता है। कहानी सुनाने वाला तीन छोटी छोटी कहानियॉ उसे और सुनाता है। राजा फिर भी और कहानियॉ सुनना चाहता है पर कहानी सुनाने वाला कुछ आनाकानी करता है तो राजा कहता है — "तुमने मुझे बहुत छोटी छोटी कहानियॉ सुनायीं मुझे कोई लम्बी कहानी सुननी है। फिर उसके बाद तुम सोने जा सकते हो।

तब कहानी कहने वाला यह कहानी सुनाता है —

---

[69] Giuseppe Pitre. (Tale No 173).

"एक बार की बात है कि शहरी बाजार गया और उसने **2000** भेड़ें खरीदीं। जब वह घर वापस आ रहा था तो नदी में बाढ़ आ गयी थी सो वह किसी भी तरह नदी पार नहीं कर सका। अब वह कोई ऐसा रास्ता ढूँढने लगा जिससे वह उस नदी को पार कर सके। कहीं एक जगह उसको एक छोटी सी नाव मिल गयी जिस में वह केवल दो भेड़ें रख कर ले जा सकता था। यह कहानी कहने के बाद कहानी कहने वाला सोने चला गया। राजा ने उसे उठाया और उससे वह कहानी खत्म करने के लिये कहा जो उसने शुरू की थी।

तो कहानी कहने वाले ने कहा — "सरकार। बाढ़ बहुत बड़ी है। नाव बहुत छोटी है। और उसके पास बहुत सारी भेड़ें हैं। पहले उस आदमी को नदी पार कर लेने दीजिये तभी तो मैं आगे कहानी सुना सकता हूँ।"

जियूसैप्पे पित्रे ने जो ऐसी कहानी लिखी है उसमें इन सब कड़ियों का अभाव है फिर भी हम वह कहानी यहाँ दे रहे हैं क्योंकि वह बहुत छोटी है —

39 खजाना[70]

एक बार की बात है कि एक राजकुमार था जो खूब पढ़ा लिखा और साथ में उसने जादू भी सीखा। उसने छिपे हुए खजाने का पता लगाना भी सीखा। एक बार उसने एक छिपे हुए खजाने का पता लगाया। उसने सोचा कि अब वह उसे निकालने जायेगा।[71]

पर उसको निकालने के लिये यह बहुत जरूरी था कि 10 मिलियन चींटियॉ किसी गिरी के आधे छिलके में बैठ कर एक एक कर के एक नदी को पार करें। राजकुमार ने गिरी के आधे छिलके में एक चींटी बिठायी और उसे नदी में उतार दिया।

पहले एक फिर दूसरा फिर तीसरा फिर चौथा... इस तरह से वह अभी भी गिरी के आधे छिलके में एक चींटी को बिठा कर नदी पार करवा रहा है।"

यहॉ कहानी कहने वाला रुक जाता है और कहता है कि इसके आगे अब वह कहानी तब सुनायेगा जब सारी चींटियॉ नदी पार कर लेंगी।

[70] The Treasure. Tale No 39. By Giuseppe Pitre. (Tale No 138).

[71] The most famous buried treasure was that of Ddisisa, a hill containing cave whose summit is crowned by the ruins of an Arab castle. This treasure is mentioned in Pitre's Tale No 230 "The Treasue of Ddisisa where elaborate directions are given to find it.

40 गड़रिया[72]

यह कहानी मिलान में कही सुनी जाने वाली कहानी है। यह इससे पहली कहानी से और भी ज़्यादा छोटी है।

एक बार की बात है कि एक गड़रिया था जो अपनी भेड़ें चराने के लिये मैदानों में ले गया। बीच में उसको एक नदी पार करनी थी सो वह उनको एक एक कर के गोद में उठा कर नदी पार कराने लगा।

फिर उसके बाद क्या हुआ।

कुछ नहीं अभी वह उन्हें नदी पार करा रहा है। जब उसकी सारी भेड़ें उस पार पहुँच जायेंगी तभी मैं आगे की कहानी बता सकूँगा।

[72] The Shepherd. Tale No 40.

41 तीन चेतावनियाँ[73]

एक बार एक आदमी ने विदेश के लिये अपना देश छोड़ने का सोचा। वह बाहर जा कर एक ऐबौट[74] की सेवा में लग गया। जब कुछ समय तक उसने उसकी बड़ी वफादारी से सेवा कर ली तो उसने अपनी पत्नी और अपने देश को देखने की इच्छा प्रगट की।

उसने ऐबौट से कहा — "सर। मैंने आपकी इतने समय तक सेवा की है पर अब मैं अपने देश जाना चाहता हूँ।"

ऐबौट बोला — "ठीक है मेरे बच्चे। खुशी से जाओ। पर जाने से पहले मैं तुम्हें **300** औंस देना चाहता हूँ जो मैंने तुम्हारे लिये रखे हुए हैं।"

आदमी बोला — "मैं केवल तीन चेतावनियों से ही सन्तुष्ट हो जाऊँगा।"

ऐबौट बोला — "तब सुनो। पहली बात जब कभी तुम अपना पुराना रास्ता छोड़ कर नया रास्ता अपनाने की सोचो तब तुमको मुश्किलें तो जरूर मिलेंगी जिनके बारे में तुमने कभी सोचा नहीं था। दूसरी चेतावनी यह है कि "देखो ज़्यादा बोलो कम।" तीसरी चेतावनी यह है कि जब तुम कोई काम करो तो पहले उसके ऊपर सोच लो क्योंकि सोच कर किया गया काम ही ठीक होता है।

---

[73] The Three Admonitions. Tale No 41. This is the last story to be given here from Giuseppe Pitre's collection "Disciplina Clericalis" – (Tale No 197).

[74] An Abbot is the Head of a Monastery.

और लो यह डबल रोटी लो इसको तुम तब काटना जब तुम बहुत खुश हो।"

भला आदमी वहॉ से चल दिया। रास्ते में उसको कुछ और यात्री मिले। उन्होंने कहा — "हम लोग यह छोटा रास्ता ले रहे हैं क्या तुम भी हमारे साथ चलना पसन्द करोगे।"

तभी उसको अपने मालिक की तीन चेतावनियॉ याद आ गयीं तो वह बोला — "नहीं दोस्तों। मैं अपने ही रास्ते जाना ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

जब वह आदमी आधे रास्ते चला गया तो उसे बड़े ज़ोर का शोर सुनायी दिया। उसको कुछ गोलियों की आवाजें भी सुनायी दीं। उसके मुँह से तुरन्त ही निकला "लो मैंने **100** औंस तो कमा ही लिये।"

उसके साथियों को रास्ते में कुछ डाकू मिल गये थे और उन्होंने उन्हें लूट कर मार दिया था। वह आगे चला।

रात होने पर उसने एक सराय की खोज की और बहुत भूख की हालत में वहॉ पहुँचा। उसके सामने मॉस की एक बहुत बड़ी प्लेट लायी गयी। उसे ऐसा लगा जैसे कि वह कह रही हो "मुझे खा लो मुझे खा लो।"

उसने उसमें अपना कॉटा घुसाया तो उसके तो होश उड़ गये। वह तो आदमी का मॉस था। वह पूछना चाहता था कि ऐसा मॉस उसको परसने का क्या मतलब था। वह उससे कुछ बुरा कहने ही

वाला था पर फिर उसे अपने मालिक की दूसरी चेतावनी याद आ गयी "देखो ज़्यादा बोलो कम।" सो वह चुप रह गया।

सराय का मालिक आया उसने उसको बिल दिया और उससे विदा ले कर चला गया। पर सराय के मालिक ने पीछे से रोक कर कहा — "भले आदमी तुमने इस खाने के बारे में न पूछ कर अपनी जान बचा ली। जो कोई भी मुझसे ऐसे खाने के बारे में कुछ पूछता था मैं उसको मार डालता था और फिर पका देता था।"

भले आदमी ने कहा "ओह तो यह तो मैंने दूसरे 100 औंस बचा लिये।" उसको अभी भी यही लग रहा था कि वह वहॉ सुरक्षित नहीं है।

यहॉ से वह फिर आगे चला तो अपने शहर पहुॅच गया। वहॉ उसको अपना मकान याद था सो वह उसमें चुपके से घुस गया। उसने वहॉ चारों तरफ देखा पर वहॉ कोई नहीं था। केवल एक मेज पर दो लोगां का खाना लगा हुआ था – दो गिलास दो प्लेट दो कॉटे दो कुर्सियॉ यानी दो का खाना।

वह सोचने लगा कि वह तो अपनी पत्नी को अकेला छोड़ कर गया था तो फिर यह मेज दो के लिये क्यों। जरूर कुछ गड़बड़ है। सो वह पलंग के नीचे छिप गया और देखने लगा कि अब आगे क्या होता है।

पल भर बाद ही उसकी पत्नी कमरे में घुसी जो बाहर से एक घड़ा पानी भरने गयी थी। उसके आने के कुछ पल बाद ही एक

नौजवान पादरी कमरे में घुसा और आ कर खाने वाली मेज पर बैठ गया।

उसको देखते ही उसने सोचा "अच्छा तो यह है वह।"

वह पलंग के नीचे से निकल कर अभी उसकी पिटायी करने ही वाला था पर तभी उसके दिमाग में ऐबौट की तीसरी चेतावनी आयी – "कुछ करने से पहले सोच लो क्योंकि कुछ सोच कर किया गया काम करना ही ठीक रहता है।" सो वह रुक गया।

इतने में उसकी पत्नी आयी और उस नौजवान पादरी से बोली — "आओ बेटे। पहले हम तुम्हारे पिता के लिये प्रार्थना कर लें।"

जब उसने यह सुना तो वह रोते हॅसते पलंग के नीचे से निकल आया और दोनों को गले लगा लिया। वे लोग भी उससे मिल कर बहुत खुश हुए।

इस खुशी के मौके पर उसको अपने मालिक की दी हुई डबल रोटी की याद आयी तो उसने वह डबल रोटी निकाली और उसको मेज पर रख कर काटा तो लो उसमें से तो सारे के सारे **300** औंस निकल पड़े जो उसके मालिक ने उससे छिपा कर उसमें रख दिये थे।

42 मैं बागीचा था और मैं बागीचा हूँ[75]

अब हम एक और तरह की कहानियों की तरफ चलते हैं जो हमने एक ऐसे संग्रह से ली हैं जो पहले वाले संग्रहों से कहीं ज़्यादा मशहूर है और वह संग्रह है "सात अक्लमन्द मास्टर्स"। मध्य कालीन युग में यह संग्रह केवल बाइबिल से दूसरे नम्बर पर आता था। इस संग्रह के इटैलियन भाषा में कई अनुवाद हो चुके हैं जो 14वीं सदी तक जाते हैं। इस संग्रह में से एक कहानी इटली की लोकप्रिय कहानियों में आ कर मिल गयी।

इसकी पहली कहानी जो हम अभी देंगे इसलिये मजेदार है क्योंकि यह सम्राट फ़ैडैरिक द्वितीय के मन्त्री पीयर डैले विग्ने से सम्बन्धित है। यहाँ इसका वेनिस में कहा सुना जाने वाला रूप दिया जा रहा है।

एक बार की बात है कि एक राजा था जो शादी के बहुत खिलाफ था। उसने अपने नौकर को भी अकेले ही रहने के लिये कहा। एक बार नौकर ने एक बहुत सुन्दर लड़की विग्ना[76] को देखा तो उसने उससे छिप कर शादी कर ली।

हालाँकि उसने उसको अपने घर में ही बन्द रखा पर राजा को शक हो गया तो उसने उसे एक विदेशी राजदूत बना कर बाहर भेज दिया और उसके जाने के बाद उसके घर गया तो उसने देखा कि उसकी पत्नी वहाँ सो रही थी।

उसने उसको तो परेशान नहीं किया पर जब वह वहाँ से बाहर आ रहा था तो अनजाने में उससे उसका एक दस्ताना उसके बिस्तर

[75] Vineyard I Was Vineyard I am. Tale No 42.
[76] Vigna – the girl

पर रह गया। जब उसका पति वापस आया तो उसने देखा कि उसकी पत्नी के बिस्तर पर किसी का दस्ताना पड़ा हुआ था।

वह यह देख कर चुप तो रहा मगर वह उसे प्यार न कर सका। उसने सोचा कि उसकी पत्नी बेवफा है।

उधर राजा उस लड़की को देख कर उसे चाहने लगा था। उसने उसको फिर से देखना चाहा सो उसने एक दावत का इन्तजाम किया। उसमें उसने अपने मन्त्री को आने की दावत दी और उससे अपनी पत्नी को भी लाने के लिये कहा।

पर उसका यह कहना बेकार गया कि "मेरे तो कोई पत्नी ही नहीं है।" सो उसको आखिर उसे दावत में लाना ही पड़ा। अब वहॉ दावत में तो सभी लोग खूब बातें कर रहे थे पर मन्त्री की पत्नी बिल्कुल चुप थी।

राजा ने उसे इतना चुप देखा तो उससे पूछा कि वह इतनी चुप क्यों है तो उसने एक पहेली में उसे जवाब दिया —

बागीचा मैं थी बागीचा मैं रहूँगी
मुझे प्यार किया गया पर अब नहीं करता
मुझे नहीं मालूम कि इसकी क्या वजह है
कि इस बागीचे ने अपना मौसम खो दिया है

उसके पति ने जब यह सुना तो उसने जवाब दिया —

तू बागीचा थी तू बागीचा है
तुझे प्यार किया गया पर अब तुझे प्यार नहीं करता
बागीचे का मौसम शेर के पंजे की वजह से खो गया है

राजा ने इसका मतलब समझ लिया सो वह बोला —
मैं बागीचे में गया मैंने उसकी पत्तियॉ छुईं
पर मुझे अपने ताज की कसम कि मैंने फल नहीं चखा

यह सुन कर मन्त्री समझ गया कि उसकी पत्नी बेकुसूर थी। फिर उन दोनों की आपस में सुलह हो गयी। उसके बाद वे आपस में खुश और सन्तुष्ट रहे।

यह कहानी केवल हिब्रू और ग्रीक भाषा में लिखी गयी "सात अक्लमन्द मास्टर्स" और अरबी में लिखी "सात वज़ीर" पुस्तकों में ही मिलती है। यह किसी भी पश्चिमी भाषा में लिखी गयी पुस्तक में नहीं मिलती हालॉकि बोकाकियो[77] को इस कहानी का पता था। उसकी डैकामिरोन में उसके 5वें दिन की पहली कहानी इसी कहानी पर आधारित है।

[77] Boccaccio Giovanni was the author of "Il Decamerone" (1313).

इसके आगे की तीन कहानियॉ "सात अक्लमन्द मास्टर्स" के केवल पश्चिमी या यूरोपियन रूप में ही पायी जाती हैं। पहली कहानी "भविष्यवाणी"[78] में एक लड़के को जो चिड़ियों की भाषा जानता है पता चलता है कि उसके माता पिता की एक समय इतनी बुरी हालत हो जायेगी कि उनको रोटी भी नसीब नहीं होगी। जबकि उनका बेटा इतने ऊॅचे पद पर पहुॅच जायेगा कि वे अपने बेटे को हाथ धोने के लिये पानी देंगे।

बेटे की इस भविष्यवाणी पर पिता इतना गुस्सा हो जाता है कि वह अपने बेटे को समुद्र में फेंक देता है। पर वह बच जाता है और कई परेशानियों के बाद सिसिली के राजा की बेटी से शादी कर लेता है।

एक दिन जब वह मसीना से गुजर रहा होता है तो वहॉ अपने माता पिता को एक सराय के दरवाजे पर फटे हाल बैठे देखता है। वह अपने घोड़े से उतर कर उनके घर जाता है और खाना मॉगता है तो वे पहले उसको हाथ धुलाते हैं। फिर वह उनको बताता है कि वह कौन है। इस पर वे उससे अपने किये की माफी मॉगते है।

इस कहानी का अकेला इटैलियन भाषा में लिखा रूप जिसमें कुछ और घटनाऐं जोड़ दी गयी हैं मैनटुआन टेल्स में पाया जाता है।[79] इस कहानी में लड़का यह भविष्यवाणी चिड़ियों से नहीं सुनता बल्कि एक देवदूत एक राजा को बताता है जिसको बहुत दिनों से एक बेटे की इच्छा है कि उसके एक बेटा होगा वह जिसकी सेवा करेगा।

जब उसका बेटा 10 साल का हो गया तब राजा उस भविष्यवाणी से इतना प्रभावित हो गया कि उसने अपने बेटे को एक जंगल में छुड़वा दिया। एक जादूगर ने उसे बचा लिया उसे पाला पोसा पर बाद में वह बेटा उसके यहॉ से भाग गया। वह राजा के दरबार में गया और शादी के लिये उनकी बेटी, यानी अपनी बहिन का हाथ जीत लिया। इसके लिये उसको एक बहुत चौड़े गड्ढे पर से अपना घोड़ा कुदाना पड़ा।

जब राजा ने दावत में बेटे को वाइन का गिलास पेश किया तो बेटे ने अपने पिता को पहचान लिया। वह बोला — "देखिये। पिता बेटे को दे रहा है।" शादी उसी समय तोड़ दी गयी।

"सात अक्लमन्द मास्टर्स" की जो मूल कहानी है वैसी कहानियों में ऐसी कहानियॉ आती हैं जिनमें हीरो को जानवरों की भाषा आती है और उसकी वजह से उसको घर से निकाल दिया

[78] "The Prophecy".

[79] Vicentini. (Tale No 50). Entitled "Fortune Aid Me".

जाता है जिसके बाद वह कोई बड़ा आदमी बन जाता है। आगे दी हुई कहानी इसी तरह की एक कहानी है जो मौनफ़िरैटो में कही सुनी जाती है।

43 जानवरों की भाषा[80]

एक बार की बात है कि एक पिता के एक बेटा था जो 10 साल तक स्कूल गया। समय खत्म होने के बाद टीचर ने उसके पिता को लिखा कि अब वह उसको ले जा सकते हैं क्योंकि अब वहॉ उसकी पढ़ाई खत्म हो चुकी है।

सो पिता वहॉ गया और अपने बेटे को घर ले आया और उसके आने की खुशी में एक बहुत बड़ी दावत दी। इस दावत में उसने बहुत सारे कुलीन और सभ्य लोगों को बुलाया था। आने वालों ने कई स्पीचें दीं।

उसके बाद आये हुए मेहमानों में से एक ने बेटे से पूछा — "बेटे। मुझे कोई ऐसी चीज़ बताओ जो तुमने वहॉ पर बहुत बढ़िया सीखी हो।"

लड़का बोला — "मैंने कुत्ते मेंढक और चिड़िया की भाषा सीखी।"

यह सुन कर तो वहॉ बैठे सारे लोग बहुत ज़ोर से हॅस पड़े। सारे लोग बच्चे के पिता के घमंड की और बेटे की बेवकूफी की हॅसी उड़ाने लगे। किसान बेचारा अपने बेटे के जवाब पर इतना शर्माया और उस पर इतना गुस्सा हुआ कि उसने उसको अपने दो नौकरों को सौंप दिया और कहा कि वे उसको जंगल ले जायें और वहॉ ले

[80] Language of the Animals. Tale No 43. By Domenico Comparetti. (Tale No 56).

जा कर उसे मार दें। फिर उसका दिल ला कर उसे दें। पर उसके नौकर उसकी इस आज्ञा का पालन नहीं कर सके। लड़के की बजाय उन्होंने एक कुत्ते को मारा और उसका दिल निकाल कर राजा को सौंप दिया।

नौजवान बेटा वह देश छोड़ कर कहीं और चला गया। बहुत दूर चलने के बाद वह एक किले पर आ निकला। वहॉ राजकुमार का एक खजांची रहता था जिसके पास बहुत खजाना था। वहॉ उसने रहने की एक जगह ढूँढी और जैसे ही वह उसके अन्दर घुसने ही वाला था कि उस किले के आस पास बहुत सारे कुत्ते आ कर इकट्ठे हो गये।

खजॉची ने पूछा कि इतने सारे कुत्ते वहॉ कहॉ से आ गये। अब क्योंकि इस लड़के को कुत्तों की भाषा आती थी तो वह बोला — "इसका मतलब यह है कि **100** मारने वाले इसी शाम को यहॉ आयेंगे तो खजॉची को सावधान रहना चाहिये।"

किले में रहने वालों ने किले के आसपास **200** सिपाही खड़े करवा दिये और रात को जब मारने वाले आये तो उन सबको गिरफ्तार कर लिया। खजांची तो इस बात के लिये लड़के का इतना कृतज्ञ हुआ कि उसको अपनी बेटी देने के लिये तैयार हो गया।

पर लड़के ने कहॉ कि "अभी नहीं। मैं एक साल तीन दिन बाद वापस लौटूँगा तब...।"

ऐसा कह कर वह उस किले को छोड़ कर चला गया तो एक और देश में पहुँचा। वहाँ के राजा की बेटी बहुत बीमार थी क्योंकि राजा के महल के पास ही एक बहुत बड़ा तालाब था जिसमें मेंढक बराबर टर्राते रहते थे।

लड़के ने देखा कि मेंढक इसलिये टर्रा रहे थे क्योंकि राजकुमारी ने एक बार एक कौस उस तालाब में फेंक दिया था। उसने वह कौस तालाब में से निकलवा दिया तो उनका टर्राना बन्द हो गया और राजकुमारी ठीक हो गयी।

अब यह राजा भी इस लड़के से अपनी बेटी की शादी करना चाहता था तो इसने इस राजा से भी यही कहा कि जब वह एक साल तीन दिन के बाद वापस लौटेगा तब... ।

यहाँ से वह आगे चला तो वह रोम की तरफ चल दिया। रास्ते में उसको तीन आदमी मिले जो रोम जा रहे थे। एक दिन बहुत गर्म था सो चारों एक ओक के पेड़ के नीचे सो गये। कुछ देर में ही चिड़ियों का एक बहुत बड़ा दल वहाँ आया और उस ओक के पेड़ पर बैठ गया और ज़ोर ज़ोर से गाने लगा।

चारों यात्रियों में से एक ने पूछा — "ये चिड़ियें इतनी खुश हो कर क्यों गा रही हैं।"

लड़का बोला — "ये लोग एक नये पोप के साथ खुशी मना रही हैं जो हममें से एक बनने वाला है।"

और अचानक ही उसके सिर पर एक फाख्ता बैठ गयी और सचमुच में ही कुछ समय में ही वह पोप बन गया।

पोप बनने के बाद उसने अपने पिता खजॉची और राजा को बुला भेजा। सब उसके सामने कॉपते से चले आये क्योंकि उनको मालूम था कि उन्होंने पाप किया है। पर पोप ने उन सबसे कहा कि वे अपने अपने काम बतायें।

वह फिर अपने पिता की तरफ घूमा और कहा — "पिता जी। मैं आपका वह बेटा हूॅ जिसे आपने मारने के लिये भेज दिया था क्योंकि मैंने आपसे कहा था कि मैं चिड़िया कुत्तों और मेंढकों की भाषा जानता हूॅ। आपने मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया जबकि इस खजॉची और राजा मेरे इसी ज्ञान के लिये बहुत कृतज्ञ थे।"

पिता ने अपने अपराध के लिये बहुत पछतावा प्रगट किया और बहुत ज़ोर ज़ोर से रोया। बेटे ने उसे माफ कर दिया और फिर जब तक वह ज़िन्दा रहा उसने अपने पिता को अपने पास ही रखा।

44 राज और उसका बेटा[81]

यह कहानी दो तरह से मजेदार है। पहली तो इस वजह से कि यह कहानी न केवल मध्यकालीन युग के संग्रह में ही पायी जाती है बल्कि ग्रीस के साहित्य में भी पायी जाती है जिसे हैरोडोटस ने मिश्र के राजा रैम्प्सीनैटस के बारे में लिखा था। और जिसे पौसैनियास ने दो बिल्डिंगों का डिजाइन बनाने वालों जिन्होंने हाईरियस का खजाना लूटा था के बारे में लिखा था। [82]

इस कहानी के चार रूप मिलते हैं – दो सिसिली से, एक बलूनी से और एक मौनफ़ैरैटो से। [83] इसके सिसिली के एक रूप में, कहानी नम्बर 159 में, और बलूनी और मौनफ़ैरैटो वाले रूपों में चोर दो भाई हैं जबकि सिसिली के दूसरे रूप में, यानी कहानी नम्बर 160 में, वे पिता और बेटा हैं। हम यहॉ पर कहानी का सिसिली का नम्बर 160 वाला रूप दे रहे हैं।

एक बार की बात है कि एक राज[84] था जिसके एक पत्नी थी और एक बेटा था। एक दिन राजा ने राज को बुला भेजा कि वह उसके लिये गॉव में एक मकान बनाये जिसमें वह अपना पैसा रख सके। क्योंकि वह बहुत अमीर था और उसके पास उसे रखने की कोई जगह नहीं थी।

राज ने अपने बेटे को साथ लिया और वह मकान बनाने चल दिया। एक कोने में उन्होंने एक पत्थर रखा जिसको वहॉ से हटाया जा सके और फिर से वहीं रखा जा सके। यह जगह इतनी बड़ी थी

[81] The Mason and His Son. Tale No 44. From Sicily.
[82] Rampsinitus, the King of Egypt, by Herodotus (II, 121), and Pausanias of the two architects, Agamedes and Trophonius who robbed the treasure of Hyrieus.
[83] Two from Sicily, by Giovanni Pitre (Tale Nos 159 and 160); From Bologna, by Coronedi-Bert (Tale No 2); and one from Monferrato, by Domenico Comparetti (Tale No 13)
[84] Translated for the word “Mason”

कि एक आदमी इसमें आसानी से घुस सकता था। दोनों ने अपना काम पूरा किया अपना पैसा लिया और अपने घर चले गये।

उसके बाद राजा ने गाड़ियॉ भर भर कर अपना पैसा उस मकान में भिजवा दिया और उसके तरफ कड़ा पहरा लगा दिया। कुछ दिन बाद उसने देखा कि वहॉ कोई तो गया नहीं सो उसने वहॉ से अपने पहरे वाले हटा लिये।

अब राजा को तो हम यहीं छोड़ते हैं और राज के पास चलते हैं। जब राज का पैसा खत्म हो गया तो उसने अपने बेटे से कहा — "चलो अब गॉव के मकान में चलते हैं।"

उन्होंने एक बड़ा सा थैला लिया और राजा के गॉव वाले मकान की तरफ चल दिये। जब वे मकान के पास पहुॅचे तो पहले पिता अन्दर घुसा वहॉ से पत्थर हटाया और अन्दर जा कर अपना थैला सोने से भर लिया। वहॉ से बाहर निकलने के बाद उसने वह पत्थर वहीं का वहीं रख दिया और वहॉ से चले गये।

अगले दिन राजा घोड़े पर सवार हो कर वहॉ पहुॅचा तो उसने देखा कि उसका सोने का ढेर तो गायब हो चुका है। उसने अपने नौकरों से पूछा — "मेरा पैसा कौन निकाल रहा है।"

नौकर बोले — "योर मैजेस्टी। यह तो सम्भव ही नहीं है। क्योंकि जो भी वहॉ आयेगा वह वहॉ अन्दर कैसे घुसेगा। हॉ यह हो सकता है कि मकान नया बना हुआ है सो कुछ नीचे हो गया हो।"

सो उन्होंने उसकी मरम्मत कर दी।

कुछ समय बाद राज ने अपने बेटे से कहा कि चलो फिर चलते हैं। उन्होंने अपना पुराना वाला थैला उठाया और उधर चल दिये। वहॉ पहुँच कर उन्होंने फिर वह बड़ा पत्थर हटाया अन्दर गये अपना थैला भरा और वहॉ से चल दिये।

उसी रात को उन्होंने एक चक्कर वहॉ का और लगाया और अपना थैला भर कर ले गये।

अगले दिन राजा अपना वह मकान देखने गया तो उसने अन्दर जा कर देखा तो वहॉ से तो बहुत सारा पैसा गायब हो गया था। उसने अपने सलाहकारों को बुलवाया और उनसे कहा कि कोई उस मकान में से उसका पैसा चुरा रहा है।

वे बोले — "योर मैजेस्टी। जब आप ऐसा कह रहे हैं तो हमें एक काम करना चाहिये। कुछ टब लीजिये और उन्हें पिघले हुए तारकोल से भर दीजिये और उन्हें अन्दर की तरफ दीवार के सहारे रख दीजिये। जो कोई भी अन्दर घुसेगा वह उनमें से किसी में भी गिर जायेगा और इस तरह चोर पकड़ा जायेगा।"

सो उन्होंने कुछ टब लिये उन्हें पिघले हुए तारकोल से भरा और अन्दर की तरफ दीवार के सहारे रख दिये। राजा ने अपने कुछ सन्तरी वहॉ छोड़े और अपने महल लौट आया। सन्तरी वहॉ एक हफ्ता रहे और जब उन्होंने देखा कि वहॉ कोई नहीं आया तो वे भी वहॉ से छोड़ कर चले गये।

अब हम फिर से राज के पास चलते हैं।

राज ने अपने बेटे से कहा कि चलो बेटे अपनी रोज की जगह चलते हैं। उन्होंने अपना थैला उठाया और मकान की तरफ चल दिये। वहॉ पहुँच कर उन्होंने पत्थर उठाया और पिता अन्दर घुसा जैसे ही वह अन्दर घुसा वह वहॉ रखे तारकोल से चिपक गया।

पिता ने अपनी सहायता अपने आप की और अपना पैर छुड़ा लिया पर फिर उसके दोनों हाथ चिपक गये।

तब उसने अपने बेटे से कहा — "क्या तुम सुन रहे हो कि मैं तुमसे क्या कह रहा हूँ। तुम मेरा सिर काट दो मेरे कोट के चिथड़े चिथड़े कर दो पत्थर जहॉ था वहीं रख दो और यहॉ से चले जाओ। मेरा सिर नदी में फेंक देना इससे किसी को मेरा पता नहीं चलेगा।"

बेटे ने ऐसा ही किया और घर वापस चला गया। जब उसने अपनी मॉ से अपने पिता के बारे में बताया तो वह तो अपने बाल नोचने लगी।

कुछ दिन बाद बेटा जिसे कोई काम नहीं आता था एक बढ़ई के पास गया और अपनी मॉ से यह कह गया कि वह किसी से कुछ न कहे।

अब हम फिर से राजा के पास चलते हैं। राजा फिर से अपने गॉव वाले मकान में गया। वे घुसे और उन्होंने एक शरीर देखा पर उसका कोई सिर नहीं था। राजा बोला — "मगर इसका सिर तो है ही नहीं तो हमें यह कैसे पता चलेगा कि यह कौन है।"

राजा के सलाहकार बोले — "इसके शरीर को ले जाओ और तीन दिन तक उसे शहर भर में सब सड़कों पर घुमाओ। जहॉ कहीं से रोने की आवाज सुनो वहीं समझ लेना कि यह उस घर का आदमी है।"

सो वे उसको ले गये और उसके शरीर को शहर की सड़कों पर घुमाते रहे। जब वे उस गली से गुजरे जहॉ राज की पत्नी रहती थी तो उसने रोना शुरू कर दिया।

बेटे की दूकान पास में ही थी यह सुना तो उसने अपने हाथ पर कुल्हाड़ी के एक ही वार से अपनी उॅगलियॉ काट डालीं। पुलिस ने राज की पत्नी को पकड़ लिया और कहा — "अब हमें पता चल गया है कि वह कौन है।"

इस बीच बेटा वहॉ आ गया और बोला — "यह इसके लिये नहीं रो रही यह तो इसलिये रो रही है कि मैंने अपने आप ही अपनी उॅगलियॉ काट ली हैं और अब इस वजह से कोई काम नहीं कर सकता और अपनी रोटी नहीं कमा सकता।"

पुलिस ने देखा कि बात तो यही थी। उन्होंने उसकी बात पर विश्वास कर लिया और वहॉ से चली गयी। रात को वे राज का शरीर महल ले गये और बाहर एक चबूतरा बनवा कर उसे उसके ऊपर रख दिया क्योंकि उनको वह शरीर शहर की सड़कों पर अभी दो दिन और घुमाना था। फिर वहॉ नौ सन्तरी पहरे के लिये खड़े कर दिये – आठ सन्तरी और एक कौरपोरल।

जाड़े का मौसम था और बहुत ठंडा था सो बेटे ने एक खच्चर लिया उस पर बेहोश करने वाली दवा मिली कुछ वाइन लादी और उन पहरेदारों के सामने चक्कर काटने लगा।

सिपाहियों ने जब उसे देखा तो उन्होंने चिल्ला कर उससे पूछा — "भाई क्या तुम वाइन बेच रहे हो।"

बेटा बोला — "हॉ बेच तो रहा हूँ।"

वे बोले — "तुम तब तक हमारा इन्तजार करो जब तक हम पीते हैं। हम लोग ठंड से कॉप रहे हैं।"

जब उन्होंने अच्छी तरह से पी ली तब वे लेट गये और गहरी नींद सो गये। बेटे ने वहॉ से अपने पिता की लाश उठा ली शहर के बाहर दफ़ना दिया और घर वापस आ गया।

सुबह को जब सिपाही लोग उठे तो उन्होंने राजा को बताया कि रात को उनके साथ क्या हुआ था तो उसने एक मुनादी पिटवादी कि जो कोई भी लाश को ढूँढ कर ले कर आयेगा उसको बहुत सारा पैसा मिलेगा।

लाश मिल गयी। लाश को फिर से घुमाया गया पर अबकी बार कोई नहीं रोया। लाश को रात को अबकी बार नये सन्तरियों की देखरेख में रख दिया गया पर आज की रात भी वैसा ही हुआ। सिपाही लोगों को दवा पिला दी गयी थी। उनको साधुओं के कपड़े पहना दिये गये। कोरपोरल की टॉगों के बीच में एक कौस रख दिया गया था।

अगले दिन राजा ने फिर से मुनादी पिटवायी। लाश को फिर से ढूँढ लिया गया। उसको फिर से शहर में घुमाया गया। पर उस दिन भी कोई नहीं रोया।

राज के बेटे नीनू को चैन नहीं था सो वह एक बकरी चराने वाले के पास गया। वहाँ जा कर उसने उससे कहा — "क्या तुम मेरा एक काम करागे?"

बकरी चराने वाला बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं। मैं एक नहीं दो करूँगा पर अगर मैं कर सकता होऊँगा तो। बोलो मैं तुम्हारे लिये क्या करूँ।"

"क्या तुम मुझे आज शाम के लिये अपनी बकरियाँ उधार दोगे।"

"हाँ हाँ क्यों नहीं।"

नीनू उन बकरियों को ले गया। उसने **3** किलो मोमबत्ती खरीदी और एक मिट्टी का बर्तन खरीदा। उसने बर्तन की तली में छेद किया और कुछ मोमबत्तियाँ वहाँ बाँध दीं। फिर कुछ बकरियों के हर सींग में एक एक मोमबत्ती बाँध दी। फिर वह उनको वहाँ ले गया जहाँ लाश थी। वह अपने सिर के ऊपर बर्तन रख कर उनके पीछे पीछे चलता गया।

यह देख कर सब सिपाही डर के मारे भाग गये। बेटे ने भी लाश समुद्र में फेंक दी।

अगले दिन राजा ने मॉस की कीमत बढ़ा कर **70** फेंक का **800** ग्राम कर दी और सारी बुढ़ियों को महल में आने के लिये कहा। करीब करीब **100** बुढ़ियें महल में आ गयीं।

उसने उनसे कहा कि वह शहर में जा कर भीख मॉगें और देखें कि कौन कौन अपने घर में मॉस पका रहा है। क्योंकि उसने सोचा कि उस समय केवल चोर ही उसे इस कीमत पर खरीद पा रहा होगा।

नीनू कुछ मॉस खरीद कर लाया और अपनी मॉ को पकाने के लिये दे दिया। अब जब मॉस पक रहा था और नीनू घर में नहीं था एक भिखारिन दरवाजे पर भीख मॉगने आयी तो नीनू की मॉ ने उसे मॉस का एक छोटा सा टुकड़ा दे दिया।

जब वह नीचे जा रही थी तो उसको बीच में ही नीनू मिल गया। उसने उससे पूछा कि वहॉ क्या कर रही थी। उसने कहा कि वह रोटी मॉगने आयी थी। नीनू को उसकी चालाकी पर शक हो गया सो उसने उसे उठा कर कुॅए में फेंक दिया।

दोपहार को जब सारी बुढ़ियॉ महल में फिर से इकट्ठा हुईं तो उनमें से एक बुढ़िया कम थी। उसने उस कसाई को बुलवाया जिससे वह मॉस खरीदा गया था। उसने बताया कि उसने केवल **800** ग्राम मॉस ही बेचा है।

जब राजा को इस बात का पता चला तो उसने पता करने की कोशिश की ये सब आश्चर्यजनक काम किसने किये थे। वह आदमी

अगर कुँआरा है तो वह अपनी बेटी की शादी उससे कर देगा और अगर वह शादी शुदा होगा तो वह उसको दो माप सोना देगा।

यह सुन कर नीनू राजा के पास गया और बोला कि वह मैं था। राजा उसको देख कर बहुत ज़ोर से हँसा और उससे पूछा कि वह शादीशुदा था या कुँआरा। नीनू बोला "मैं कुँआरा हूँ।"

राजा ने पूछा — "तुम क्या लोगे मेरी बेटी या दो माप सोना।"

नीनू बोला — "योर मैजेस्टी। मुझे शादी करनी है। आप मुझे अपनी बेटी दे दें।"

राजा ने वैसा ही किया और एक बहुत बड़ी दावत दी।

"सात अक्लमन्द मास्टर्स" की एक कहानी[85] जियूसैप्पे पित्रे के संग्रह में ही मिलती है। उसमें यह बताया गया है कि एक दर्जी एक राजा के महल के बराबर में रहता था और उसका घर राजा के महल एक चोर दरवाजे से जुड़ा हुआ था जिसको केवल राजा और दर्जी की पत्नी ही जानते थे।

दर्जी जब महल में काम कर रहा होता था तो उसको लगता था कि उसकी पत्नी महल में ही कहीं है सो वह इस बहाने कि वह अपनी कैंची अपने घर भूल आया है जब अपने घर जाता तो देखता कि उसकी पत्नी तो घर पर ही थी। अन्त में वह राजा के साथ भाग जाती है। इस बीच वह अपनी एक मूर्ति अपनी एक खिड़की में रखी छोड़ जाती है जो उसके पति को धोखा देती रहती है। तब तक वह उसकी पहुँच से दूर निकल जाती है।

इन सबसे भी ज़्यादा मजेदार कहानी यह आखिरी कहानी है जो अब हम लिखने जा रहे हैं। इस संग्रह की यह कहानी[86] थोड़े में यह है — "एक ईर्ष्यालु पति के पास एक बात करने वाली चिड़िया है जो उसकी पत्नी पर नजर रखती है। अपने पति का विश्वास खत्म करने के लिये जब उसका पति घर पर नहीं है पत्नी अपने नौकर से उसके पिंजरे पर बहुत सारा पानी उँडेलवा देती है जिससे बिजली कड़कने की सी आवाज होती है। और साथ में बिजली की रोशनी का एहसास कराने के लिये मोमबत्ती जला देती है। जब दर्जी घर वापस आता है तो चिड़िया उसको पिछली रात को आये हुए एक भयानक तूफान के बारे में बताती है। दर्जी उसकी बात का विश्वास नहीं करता और उसे मार देता है।

यह कहानी "सात अक्लमन्द मास्टर्स" के पूर्वीय और पश्चिमी दोनों रूपों में पायी जाती है। साथ में यह कहानी एक और ओरिऐन्ट संग्रह "शुका सप्तति" में भी पायी जाती है। शुका माने तोता और सप्तति माने **70** यानी "तोते की सत्तर कहानियाँ"। यह पुस्तक अपने अरबी और तुर्की नामों से ज़्यादा लोकप्रिय है — "तूती नामे" यानी "तोते की कहानियाँ"।

सब ओरिऐन्ट कहानियों का आधार करीब करीब एक ही है — "पति को अपने काम के सिलसिले में बाहर जाना होता है और जब वह घर में नहीं होता तो उसकी पत्नी किसी अजनबी के साथ होती है। एक तोता जो पति ने घर में छोड़ा हुआ है उसको बार बार कहानियाँ सुना कर उसको अपने प्रेमी से मिलने से रोकता है। वे कहानियाँ इतनी मजेदार होती हैं कि वह अपने प्रेमी से नहीं मिल पाती और फिर उसका पति आ जाता है।

---

[85] "Inclusa" (The Elopement) is found only in Giuseppe Pitre's collection (Tale No 176).

[86] Known as "Avis" or (The Talking Bird)

तुर्की वाले रूप में तोता पति और पत्नी की सुलह करवा देता है जबकि फारसी रूपों में तोता वह बताता है जो उसके पीछे घटा होता है और बेवफा पत्नी मारी जाती है।

इटली में कहे सुने जाने रूप "सात अक्लमन्द मास्टर्स" से ली हुई कहानियों के आधार पर नहीं हैं बल्कि "शुका सप्तति" की कहानियों पर आधारित हैं। और इसमें सबसे मजेदार बात यह है कि कहानियों की इस शैली में वे कहानियॉ भी भर दी गयी हैं जो मूल पुस्तक में नहीं हैं।

इसका सबसे सादा रूप पिसा में कहा सुना जाता है।

45 तोता–पहला रूप[87]

एक बार एक सौदागर था जिसके एक सुन्दर बेटी थी जिसको राजा और वाइसराय दोनों ही बहुत प्यार करते थे। राजा को मालूम था कि सौदागर जल्दी ही अपने काम पर बाहर जाने वाला है तो उसको लगा कि तब उसको उस लड़की से बात करने का मौका मिलेगा।

वायसराय भी इस बात को जानता था। वह इस सोच में था कि वह किस तरह वह राजा को उस लड़की से मिलने से कैसे रोके।

वह एक जादूगरनी को जानता था। वह उसके पास गया उसको निडर किया बहुत सारा पैसा देने का वायदा किया और उससे पूछा कि वह अपने आपको एक तोते में कैसे बदल सकता है। उसने उसको यह सिखा दिया। सौदागर ने उस तोते को अपनी बेटी के लिये खरीद लिया।

जब तोता ने सोचा कि अब राजा आता ही होगा तो उसने लड़की से कहा — "अब तुम्हारा मन बहलाने के लिये मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ पर जब मैं तुम्हें कहानी सुना रहा होऊँगा तो बीच में तुम किसी से न बात करोगी और न किसी से मिलोगी।"

[87] The Parrot : First Version. Tale No 45. Version from Pissa. From Domenico Comparetti. (Tale No 1)

उसके बाद उसने अपनी कहानी कहनी शुरू की। उसने अभी कुछ ही देर तक कहानी सुनायी होगी कि उसकी नौकरानी एक सन्देश ले कर आयी कि उसके लिये एक चिट्ठी आयी है।

तोता बोला — "उससे कहो कि वह थोड़ी देर में ले कर आये। अब तुम मेरी बात सुनो।"

लड़की ने भी कहा — "जब तक मेरे पिता नहीं हैं मैं तब तक किसी की चिट्ठी स्वीकार नहीं कर सकती।"

उसने फिर कहानी कहनी शुरू कर दी। कुछ समय बाद फिर कोई बीच में आया। नौकरानी ने कहा कि "आपसे आपकी कोई चाची मिलने आयी हैं।" वास्तव में तो वह उसकी चाची वाची नहीं थी बल्कि एक स्त्री थी जिसे राजा ने भेजा था।

तोता बोला — "तुम उसको मत बुलाओ। अभी तो हमारी कहानी का बहुत ही मजेदार हिस्सा आने वाला है।"

तो वह लड़की अपनी दासी के हाथ यह खबर भेज देती है कि इस समय वह किसी मेहमान से नहीं मिल सकती। तोता फिर अपनी कहानी सुनाता रहता है।

जब उसकी कहानी खत्म हो गयी तो वह लड़की उससे इतनी खुश हुई कि वह तब तक किसी को नहीं सुनना चाहती थी जब तक उसके पिता नहीं आ जाते।

उनके आने के बाद तोता गायब हो जाता है और वायसराय उससे मिलने के लिये आता है और सौदागर से उसकी बेटी का हाथ

माँगता है। सौदागर राजी हो जाता है और शादी होती है। पर शादी की रस्में अभी खत्म भी नहीं होती हैं कि एक भला आदमी लड़की का हाथ राजा के लिये माँगने के लिये आता है।

पर अब तो बहुत देर हो गयी होती है और बेचारा राजा जो उस लड़की को बहुत प्यार करता है दिल टूटने की वजह से मर जाता है। लड़की वायसराय की पत्नी बन जाती है जो राजा से कहीं ज़्यादा चालाक था।

इस कहानी में हमने तोते के द्वारा सुनायी गयी कहानियाँ नहीं दी हैं क्योंकि हम उन्हें सिसिली में कहे सुने जाने वाले रूप में देने वाले हैं। और इसके फ्लोरैन्स वाले रूप में भी। यह कहानी हमने केवल इसलिये यहाँ दी है क्योंकि इस कहानी का यह रूप जिस संग्रह में दिया हुआ है वह बहुत मुश्किल से मिलता है।

46 तोता–दूसरा रूप[88]

एक बार की बात है कि एक सौदागर था जो अपने काम के सिलसिले में एक लम्बी यात्रा पर जा रहा था सो उसने अपनी पत्नी को उसके मन बहलाने के लिये एक तोता ला दिया।

पत्नी बहुत दुखी थी कि उसका पति जल्दी ही चला जायेगा। उसने चिड़िया को एक कोने में फेंक दिया और फिर उसके बारे में दोबारा सोचा भी नहीं।

शाम को वह अपनी खिड़की पर गयी तो उसको एक नौजवान गुजरता हुआ दिखायी दिया। उस नौजवान ने जैसे ही सौदागर की पत्नी को देखा तो उसको उससे प्यार हो गया।

पहली मंजिल पर एक स्त्री रहती थी जो कोयला बेचती थी। उस नौजवान ने उससे विनती की वह उस लड़की के साथ अपने सम्बन्ध बनाने में उसकी सहायता कर दे।

उसने वायदा तो नहीं किया क्योंकि सौदागर की शादी को अभी कुछ ही दिन हुए थे और वह एक ईमानदार लड़की थी। फिर उसने कहा कि एक तरीका है। उसकी अपनी बेटी की शादी होने वाली थी तो वह सौदागर की पत्नी को उसमें बुलायेगी तो वह उसको भी बुला लेगी पर फिर उसे खुद ही सॅभालना पड़ेगा।

[88] The Parrot – Second Version. Tale No 46. Version from Florence.

सो उस स्त्री ने अपनी बेटी की शादी के मौके पर सौदागर की पत्नी को बुलाया और उसने उसका बुलावा स्वीकार भी कर लिया। पत्नी ने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने और जाने के लिये तैयार ही थी कि तोता जिसे उसने कोने में फेंक दिया था बोला — "मैडम कहॉ जा रही हो। मैं तुम्हें एक कहानी सुनाना चाहता हूँ अगर तुमको अच्छा लगे तो।"

सौदागर ने उस कोयले वाली को विदा किया। कोयले वाली स्त्री ने भी बात को बिगाड़ना नहीं चाहा सो उसने शादी को टालने का वायदा किया और अगले दिन आने का वायदा किया।

तब तोते ने अपनी कहानी शुरू की —

"एक बार की बात है कि एक राजा का एक बेटा था जिसका गुरू जादू में इतना होशियार था कि वह कुछ शब्द बोलने पर ही अपने आपको अलग अलग जानवरों में बदल सकता था। राजकुमार ने चाहा कि उसका गुरू उसको भी वे शब्द सिखा दे पर जादूगर कुछ हिचकिचा रहा था सो उसने मना कर दिया। पर फिर उसे राजकुमार की इच्छा पूरी करनी ही पड़ी।

सो राजकुमार कौआ बन गया और उड़ कर एक दूर देश में चला गया। वह वहॉ के राजा के बागीचे में पहुँच गया। वहॉ उसने एक बहुत सुन्दर लड़की देखी जिसके हाथ में एक शीशा था और जिसमें उसकी तस्वीर लगी हुई थी। कौए ने उसके हाथ से वह तस्वीर छीन ली और अपने घर उड़ गया।

घर पहुँच कर उसने अपना रूप बदल लिया। वह अपने असली रूप में आ गया। पर वह उस अनजान लड़की को इतना प्यार करने लगा था कि वह उसकी याद में बीमार पड़ गया।

इस बीच वह लड़की जो राजा की बेटी थी अपनी तस्वीर अपने हाथ से छीनी जाती देख कर बहुत परेशान थी। उसके दिमाग को शान्ति नहीं थी। उसने अपने पिता से विनती की कि वह उसको उसकी तस्वीर की खोज में जाने दें। पिता ने उसे इजाज़त दे दी।

उसने एक डाक्टर का रूप रखा और चल दी। वह एक देश में आयी जहाँ के राजा ने मुनादी पिटवा रखी थी कि जो कोई डाक्टर उसके देश से गुजरे उसे उसके पास आना पड़ेगा क्योंकि उसकी बेटी बहुत बीमार है।

सो इस नये डाक्टर को महल जाना पड़ा पर वह उसकी उस बीमारी की को दवा नहीं खोज सकी। रात को वह राजकुमारी के बिस्तर के पास बैठी हुई थी कि रोशनी चली गयी। सो वह कमरे में रोशनी लाने के लिये बाहर चली गयी।

बार उसने एक छोटा सा मकान देखा तो उसने देखा कि वहाँ तीन बुढ़ियें एक बर्तन के चारों तरफ बैठी हैं जो आग पर रखा है और उसमें पानी उबल रहा है।

उसने उनसे पूछा — "क्या आप कुछ धो रही हैं?"

वे बोलीं — "क्या धोना? नहीं नहीं इसमें तो ये तीन सिर उबल रहे हैं। जब ये उबल जायेंगे तब राजकुमारी मर जायेगी।"

डाक्टर ने कहा — "अरे वाह भली स्त्रियों। आप लकड़ी और ले आयें मैं भी आपकी सहायता करता हूँ।"

वह वहाँ कुछ देर तक तो बैठी रही पर फिर फिर से आने का वायदा कर के वहाँ से चली गयी। आग जितनी तेज़ जलती जाती थी राजकुमारी के मरने का समय पास आता जाता था। डाक्टर ने राजा को तसल्ली दी और उसको बढ़िया खाना तैयार करने के लिये कहा।

अगली रात उसने वह खाना लिया और बहुत बढ़िया वाइन ली और उन बुढ़ियों के पास चल दी। जब वे उसको पी कर बेहोश सी हो गयीं उसने उन तीनों बुढ़ियों को आग में डाल दिया और वह बर्तन जिसमें तीनों सिर उबल रहे थे आग पर से उतार दिया।

उस बर्तन के आग पर से हटाते ही राजकुमारी ठीक होने लगी। राजा अपनी बेटी को उसको देना चाहता था और सोना और जवाहरात देना चाहता था पर डाक्टर ने कुछ नहीं लिया और वहाँ से चला गया।"

तोता बोला — "मैडम। बहुत देर हो गयी है। देखो न मैं अब थक गया हूँ। बाकी की बची हुई कहानी मैं तुम्हें कल सुनाऊँगा।"

अगले दिन कोयला बेचने वाली स्त्री फिर आयी। सौदागर की पत्नी फिर से उसके साथ जाने के लिये तैयार थी पर तोते ने उसे रोक लिया और उससे वायदा किया कि वह उस दिन अपनी कहानी खत्म कर देगा।

सो कोयला बेचने वाली स्त्री गुस्से में भरी लौट गयी और तोते ने अपनी कहानी आगे बढ़ायी —

"इस तरह डाक्टर के वेश में राजकुमारी वहॉ से चल कर एक दूसरे देश में आयी। वहॉ के राजा ने एक मुनादी पिटवा रखी थी कि जो कोई भी डाक्टर उसके राज्य से गुजरे वह उससे जरूर ही मिले क्योंकि उसके बेटे की तबियत बहुत खराब थी।

सो इस नये डाक्टर को यहॉ भी राजा के पास जाना पड़ा। यहॉ भी वह राजकुमार की बीमारी के इलाज का पता नहीं चला सका।

पर रात को जब वह राजकुमार के बिस्तर के पास बैठा हुआ था तो उसने साथ वाले में कमरे में बहुत ज़ोर का शोर सुना। सो वह दरवाजे के पास गया और देखा तो वहॉ तीन बुढ़ियें दावत की तैयारी कर रही थीं।

बाद में वे बीमार राजकुमार के पास गयीं उसको सिर से पैर तक तेल लगाया और उसको मेज तक ले गयीं। फिर उन्होंने शराब पीनी शुरू की और आनन्द मनाना शुरू किया। उन्होंने फिर से उसे तेल लगाया और पहले से भी बुरी हालत में उसे छोड़ गयीं।

डाक्टर ने राजा को बहुत तसल्ली दी। दूसरी रात को उसने उनको राजकुमार को वहॉ से हटाने दिया। फिर वह वहॉ कमरे में प्रगट हो कर राजा के गुस्से की धमकी दे कर उन सबको भगा दिया और राजा के बेटे को राजा को दे आया।

राजा उससे बहुत खुश हुआ और उसने उसे बहुत सा इनाम देना चाहा पर डाक्टर ने उससे कुछ नहीं लिया और वहॉ से चला गया।"

तोता बोला — "अब बहुत देर हो चुकी है सो अब मैं तुम्हें यह कहानी कल सुनाऊॅगा। अभी मैं बहुत थक गया हूॅ।"

अगले दिन कोयला बेचने वाली फिर से वापस आयी। सौदागर की पत्नी इसके साथ जाने ही वाली थी कि तोते ने उसे रोक लिया और कहानी खत्म करने का वायदा किया। कोयला बेचने वाली स्त्री वहॉ से फिर से गुस्सा हो कर चली गयी।

तोते ने फिर अपनी कहानी शुरू की —

"लम्बी यात्रा के बाद राजकुमारी जिसने एक डाक्टर का वेश रखा हुआ था एक और देश में आ गयी। यहॉ भी उसने राजा की एक मुनादी सुनी कि जो कोई डाक्टर इस राज्य से गुजरे तो वह राजा के पास मिल कर जाये। सो यहॉ भी उसे राजा के पास जाना ही पड़ा।

यहॉ भी उसका बेटा बीमार था। इसकी बीमारी का इलाज भी यहॉ का कोई डाक्टर पता नहीं चला सका। राजकुमार किसी से बोलता नहीं था बल्कि अपनी बीमारी किसी को बताता भी नहीं था। पर आखिर उसने डाक्टर को वह राज़ बता ही दिया जिसकी वजह से वह बीमार था। उसने उस तस्वीर की बात उसको बता ही दी जिसको ले कर वह बीमार पड़ा था।

डाक्टर ने राजा को बहुत तसल्ली दी। उसने वैसे ही कपड़े और गहना बनवाया जैसा कि उस तस्वीर में उस लड़की ने पहन रखा था। फिर वह उनको पहन कर राजकुमार के सामने गयी।

जैसे ही राजकुमार ने उसे देखा तो वह तो बिस्तर से कूद कर जमीन पर खड़ा हो गया और अपने प्यार को गले लगा लिया।"

यहॉ इस समय पत्नी अपने पति के आने की आवाज सुनती है। वह बहुत खुश हो जाती है। वह बेचारे तोते को खिड़की से बाहर फेंक देती है जिसको वह अब अपना एक थका देने वाला साथी समझती है।

सौदागर आ कर तोते के बारे में पूछता है। देखता है कि उसका तोता पड़ोसी की छत पर घायल सा पड़ा है तो वह उसे बड़ी नर्मी से उठा कर लाता है।

तब तोता उसको कोयला बेचने वाली की चालाकी बताता है और साथ में जो कुछ उसने किया वह भी बताता है। वह सौदागर को विश्वास दिलाता है कि उसकी पत्नी ने कोई गलती नहीं की है।

पर वह इस बात की शिकायत करता है कि उसकी पत्नी बहुत ही कृतघ्न है। उसने उसको एक सोने का पिंजरा देने का वायदा किया था पर उसने उसके लिये वह तो बनवाया नहीं बल्कि उलटे उसके साथ ऐसा व्यवहार किया।

सौदागर मरती हुई चिड़िया को तसल्ली देता है और बाद में उसके शरीर को दवाओं से सुरक्षित कर के सोने के पिंजरे में रख देता है। अपनी पत्नी को वह और भी ज़्यादा प्यार करने लगता है।

इसका दूसरा रूप पीडमौन्ट में कहा सुना जाता है और उसे डौमैनीको कौम्पारैत्ती ने लिखा है।[89] इसका वह रूप इस कहानी के इस रूप से बिल्कुल अलग है। एक राजा को कहीं लड़ाई पर जाना पड़ता है तो उसको अपनी पत्नी को पीछे छोड़ना पड़ता है। एक और राजा उसकी पत्नी को प्यार करता है। सो जाने से पहले वह अपनी पत्नी से कह कर जाता है कि वह महल के बाहर नहीं जाये और उसको एक तोता भेंट कर जाता है।

जैसे ही राजा घर छोड़ कर जाता है उसकी रानी का प्रेमी रानी से बात करने की कोशिश करता है। इसके लिये वह अपने घर में एक दावत देता है और उसमें रानी को बुलाता है। पर तोता उसको वहॉ जाने से रोकता है। वह उसको वह कहानी सुनाता है जो अभी हमने इसी कहानी में दी है।

इसके इस दूसरे रूप में भी उनको बीच बीच में इसी तरह काटा जाता है जैसे कि पहले रूप में काटा गया था – यानी एक बुढ़िया द्वारा जो दूसरा राजा उसके पास भेजता है पर वह रानी तक पहुॅचने में सफल नहीं हो पाती। जब कहानी खत्म हो जाती है तो राजा लड़ाई से वापस लौट आता है। तोता एक नौजवान बन जाता है जिसे राजा फिर अपनी पत्नी पर निगरानी के लिये रख लेता है।

इस कहानी का एक रूप सिसिली में कहा सुना जाता है जो इन सबमें सबसे ज़्यादा मजेदार है और सबसे ज़्यादा पूरा है। इसमें तोते द्वारा सुनायी गयी यह एक कहानी तीन हिस्सों में बॉट दी गयी है। और इसका ढॉचा[90] भी बहुत सुन्दर है। यह कहानी जियूसैप्पै पित्रे की दूसरे नम्बर की कहानी है।[91]

---

[89] Its another version is from Piedmont and is written by Domenico Comparetti (Tale No 2)

[90] Translated for the word “Framework”

[91] Giuseppe Pitre. The Parrot Which Tells Three Stories. (Tale No 2). This tale is from Sicily.

47 तोता जो तीन कहानियॉ सुनाता है[92]

एक समय की बात है कि एक बहुत ही अमीर सौदागर था जो शादी करना चाहता था। वह इतनी अच्छी पत्नी चाहता था जितना लम्बा दिन होता है और जो अपने पति को बहुत बहुत प्यार करती। उसको ऐसी पत्नी मिल गयी।

एक दिन पत्नी ने पति को थोड़ा सा परेशान देखा तो उससे पूछा — "प्रिय। क्या बात है आप इतना परेशान क्यों हैं?"

"क्या मैं परेशान हूँ? मुझे एक बहुत जरूरी काम है जिसे मुझे वहीं उसी जगह पर जा कर देखना होगा।"

पत्नी बोली — "तो आप इस बात को ले कर इतने परेशान हैं। चलिये इस बात को हम इस तरह से सुलझाते हैं। आप मेरे लिये खाने आदि का सब सामान ले कर छोड़ जाइये। घर के सारे दरवाजे और खिड़कियॉ बन्द कर जाइये। केवल एक सबसे ऊपर की खिड़की खुली छोड़ जाइये। मेरे लिये एक जालीदार खिड़की बनवा दीजिये और आराम से जाइये।"

पति बोला — "तुम्हारी यह सलाह बहुत अच्छी है।"

कह कर उसने घर में बहुत सारा आटा रोटी तेल और कोयला सब कुछ रखवा दिया। सारे खिड़की दरवाजे बन्द कर दिये सिवाय

---

[92] The Parrot Which Tells Three Stories. Tale No 47.
By Giuseppe Pitre (Tale No 2). This tale is from Sicily.

एक सबसे ऊँची वाली खिड़की के जो हवा अन्दर आने के काम आती। एक जालीदार खिड़की बनवायी और चला गया। पत्नी अब अपनी एक दासी के साथ घर में अकेली रह गयी। अगले दिन एक नौकर को जालीदार खिड़की में से कहा गया जो कुछ भी उसे करना था। फिर वह भी चला गया।

इस तरह से 10 दिन बीत गये। अब पत्नी ऊब गयी थी उसको ऐसा लगा कि वह ज़ोर ज़ोर से रोये। उसकी दासी बोली — "मालकिन आप इतनी उदास क्यों होती हैं। हर चीज़ की दवा है। मैं यह मेज इस खिड़की तक खींचती हूँ। आप इस पर खड़ी हो कर बाहर का दृश्य देखें।"

सो मेज खिड़की के नीचे तक खींच दी गयी और पत्नी उस पर चढ़ कर बाहर का दृश्य देखने लगी। जैसे ही उसने बाहर देखा तो उसके मुँह से निकला — "आह। जनाब मैं आपको धन्यवाद देती हूँ।"

अभी उसके मुँह से केवल "आह" शब्द ही निकला था कि उसके सामने दो नौजवान आ गये। उनमें से एक नोटरी था दूसरा घुडसवार था। उन्होंने उसकी "आह" की आवाज सुनी तो उनका ध्यान उधर गया और उन्होंने उस तरफ देखा तो घुड़सवार के मुँह से निकला "देखो यह कितनी सुन्दर स्त्री है। मुझे इससे बात करनी है।"

नोटरी बोला — "नहीं इससे पहले मैं बात करूँगा।"

"नहीं पहले मैं।"

"नहीं पहले मैं।"

उन्होंने दोनों ने **400** औंस की शर्त लगायी कि जो कोई उससे पहले बोलेगा वही जीतेगा। पत्नी ने भी उन दोनों को देखा तो वह खिड़की से हट गयी।

नोटरी और घुड़सवार दोनों ने शर्त के बारे में सोचा तो वे बेचैन हो उठे। बेचैनी में वे इधर उधर घूमते रहे और स्त्री से बोलने की तरकीबें सोचने लगे।

आखिर नोटरी कुछ निराश हो गया तो वह एक मैदान में चला गया और वहॉ पहुँच कर अपने राक्षस को बुलाना शुरू किया। राक्षस उसके बुलाने पर उसके सामने प्रगट हुआ तो नोटरी ने उसको सब कुछ बता दिया और कहा कि यह घुड़सवार उस स्त्री से पहले बोलना चाहता है।

राक्षस बोला — "मैं अगर तुम्हारा यह काम कर दूँ तो तुम मुझे क्या दोगे।"

"अपनी आत्मा।"

"तब तुम यह करो कि मैं तुम्हें एक तोते में बदल देता हूँ। तुम उड़ कर उस स्त्री की खिड़की पर बैठ जाना। नौकरानी तुम्हें ले जायेगी और फिर तुम्हारे लिये एक चॉदी का पिंजरा बनवा देगी और तुम्हें उसमें रख देगी।

घुड़सवार एक बुढ़िया को ढूँढेगा जो उस स्त्री को घर छोड़ कर बाहर निकलने पर मजबूर करने की कोशिश करेगी पर जैसा कि तुम्हें पता है वह ऐसा कर नहीं पायेगी। वह बुढ़िया तीन बार तुम्हारे पास आयेगी। उस समय तुम गुस्से में आ कर अपने पंख नोच डालना और उड़ने की कोशिश करना और बस यही कहते रहना —

"मेरी प्यारी मॉ। तुम उस बुढ़िया के साथ मत जाओ। वह तुम्हें धोखा देगी। तुम यहीं बैठो मेरे पास मैं तुम्हें कहानी सुनाता हूँ।" और फिर तुम उसको जो चाहो वह कहानी सुनाना।"

राक्षस ने बाद में कहा — "तुम आदमी हो। तुम तोते बन जाओ।"

नोटरी तुरन्त ही एक तोता बन गया और खिड़की पर जा कर बैठ गया। दासी ने उसे देखा तो अपने रूमाल की सहायता से उसे उठा लिया। जब पत्नी ने तोते को देखा तो उसके मुँह से निकला — "ओह कितना सुन्दर तोता है। अब तुम्हीं मेरे धीरज के साथी बनोगे।"

"हॉ मेरी प्यारी मॉ। मैं तुम्हें प्यार भी बहुत करूँगा।"

पत्नी ने उसके लिये एक चॉदी का पिंजरा बनवा लिया और तोते को उसमें बन्द कर दिया।

अभी हम तोते के पिंजरे में बन्द घर में ही छोड़ते हैं और घुड़सवार के पास चलते हैं। इसको एक बुढ़िया मिलती है तो इससे इसकी परेशानी के बारे में पूछती है।

"मैं तुम्हें यह मामला क्यों बताऊँ।" कह कर वह उसे झिड़क देता है। पर बुढ़िया उसके पीछे ही पड़ी रहती है तो उससे बचने के लिये फिर वह उसे सब बताता है – अपनी शर्त भी।

बुढ़िया बोली — "मैं तुम्हें उस स्त्री से बात करवा सकती हूँ। तुम मेरे लिये दो फलों की टोकरी तैयार करवा दो।"

घुड़सवार उस स्त्री से मिलने के लिये इतना बेताब हो रहा था कि उसने तुरन्त ही फलों की दो टोकरियॉ तैयार करवा दीं। ये दोनों टोकरियॉ ले कर वह बुढ़िया जालीदार खिड़की के पास गयी और अपने आपको स्त्री की नानी बताया।

स्त्री ने उसका विश्वास कर लिया। एक बात से दूसरी बात निकलती है। बुढ़िया बोली — "ओ मेरी धेवती। तुम हमेशा ही बन्द क्यों रहती हो। क्या तुम रविवार को मास[93] सुनने भी नहीं जाती?"

"मैं कैसे जा सकती हूँ जबकि मैं यहॉ बन्द रहती हूँ।"

"ओह मेरी बेटी तुमको तो बहुत पाप लगेगा। नहीं नहीं। यह ठीक नहीं है। तुमको रविवार को मास पूजा के लिये तो जाना ही चाहिये। आज दावत का दिन है चलो आज मास के लिये चलते हैं।"

जब बुढ़िया उससे मास चलने के लिये ज़िद कर रही थी तो तोते ने रोना शुरू कर दिया।

[93] Mass – Christian worship on Sundays

वह बोला — "मेरी प्यारी मॉ। तुम इस बुढ़िया के साथ मत जाओ। यह बुढ़िया तुम्हें धोखा देगी। अगर तुम नहीं जाओगी तो मैं तुम्हें एक कहानी सुनाऊॅगा।"

पत्नी के दिमाग में एक विचार आया। उसने बुढ़िया से कहा — "नानी। तुम जाओ मैं तुम्हारे साथ नहीं आ सकती।"

सो बुढ़िया को वहॉ से जाना ही पड़ा। जब बुढ़िया वहॉ से चली गयी तो वह तोते के पास गयी और बोली "देखो मैं उस बुढ़िया के साथ नहीं गयी अब तुम मुझे कहानी सुनाओ।"

पहली कहानी

बहुत दिनों पुरानी बात है कि एक राजा था। उसके केवल एक ही बेटी थी जिसको गुड़ियों का बहुत शौक था। उन सबमें उसके पास एक ऐसी गुड़िया थी जो उसे बहुत पसन्द थी। वह कभी उसे कपड़े पहनाती कभी उसके कपड़े उतारती। वह उसको बिस्तर में सुलाती। वह उसके लिये वह सब कुछ करती जो एक बच्चे के लिये किया जाता है।

एक दिन राजा को देश में दूसरी जगहों पर जाना पड़ा। वह राजकुमारी को भी साथ ले गया और राजकुमारी के साथ गयी वह गुड़िया भी। जब वे लोग इधर उधर टहल रहे थे तो गलती से उसकी वह गुड़िया एक हैज पर रखी रह गयी।

अब खाने का समय हो गया था। खाना खाने के बाद वे गाड़ी में बैठे और शाही महल आ पहुँचे। तब राजकुमारी को याद आयी कि वह तो कुछ भूल गयी थी। क्या? अपनी गुड़िया।" तब उसने क्या किया। बजाय ऊपर जाने के वह घूमी और अपनी गुड़िया को ढूँढने चल दी।

जब वह बाहर पहुँची तो वह तो खो गयी और ऐसे घूमने लगी जैसे उसे किसी बात का कोई होश ही नहीं था। कुछ समय बाद वह एक महल के पास आ गयी। वहाँ आ कर उसने पूछा कि वह महल किसका था। उन्होंने कहा कि वह महल स्पेन के राजा का था।

उसने वहाँ रहने की जगह माँगी। राजा ने उसे तुरन्त ही बुला लिया और उसको अपनी बच्ची की तरह से रखा। वह भी महल में अपने घर की तरह से रही। वहाँ वह रानी की तरह से रहती रही।

उस राजा को कोई लड़की या कोई लड़का नहीं था सो राजा ने उसे कुछ भी करने की इजाज़त दे रखी थी हालाँकि महल में **12** लड़कियाँ और भी थीं।

अब बराबर वालों में ईष्या तो होती ही है। जल्दी ही वे शाही लड़कियाँ उसके खिलाफ बोलने लगीं। वे बोलीं — "इसे देखो। पता नहीं यह कौन है कहाँ से आयी है। क्या यह हमारी राजकुमारी बनने वाली है। इस सबको हमें रोकना होगा।"

अगले दिन वे राजकुमारी के पास गयीं और उससे कहा "तुम ज़रा हमारे साथ आओगी।"

राजकुमारी ने कहा — "नहीं। क्योंकि पिता जी यह नहीं चाहते। अगर उनकी इच्छा होगी तभी मैं आऊँगी।"

"तुम्हें मालूम है कि तुम्हें हमारे साथ आने देने के लिये क्या करना चाहिये। तुमको राजा को उसकी बेटी की कसम देनी चाहिये। जब वह यह सुनेगा तब वह तुम्हें हमारे साथ जाने देगा।"

राजकुमारी ने ऐसा ही किया। पर जैसे ही राजा ने यह सुना "आपको आपकी बेटी की कसम" तो उसने हुक्म दिया कि उसे चोर दरवाजे से नीचे फेंक दिया जाये।

जब राजकुमारी को चोर दरवाजे से बाहर फेंका गया तो उसको एक और दरवाजा मिला फिर एक और दरवाजा मिला और फिर एक और। इस तरह से उसे बराबर रास्ता मिलता गया। एक जगह पहुँच कर उसे हाथ से महसूस करने पर पता चला कि वहाँ कुछ दियासलाई और आग लगाने वाला सामान रखा है।

उसने एक मोमबत्ती जलायी तो वहाँ उसने एक बहुत सुन्दर लड़की देखी जिसके मुँह पर ताला लगा था इससे वह बोल नहीं सकती थी। पर उसने इशारों से बताया कि उस ताले को खोलने की चाभी बिस्तर पर रखे तकिये के नीचे है।

राजकुमारी ने वहाँ से चाभी निकाली और ताला खोला तब वह लड़की बोली कि वह एक राजा की लड़की है जिसे एक जादूगर ने चुरा लिया है। यही जादूगर उसके लिये रोज कुछ खाने के लिये ले कर आता है और खिला कर फिर ताला लगा कर चला जाता है।

राजकुमारी ने पूछा — "पर यह तो बताओ कि तुम्हें उससे छुड़ाने का क्या तरीका है।"

लड़की बोली — "मैं कैसे जानूँ। मैं तो और कुछ कर नहीं सकती सिवाय इसके कि जब वह मेरा मुँह खोले तब मैं जादूगर से ही पूछूँ। तुम इस बिस्तर के नीचे छिप जाओ और सुनो कि हम क्या बात कर रहे हैं उसके बाद तुम तय करना कि अब क्या करना है।"

"ठीक है। यही ठीक रहेगा।"

सो राजकुमारी ने फिर से उस लड़की का मुँह बन्द किया चाभी पलंग पर रखे तकिये के नीचे रखी और पलंग के नीचे छिप गयी।

पर आधी रात को बहुत ज़ोर का शोर सुनायी दिया। जमीन फट गयी। बिजली धुआँ और गन्धक की बू के साथ जादूगर अपने जादूगर के रूप में बाहर निकला। उसके साथ एक बड़े साइज़ का आदमी भी था जिसके हाथ में खाने का एक कटोरा था और दो नौकर थे जिनके हाथों में मशालें थीं।

जादूगर ने नौकरों को वापस भेज दिया। दरवाजों को ताला लगा दिया। तकिये के नीचे से चाभी निकाली। लड़की मुँह पर लगा ताला खोला।

जब वे दोनों खा रहे थे तो लड़की बोली — "जादूगर। मेरे दिमाग में एक विचार है। बस अपनी उत्सुकता को शान्त करने के लिये अगर मैं यहाँ से भागना चाहूँ तो मुझे किन चीज़ों की जरूरत पड़ेगी।"

"तुम तो बहुत कुछ जानना चाहती हो मेरी बच्ची।"

"कोई बात नहीं छोड़ो। मैं नहीं जानना चाहती।"

"फिर भी मैं तुम्हें बताऊँगा। इसके लिये तुम्हें महल के चारों तरफ पहले एक सुरंग खोदनी पड़ेगी और फिर रात को ठीक **12** बजे जब मैं उस सुरंग को तोड़ने के लिये घुस रहा होऊँ तब तुम अपने पिता के साथ होगी और मैं आसमान में उड़ जाऊँगा।"

लड़की बोली — "इसे तुम ऐसे समझना जैसे तुमने इसे कभी किसी से कहा ही नहीं।"

जादूगर ने कपड़े पहने और चला गया। कुछ घंटे बाद राजकुमारी पलंग के नीचे से निकल आयी। उसने अपनी छोटी बहिन से विदा ली और वहाँ से चली गयी।

वह उसी चोर दरवाजे की तरफ गयी। बीच में एक जगह वह रुक गयी और सहायता के लिये चिल्लाने लगी। राजा ने उसका चिल्लाना सुना। उसने तुरन्त ही एक रस्सी नीचे फेंकी और उसको ऊपर चढ़ाया।

राजकुमारी ने उसको सब बताया तो राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने तुरन्त ही सुरंग की खुदायी शुरू कर दी जिसको उसने बारूद आदि से भर दी। जब वह सब पूरी भर गयी तो राजकुमारी एक घड़ी ले कर नीचे उतर गयी और राजा की बेटी के पास पहुँची।

जब वह कमरे में घुसी तो बोली "यह मैं हूँ।" उसने चाभी निकाल कर लड़की के मुँह का ताला खोला उससे बातें कीं।

फिर वह बिस्तर के नीचे छिप कर इन्तजार करने लगी। आधी रात को जादूगर आया। राजा देख रहा था। उसकी घड़ी उसके हाथ में थी। जैसे ही रात के **12** बजे राजकुमारी ने सुरंग में आग लगा दी।

बहुत ज़ोर से धमाका हुआ। जादूगर गायब हो गया और दोनों बच्चियों ने अपने आपको जादूगर की कैद से आजाद कर लिया था। राजा अपनी दोनों बच्चियों को देख कर बहुत खुश हुआ और राजकुमारी को अपना ताज सौंप दिया।

पर राजकुमारी बोली — "नहीं योर मैजेस्टी। मैं तो खुद ही एक राजा की बेटी हूँ और मेरे पास अपना ताज है।"

यह खबर तो सारी दुनियाँ में फैल गयी। इससे राजकुमारी की शोहरत तो बहुत बढ़ गयी। हर आदमी उस राजकुमारी की हिम्मत और अच्छाई की बड़ाई कर रहा था कि किस तरह से उसने दूसरी राजकुमारी की ज़िन्दगी बचायी। वे हमेशा ही खुश और शान्ति से रहे।"

तोता इतनी कहानी सुना कर बोला — "मेरी प्यारी माँ। आप मेरी इस कहानी के बारे में क्या सोचती हैं।"

पत्नी बोली — "यह तो बड़ी अच्छी कहानी थी।"

इस बात को एक हफ्ता गुजर गया। बुढ़िया एक दिन फिर से दो दूसरी फलों की टोकरियॉ ले कर वहॉ आयी तो तोता बोला — "अरे वाह यह तो बहुत सुन्दर विचार है। ओ सुन्दर मॉ। देखो वह बुढ़िया फिर आ रही है। ज़रा अपना ख्याल रखना।"

बुढ़िया बोली — "आओ क्या तुम मास के लिये चल रही हो?"

"हॉ नानी।"

"तो चलो हम एक साथ चलते हैं।" पत्नी तैयार होने लगी।

जब तोते ने उसको तैयार होते देखा तो उसने फिर से अपने पंख नोचने शुरू कर दिये और रोते रोते बोला — "नहीं मॉ। तुम उस बुढ़िया के साथ मत जाओ वह तुम्हें बर्बाद कर देगी। तुम अबकी बार अगर फिर रुक जाओगी तो मैं तुम्हें एक और कहानी सुनाऊॅगा।"

सो पत्नी ने बुढ़िया को कह दिया — "तुम जाओ। मैं नहीं जाऊॅगी। मैं मास के लिये अपने प्यारे तोते को नहीं मार सकती।"

बुढ़िया वहॉ से चली गयी और तोते ने अपनी कहानी शुरू की।

दूसरी कहानी

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके एक अकेली बच्ची थी जो सूरज की तरह सुन्दर थी। जब वह 18 साल की हुई तो एक तुर्की राजा ने उससे शादी का प्रस्ताव रखा।

जब राजकुमारी ने सुना कि वह तो एक तुर्क राजा था तो वह बोली कि तुर्क राजा से उसको क्या काम था। और उसने तुर्क राजा को मना कर दिया।

जल्दी ही वह बहुत बीमार हो गयी। उसको दौरे पड़ने लगे। उसका शरीर ऐंठने लगा। उसकी ऑखें बार बार पीछे की तरफ जाने लगीं। डाक्टरों की कुछ समझ में न आया कि यह सब क्या था।

बेचारे राजा ने घबरा कर अपनी काउन्सिल को बुलाया और कहा — "भले लोगों। आप सब जानते हैं कि मेरी बेटी दिन पर दिन अपनी ज़िन्दगी खोती जा रही है। आप लोग मुझे क्या सलाह देते हैं।"

साधु लोग बोले — "एक छोटी लड़की है[94] जिसने स्पेन के राजा की बेटी को ढूँढा है। आप उसको ढूँढें वही आपकी बेटी का इलाज कर पायेगी।"

राजा बोला — "यह तो बहुत अच्छा है। काउन्सिल की यह बात हमको अच्छी लगी।"

राजा ने कई जहाज़ उस लड़की को ढूढने के लिये भेज दिये। और कहा कि अगर स्पेन का राजा उसको यहॉ न आने दे तो ये लोहे के दस्ताने उसको देना और युद्ध का ऐलान कर देना। जहाज़ चले गये और एक दिन स्पेन पहुँच गये।

[94] The Princess mentioned in the last story.

वहॉ पहुॅच कर उन्होंने अपने आने की सूचना देने के लिये तोप छोड़ी। राजदूत जमीन पर उतरा। राजा के पास गया और उसको एक चिट्ठी ले जा कर दी। राजा ने चिट्ठी पढ़ी और पढ़ कर रो पड़ा। वह बोला — "मैं इस लड़की को नहीं दे सकता। मैं युद्ध के लिये तैयार हूॅ।"

इस बीच वह लड़की वहॉ आ गयी। उसने पूछा — "क्या बात है योर मैजेस्टी।"

उसने चिट्ठी देखी तो बोली — "आप डरते क्यों हैं। मैं इस राजा के पास जरूर जाऊॅगी।"

राजा ने पूछा — "मेरी बच्ची कैसे? तुम मुझे इस तरह छोड़ जाओगी क्या?"

लड़की फिर बोली — "मैं आपको छोड़ कर नहीं जा रही। मैं लौट कर आऊॅगी। मैं जा कर इस लड़की को देखूॅगी कि इसे क्या हुआ है और फिर वापस आ जाऊॅगी।"

उसने अपनी छोटी बहिन से विदा ली और चल दी। जब वह राजा के पास पहुॅची तो राजा खुद उससे मिलने के लिये आया। वह बोला — "मेरी बच्ची। अगर तुम मेरी इस बच्ची को ठीक कर दोगी तो मैं अपना ताज तुम्हें दे दूॅगा।"

उसने अपने मन में कहा "दो दो ताज। आहा।"

वह राजा से बोली — "मेरे पास तो पहले से ही एक ताज है। मुझे देखने दीजिये कि क्या मामला है। ताज की कोई बात नहीं है राजा साहब।"

वह गयी और उसने राजकुमारी को देखा वह तो बस हड्डियों का ढाँचा ही रह गयी थी। उसने राजा से कहा — "राजा साहब। मेरे पास यह माँस का पानी है और कुछ और चीज़ें हैं।"

उनको जल्दी से जल्दी तैयार किया गया। उसने कहा — "मैं अपकी बेटी के साथ कमरे में बन्द रहती हूँ। आप उसको तीन दिन तक खोलने की बिल्कुल कोशिश न करें। तीन दिन बाद मैं आपको आपकी बेटी वापस कर दूँगी – ज़िन्दा या मुर्दा। और सुनिये जो मैं कहती हूँ कि अगर मैं भी दरवाजे को खटखटाऊँ तो भी आप दरवाजा न खोलें।"

सब कुछ पहले से तय कर लिया गया दरवाजे को जंजीरों और तालों से बाँध दिया गया। पर वे शाम को मोमबत्ती जलाने के लिये दियासलाई रखना भूल गये।

शाम को बहुत गड़बड़ हुई। नौजवान लड़की दरवाजा नहीं खटखटाना चाहती थी। सो उसने खिड़की से बाहर झाँका तो देखा कि कुछ दूरी पर एक रोशनी जल रही थी। सो वह एक मोमबत्ती ले कर एक रेशम की सीढ़ी के सहारे नीचे उतरी।

जब वह वहाँ पहुँची तो उसने देखा कि एक चूल्हा जल रहा था उस पर एक बर्तन रखा था जिसमें पानी उबल रहा था। पास ही

एक तुर्क बैठा हुआ और वह उसे लकड़ी की डंडी से चला रहा था। उसने उस तुर्क से पूछा कि वह क्या कर रहा था।

तुर्क ने जवाब दिया — "मेरे मालिक इस राजा की बेटी से शादी करना चाहते थे पर उसने उनसे शादी करने से मना कर दिया इसलिये वह उस पर जादू डाल रहे हैं।"

लड़की बोली — "ओह मेरे बेचारे छोटे तुर्क। तुम यह चलाते चलाते थक गये होगे। तुम्हें मालूम है कि तुम्हें अब क्या करना चाहिये। तुम थोड़ा आराम कर लो तब तक इसे मैं चलाती हूँ।"

यह सुन कर वह वहाँ से हट गया। लड़की ने फिर कहा "तुम थोड़ा सा सो लो तब तक इसे मैं चलाती हूँ। जब वह सो गया तो उसने उसे पकड़ लिया और उसे बर्तन में उबलते पानी में डाल दिया।

जब उसने देखा कि वह मर गया तो उसने अपनी मोमबत्ती जलायी और महल वापस आ गयी। जब वह कमरे में घुसी तो उसने देखा कि राजकुमारी बेचारी नीचे बेहोश गिरी पड़ी थी। कोलोन का पानी छिड़क कर वह उसको होश में लायी। तीन दिनों में ही वह काफी ठीक हो गयी थी।

उसके बाद उसने दरवाजा खटखटाया। राजा तो अपनी बेटी को ठीक देख कर खुशी के मारे अपने आपे में ही नहीं था। उसने स्पेन के राजा की बेटी से कहा — "मेरी बच्ची। मैं इसके बदले में तुम्हें कैसे धन्यवाद दूँ। तुम मेरे पास रह जाओ।"

राजकुमारी बोली — "यह सम्भव नहीं है। अगर वे मुझे आपके पास नहीं भेजते तो आपने मेरे पिता को युद्ध की धमकी दी थी। अब मेरे पिता आपको युद्ध की धमकी दे सकते हैं अगर आप मुझे लौटने की इजाज़त नहीं देंगे।"

वह वहॉ दो हफ्ते रही फिर राजा ने उसको बहुत सारा पैसा और जवाहरात दे कर विदा किया। वह भी स्पेन के राजा के पास लौट आयी। इस तरह से यह कहानी खत्म हुई।"

"मेरी प्यारी मॉ अब बताओ तुम्हें यह कहानी कैसी लगी।"

"बहुत सुन्दर बहुत सुन्दर।"

"पर अब तुम उस बुढ़िया के साथ नहीं जाओगी क्योंकि इसमें धोखा है।"

एक हफ्ते बाद वह बुढ़िया फिर अपनी टोकरियॉ ले कर उस पत्नी के घर आयी और बोली — "मेरी बच्ची। आज तो तुम्हें मेरी खुशी के लिये मेरे साथ चलना ही पड़ेगा। चलो आज मास सुनने चलते हैं।"

"ठीक है। मैं आती हूँ।"

जब तोते ने यह सुना कि यह पत्नी तो बुढ़िया के साथ फिर जाने के लिये तैयार हो रही है तो फिर उसने अपने पंख नोचने और रोना शुरू कर दिया और बोल — "मेरी सुन्दर मॉ। उसके साथ मत जाओ। अगर तुम रुक जाओगी तो मैं तुम्हें एक कहानी और सुनाऊँगा।"

सो पत्नी ने बुढ़िया से कहा — "ओ मेरी नानी। मैं नहीं आ पाऊँगी क्योंकि मैं आपके लिये अपना तोता हाथ से नहीं जाने दे सकती।"

इतना कह कर उसने अपनी जाली वाली खिड़की बन्द कर दी और बुढ़िया भी उसे कोसती हुई वहाँ से चली गयी। पत्नी फिर तोते के पास बैठ गयी और तोते ने अपनी कहानी शुरू की —

तीसरी कहानी

एक बार की बात है कि एक राजा और रानी थे जिनके एक अकेला बेटा था और जो हमेशा ही शिकार में लगा रहता था। एक बार शिकार के लिये वह कुछ दूर जाना चाहता था। सो उसने अपने साथी लोग लिये और चल दिया।

तुम क्या सोचते हो कि वह कहाँ गया होगा। वहीं जहाँ वह गुड़िया पड़ी हुई थी।[95] जब उसने गुड़िया देखी तो उसने कहा "आज का मेरा शिकार खत्म हुआ चलो घर चलते हैं।"

उसने गुड़िया ली और उसे अपने सामने अपने घोड़े पर रखा और चल दिया। कुछ कुछ देर में वह कहता जाता था "यह गुड़िया कितनी सुन्दर है। तो ज़रा इसकी मालकिन के बारे में तो सोचो।"

जब वह महल पहुँचा तो उसने उसके लिये एक शीशे का डिब्बा बनवाया और उस गुड़िया को उसमें रख दिया। अब बस वह उसको

[95] This is the doll of the first story which was forgotten on the hedge.

ही देखता रहता और कहता रहता "यह गुड़िया कितनी सुन्दर है। तो ज़रा इसकी मालकिन के बारे में तो सोचो।"

अब वह राजकुमार किसी से बोलता भी नहीं था। हमेशा दुखी सा रहता था। यह देख कर राजा ने डाक्टरों को बुलवा भेजा।

डाक्टरों ने देख भाल कर कहा — "राजा साहब। हम इस बीमारी के बारे में कुछ नहीं जानते। ज़रा जा कर देखिये कि वह इस गुड़िया के साथ क्या करता रहता है।"

सो राजा अपने बेटे को देखने गया और देखा कि वह तो बस अपनी गुड़िया की तरफ घूरे जा रहा है और कहता जा रहा है "यह गुड़िया कितनी सुन्दर है। तो ज़रा इसकी मालकिन के बारे में तो सोचो।"

डाक्टर उतने ही अक्लमन्द लौट गये जितने अक्लमन्द वे आये थे। इस बीच राजकुमार और कुछ करता ही नहीं था सिवाय गुड़िया को घूरने के और कहते रहने के कि "यह गुड़िया कितनी सुन्दर है। तो ज़रा इसकी मालकिन के बारे में तो सोचो।" वह लम्बी लम्बी साँसें भरता और यही कहता रहता।

राजा बहुत निराश हो गया था सो उसने भी अपनी काउन्सिल बुलायी और उससे पूछा — "आप सब देखें और बतायें कि मैं क्या करूँ क्योंकि मेरे बेटे की हालत तो दिन पर दिन बिगड़ती ही जा रही है। उसको न तो कोई दर्द है न कोई बुखार है फिर भी वह दुबला ही होता जा रहा है। कोई और मेरे राज्य का भोग करेगा क्या?"

तब कौंसिल ने राजा से कहा — "योर मैजेस्टी। क्या आप वाकई बहुत परेशान हैं। क्या आपको उस लड़की के बारे में नहीं पता जिसने स्पेन के राजा की बेटी को बचाया था और एक दूसरी राजकुमारी को भी ठीक किया था।

हमारी राय यह है कि आप उस राजकुमारी को बुलवायें। अगर उसके पिता उसे आपके पास न भेजें तो आप उनसे युद्ध का ऐलान कर दें।"

सो राजा ने अपना एक दूत उस राज्य में भेजा कि वह अपनी बेटी को तुरन्त भेज दे। जब राजदूत राजा से मिला तो वह राजकुमारी राजा के पास आयी जिसने दो राजकुमारियों को ठीक किया था। उसने देखा कि राजा कुछ परेशान है।

उसने राजा से पूछा — "क्या बात है आप इतने परेशान क्यों हैं।"

राजा बोला — "कुछ नहीं बेटी। एक और मौका वैसा आ गया है। एक और राजा तुम्हें बुला रहा है। इससे तो ऐसा लगता है कि अब मैं तुम्हारा कुछ भी नहीं।"

"कोई बात नहीं योर मैजेस्टी। आप मुझे जाने दें मैं बहुत जल्दी लौट आऊँगी।"

सो वह अपने नौकरों के साथ जहाज़ पर चढ़ी और अपनी यात्रा शुरू की। जब वह वहाँ पहुँची जहाँ राजकुमार था तो उसने देखा कि वह गहरी गहरी साँसें ले रहा था और बराबर यही कह रहा

था "यह गुड़िया कितनी सुन्दर है। तो ज़रा इसकी मालकिन के बारे में तो सोचो।"

वह बोली — "आप लोगों ने मुझे बुलाने में देर कर दी। फिर भी आप मुझे एक हफ्ता दें। आप मुझे मरहम और खाना दे दें। फिर एक हफ्ते में मैं आपका राजकुमार ज़िन्दा या मुर्दा वापस कर दूँगी।"

उसने अपने आपको राजकुमार के साथ ही कमरे में बन्द कर लिया और उसे सुनने की कोशिश की जो राजकुमार कह रहा था क्योंकि उसने अभी तक वह नहीं सुना था जो वह बार बार कह रहा था। क्योंकि वह अपनी बहुत ही कमजोर आवाज में बोल रहा था।

जब उसने सुना "यह गुड़िया कितनी सुन्दर है। तो ज़रा इसकी मालकिन के बारे में तो सोचो।" और अपनी गुड़िया उसके हाथ में देखी तो वह एकदम से बोली — "ओह तो वह तुम हो जिसने मेरी गुड़िया ली थी। दो इसे मुझे दो और मैं अभी तुम्हारा इलाज करती हूँ।"

जब उसने ये शब्द सुने तो उसने ऑखें खोलीं और वह कुछ अपने आपे में आया बोला — "तुम क्या इस गुड़िया की मालकिन हो?"

"हॉ मैं ही इसकी मालकिन हूँ।"

बस सोचो वह तो उसको देखते ही ठीक होने लगा। उसने उसको मॉस का पानी देना शुरू किया और वह ठीक होने लगा।

जब वह ठीक हो गया तब उसने उससे पूछा कि उसको वह गुड़िया कहॉ से मिली। राजकुमार ने उसे सब बता दिया। एक हफ्ते में राजकुमार ठीक हो गया और फिर उन्होंने कह दिया कि वे दोनों शादी कर रहे हैं।

राजा तो खुशी से बिल्कुल आपे से बाहर हो रहा था क्योंकि उसका बेटा ठीक हो गया था। उसने कई चिट्ठियॉ लिखीं। एक चिट्ठी तो उसने स्पेन के राजा को लिखी कि उसकी बेटी को उसकी गुड़िया मिल गयी है। दूसरे राजा को लिखा कि उसकी बेटी मिल गयी है। तीसरी उस राजा को जिसकी बेटी का उसने इलाज किया था।

उसको बाद सारे राजा इकट्ठे हुए और सबने मिल कर खूब आनन्द मनाया। राजकुमार ने राजकुमारी के साथ शादी कर ली। फिर वे आराम से रहे।"

कहानी सुन कर तोते ने पत्नी से पूछा — "ओ अच्छी मॉ। क्या आपको यह कहानी पसन्द आयी?"

"हॉ मेरे बेटे। बहुत अच्छी थी।"

"पर अब आप उस बुढ़िया के साथ नहीं जाना।"

तभी वह बुढ़िया फिर से वहॉ आयी तो उसकी दासी आयी और बोली — "देखिये मालिक आ गये।"

"सच में। अच्छा तोते अब तुम सुनो। मैंने तुम्हारे लिये एक दूसरा पिंजरा बनवा दिया है।"

मालिक आ गये थे। सारी खिड़कियॉ खोल दी गयीं और उसने अपनी पत्नी को गले लगाया। शाम को खाने के समय उन्होंने तोते को मेज के बीच में रखा। और जब दोनों बहुत खुश थे तो चिड़िया ने थोड़ा सा सूप मालिक की आखों में फेंक दिया।

मालिक को जब वह सूप ऑख में लगा तो उसने अपनी ऑखों पर हाथ रख लिया। तभी तोता उसके गले की तरफ उड़ा उसे घोट दिया और उड़ गया।

उड़ते उड़ते वह मैदान में पहुॅचा और बोला "मैं एक तोता हूॅ मैं एक आदमी बनना चाहता हूॅ।" यह कह कर वह एक सुन्दर चालाक आदमी में बदल गया।

फिर वह घुड़सवार से मिला और बोला — "क्या तुम्हें मालूम है कि उस बेचारी स्त्री का बेचारा पति मर गया है। एक तोते ने उसका गला घोट दिया।"

"सच में? बेचारी स्त्री।"

नोटरी शर्त के बारे में बिना कोई बात किये ही वहॉ से चला गया। नोटरी को पता चला कि उस स्त्री की एक मॉ थी सो वह उसके पास गया और उससे कहा — "आप मुझे अपनी बेटी दे दें।"

कुछ हिचकिचाहट के बाद मॉ राजी हो गयी और उनकी शादी हो गयी। उस रात नोटरी ने अपनी पत्नी से पूछा — "अब मुझे बताओ कि तुम्हारे पति को किसने मारा।"

"एक तोते ने।"

"और इस तोते के बारे में तुम क्या जानती हो।"

स्त्री ने उसे सब बता दिया कि किस तरह से तोते ने उसके पति की ऑखों में सूप फेंका और उड़ गया।"

"यह सच है। क्या मैं वह तोता नहीं था?"

"तो क्या वह तोता तुम थे? मुझे तो आश्चर्य है।"

"हॉ मैं ही वह तोता था और मैं केवल तुम्हारे लिये ही तोता बना था।"

अगले दिन नोटरी अपनी शर्त के **400** औंस लेने घुड़सवार के पास गया और उससे अपनी पत्नी के साथ बहुत आनन्द मनाया।

ये तीनों कहानियॉ जैसा कि साफ तौर पर दिखायी दे रहा है तोते से ही जुड़ी हुई हैं पर ये सब कहानियॉ एक ही कहानी के अन्दर हैं। यह भी देखा गया है कि तोते की सुनायी गयी कहानी और कहानियॉ सब कहानियों में एक सी ही हैं। फ्लोरैन्स वाले रूप में गुड़िया नहीं है।

इस कहानी जैसी और कोई कहानी नहीं है सिवाय पैन्टामिरोन की एक कहानी के जो कि उसमें उसके दूसरे दिन की दूसरी कहानी है – "द ग्रीन मैडो"। राजकुमारी डाक्टर है और राजकुमारी और राजकुमार के गुण तो यूरोप की सामान्य कहानियों में मिलते हैं।

ओरिऐन्ट की बहुत सारी अकेली कहानियॉ आगे पढ़ने को मिलेंगी। यह अध्याय हम एक बहुत ही लोकप्रिय कहानी से बन्द करते हैं जो यूरोप में मध्य युग में प्रचलित थी और जो उस समय की एक बहुत ही लोकप्रिय पुस्तक "गैस्टा रोमानोरम"[96] में पायी जाती है। इटली में यह कई रूपों में पायी जाती है यहॉ उसका पोमिग्लियानो डी आर्को[97] में कहा सुना जाने वाला रूप प्रस्तुत है।

[96] "Gesta Romanorum" – a Middle Ages book.

[97] Pomigliano d'Arco

48 सच बोलने वाला जोसेफ़[98]

एक बार की बात है कि एक मॉ थी जिसके एक बेटा था जिसका नाम था जोसेफ़। क्योंकि उसने कभी झूठ नहीं बोला था इसलिये लोग उसे सच बोलने वाला जोसेफ़ कहते थे।

एक दिन जब वह उसको पुकार रही थी तो उधर से राजा निकला। उसको अपने बेटे को इस तरह पुकारते सुन कर राजा से उससे पूछे बिना नहीं रहा गया — "आप इसको सच बोलने वाला जोसेफ़ कह कर क्यों पुकारती हैं?"

"क्योंकि यह हमेशा सच बोलता है।"

राजा ने यह सुन कर जोसेफ़ की मॉ से कहा कि वह उसके बेटे को अपनी सेवा में लेना चाहता है और उसने उसको अपनी गायों की देखभाल में लगा दिया।

अब हर सुबह जोसेफ़ राजा के सामने जाता और कहता — "योर मैजेस्टी। आपका नौकर।"

राजा उसको जवाब देता — "गुड मौर्निंग सच बोलने वाले जोसेफ़। गायें कैसी हैं?"

"अच्छी हैं मोटी हो रही हैं।"

"बछड़े कैसे हैं।"

"वे भी अच्छे हैं और सुन्दर हैं।"

[98] Truthful Joseph. Tale No 48. Appeared in "Gesta Romanorum" – a Middle Ages collection.

"और बैल?"

"वह भी वैसा ही है।"

और ऐसा रोज चलता। राजा अपने सब दरबारियों के सामने उसकी इतनी तारीफ करता कि धीरे धीरे सब दरबारी उससे जलने लगे और उससे गुस्सा रहने लगे।

एक दिन उन्होंने सच बोलने वाले जोसेफ़ को झूठा साबित करने की एक योजना बनायी। उन्होंने उसको एक स्त्री के पास भेजा जो उसको बैल को मारने के लिये उकसाने वाली थी। उसने जोसेफ़ से इतनी जिद की कि जोसेफ़ इस काम के लिये तैयार हो गया।

पर बाद में वह बड़े सोच में पड़ गया कि वह राजा से क्या कहेगा। सो उसने अपना शाल एक कुर्सी पर रखा और थोड़ी देर के लिये उसे ही राजा मान लिया और बोला —

"योर मैजेस्टी का नौकर।"

"गुड मौर्निंग सच बोलने वाले जोसेफ़। गायें कैसी हैं?"

"अच्छी हैं मोटी हो रही हैं।"

"बछड़े कैसे हैं।"

"वे भी अच्छे हैं और सुन्दर हैं।"

"और बैल?"

"वैसा ही है।"

अरे यह तो अब बैल के लिये नहीं चलेगा। इस तरह तो मैं झूठ बोल रहा होऊँगा। जब राजा मुझसे पूछेगा कि "बैल कैसा है?" तो मैं कहूँगा कि "बैल मर गया है।"

वह राजा के सामने गया और बोला — "योर मैजेस्टी का नौकर।"

"गुड मौर्निंग सच बोलने वाले जोसेफ़। गायें कैसी हैं?"

"अच्छी हैं मोटी हो रही हैं।"

"बछड़े कैसे हैं।"

"वे भी अच्छे हैं और सुन्दर हैं।"

"और बैल?"

जोसेफ़ बोला — "सरकार एक स्त्री आयी जिसने मुझे उकसा कर मेरे हाथों बैल को मरवा दिया। मुझे माफ करें।"

राजा बोला — "खूब जोसेफ़ खूब।"

उसने अपने दरबारियों को बुलवाया और उन्हें बताया कि जोसेफ़ ने अभी तक झूठ नहीं बोला है। इस तरह जोसेफ़ हमेशा राजा के पास रहा। दरबारी लोग अपना सा मुँह ले कर रह गये क्योंकि जो उन्होंने सोचा था उसका वैसा परिणाम तो हुआ नहीं।

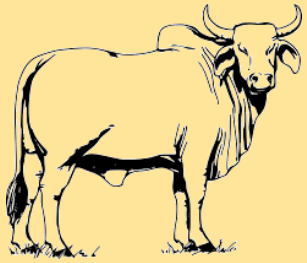

49 आदमी सॉप और लोमड़ी[99]

एक बार की बात है कि एक शिकारी था वह एक खान के पास से गुजर रहा था कि उसको एक सॉप एक पत्थर के नीचे दब हुआ दिखायी दे गया। सॉप ने शिकारी से बहुत विनती की कि वह उसको वहॉ से आजाद करा दे।

पर आदमी ने कहा — "मैं तुम्हें यहॉ से नहीं निकालूँगा क्योंकि अगर मैंने तुम्हें निकाला तो तुम मुझे काट खाओगे।"

सॉप गिड़गिड़ाता हुआ बोला — "नहीं भाई। मैं तुम्हें नहीं खाऊँगा। तुम मुझे यहॉ से बाहर तो निकाल दो।"

सो शिकारी ने उसे बाहर निकाल दिया। जैसे ही वह बाहर आया तो बोला — "अब मैं तुम्हें खाऊँगा।"

शिकारी बोला — "यह तुम क्या कह रहे हो। अभी अभी तुमने मुझसे यह वायदा नहीं किया था कि अगर मैं तुमको यहॉ से बाहर निकाल दूँ तो तुम मुझे नहीं खाओगे।"

सॉप बोला — "भूखे को कोई वायदा याद नहीं रहता।"

शिकारी बोला — "अगर तुमको मुझे खाने का कोई अधिकार न हो तो क्या तुम मुझे खाओगे।"

"नहीं"

"तो चलो हम तीन लोगों से पूछते हैं।"

---

[99] The Man the Serpent and the Fox. Tale No 49. (Given in its Notes, p 354)

वे दोनों जंगल गये तो वहाँ उनको एक ग्रेहाउन्ड कुत्ता मिला। उन्होंने उससे पूछा तो कुत्ता बोला — "मेरा एक मालिक था। मैं उसके साथ शिकार पर जाया करता था और खरगोश पकड़ा करता था। तो जब मैं उनको घर लाया करता था तो मेरा मालिक मुझे बहुत अच्छा खाना खिलाया करता था।

अब जब मैं एक कछुआ भी नहीं पकड़ सकता क्योंकि मैं बूढ़ा हो गया हूँ तो मेरा मालिक अब मुझे मारना चाहता है। इसलिये मैं तुम्हें सजा देता हूँ कि साँप तुम्हें खा जाये। क्योंकि जो आदमी भला करता है उसके साथ बुरा ही होता है।"

साँप बोला — "देखा तुमने। एक फैसला तो हो गया।"

वे और आगे बढ़े तो उनको एक घोड़ा मिला। पूछने पर उसने भी यही कहा कि साँप के लिये यह ठीक है कि वह आदमी को खा ले।

उसने कहा कि क्योंकि मेरा भी एक मालिक था जिसको मैं बहुत दूर दूर तक ले जाया करता था। तब वह मुझे ठीक से खाना दिया करता था। पर क्योंकि अब मैं ऐसा नहीं कर सकता तो वह मुझे मारना चाहता है।"

साँप उससे फिर बोला — "देखा तुमने। अब दो जजों ने मेरी तरफ फैसला दे दिया है।"

वे फिर आगे बढ़े तो उनको एक लोमड़ी मिली। आदमी ने लोमड़ी से कहा — "लोमड़ी बहिन। मैं एक खान के पास से गुजर

रहा था तो मैंने इस सॉप को एक बड़े से पत्थर के नीचे मरता हुआ देखा। इसने मुझसे सहायता मॉगी तो मैंने इसको वहॉ से निकाल दिया। अब यह कहता है कि "मैं तुझे खाऊॅगा।"

पूछा तो वह बोली — "अगर तुम मुझे जज बनाना चाहते हो तो ठीक है मैं तुम्हारे लिये जज का काम जरूर करूॅगी। पर पहले मैं यह घटना जहॉ हुई थी वह जगह देखना चाहूॅगी।"

सो तीनों उसी जगह वापस पहुॅचे। लोमड़ी बोली — "सॉप जी अब आप बताइये कि आप किस हालत में थे जब इस आदमी से आपने सहायता मॉगी।"

सॉप एक पत्थर के नीचे जा कर बैठ गया। लोमड़ी ने उसके ऊपर रखा वाला पत्थर कुछ ऐसे रख दिया कि अब सॉप हिल भी नहीं सकता था।

फिर उसने सॉप से पूछा — "क्या आप इसी तरह से इस पत्थर के नीचे बैठे थे जब आपने आदमी से सहायता मॉगी।"

"जी हॉ।"

"ठीक है तब आप यहॉ ऐसे ही बैठे रहिये।

List of the Tales of Popular Tales of Italy

Part 1

1. King of Love
2. Zelinda and the Monster
3. King Bean
4. The Dancing Water, the Singing Apple and the Talking Bird
5. The Fair Angiola
6. The Cloud
7. The Cistern
8. The Griffin
9. Cinderella
10. Fair Maria Wood
11. The Curse of the Seven Children
12. Oraggio and Blanchinetta
13. The Fair Florita
14. Bierde
15. Snow-White-Fire-Red
16. How the Devil Married Three Sisters
17. In Love With a Statue
18. Thirteenth
19. The Cobbler
20. Sir Florante Magician
21. The Cystal Casket
22. The Stepmother
23. Water and Salt
24. The Love of the Three Oranges

Part 2

25. The King Who Wanted a Beautiful Wife
26. The Bucket
27. The Two Humpbacks
28. The Story of Catherine and Her Fate
29. The Crumb in the Beard
30. The Fairy Orlanda
31. The Shepherd Who Made the King's Daughter Laugh
32. The Ass That Lays Money
33. Don Joseph Pear
34. Puss in Boots
35. Fair Brow

36. Lionbruno
37. The Peasant and the Master
38. The Ingrates
39. The Treasure
40. The Shepherd
41. The Three Admonitions
42. Vineyard I Was and Vineyard I Am
43. The Language of the Animals
44. The Mason and His Son
45. The Parrot: First Version
46. The Parrot: Second Version
47. The Parrot Which tells Three Stories: Third Version
48. Truthful Joseph
49. The Man the Serpent and the Fox
50. Lord Saint Peter and Apostles

Part 3
51. The Lord, St Peter and the Blacksmith
52. In This World One Weeps and Another Laughs
53. The Ass
54. Saint Peter and His Sisters
55. Pilate
56. Story of Judas
57. Desperate Malchus
58. Malchus at the Column
59. The Srory of Buttadeu
60. The Story of Crivoliu
61. The Story of St James of Galacia
62. The Baker's Apprentice
63. Occasion
64. Brother Giovannone
65. Godfather Misery
66. Beppe Pipetta
67. The Just Man
68. Of a Godfather and Godmother of St John Who Made Love
69. The Groomsman
70. The Parrish Priest of San Marcuola
71. The Gentlemen Who kicked a Skull
72. The Gossips of St John
73. Saddaedda

Part 4

74. Mr Attentive
75. The Story of the Barber
76. Don Firriyulieddu
77. The Little Chickpea
78. Pitidda
79. Saxton's Nose
80. The Cock and the Mouse
81. Godmother Fox
82. The Cat and the Mouse
83. A Feast Day
84. The Three Brothers
85. Buchettino
86. Three Goslings
87. The Cock
88. The Cock and That Wished to Become Pope
89. The Goat and the Fox
90. The Ant and the Mouse
91. The Cook
92. The Thoughtless Abbot
93. Bastianelo
94. Christmas
95. The Wager
96. Scissiors They Were
97. The Doctor's Apprentice
98. Firrazzanu's Wife and the Queen
99. Giufa and the Plaster Statue
100. Giufa and the Judge
101. The Little Omelet
102. Eat My Clothes
103. Giufa's Exploits
104. The Fool
105. Uncle Capriano
106. Peter Fullone and the Egg
107. The Clever Peasant
108. The Clever Girl
109. The Crab

Classic Books of European Folktales in Hindi
Translated by Sushma Gupta

1353 **Il Decamerone.**
No 33 By Boccaccio Giovanni.
Translated in 3 volumes

1550 **Nights of Straparola**
No 21 By Giovanni Francesco Straparola. 1550, 1553. 2 vols.
First Translator : HG Waters. London : Lawrence and Bulletin.

1634 **Il Pentamerone.**
No 9 By Giambattista Basile. 50 tales.
Translated in 3 volumes
First two volumes from John Edward Taylor – 32 tales
The third volume from Sir Richard Burton – remaining 19 tales

1874 **Serbian Folklore.**
No 2 By Madam Csedomille Mijatovies. London : W Ibisters. 26 tales.
"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich.
London : George and Harry. 1914 (1916, 1921).
It contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

1885 **Italian Popular Tales.**
No 27 By Thomas Frederick Crane. 109 tales. 4 volumes

1894 **Georgian Folk Tales**.
No 18 Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales.
Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Jun, 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **1901**। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंगेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्ऩ। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारी डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales**.**
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियॉ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। दो भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। दो भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। चार भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **1998**। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॉ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2022**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। दो भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियॉ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **3022**

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales. Available in English at :
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियॉ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898**) 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टील। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियॉ — थोमस फ्रैडैरिक केन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. Translated in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911.
Under the Title “The Enchanted Parrot”.
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियॉ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights’ Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

33. Il Decamerone
By Giovanni Boccaccio. **1353**. 100 Tales.
इल डैकामिरोन — जिओवानी बोकाकिओ। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2022** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से ये लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचायी जा सकेंगी।

विंडसर, कैनेडा
2022